

भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।

ग्रन्थ ज्ञान दीपक

साखी - 9

प्रेम जुक्ति निज मूल है, गुरुगमि करो सुधार।

दया दीपक जबहीं बरै, दरशन नाम अधार॥

चौपाई

प्रथमहिं सतगुरु सत्य कर भाऊ। दयासिंधु कर दरशन पाऊ।१।

भवशुभ घरी तबहिं गुरु मिलेऊ। आनन्द मंगल ललित लोभेऊ।२।

भवतरनी गुरु ज्ञान अनूपा। सो मम हृदय वसेउ सरूपा।३।

प्रगट करो फिर राखु समोई। ज्यों फणि मनि नहिं जात बिगोई।४।

पात्रभाव अमि अंक निरंता। पिये प्रेम बिरला कोई सन्ता।५।

ज्ञान अंकुर रत रहा जो सलिता। चला प्रवाह प्रेम रस रमिता।६।

तामे संत सुघट भवतरणी। अति सुखासागर जातन वरणी।७।

चढ़हिं संत सुख जानि पुनीता। भवसागर नहिं होहिं अनीता।८।

जड़ जन तामे देखि भुलाना। लहरि उतंग सम ज्ञान छपाना।९।

साखी - २

लहरि फिरंग फिरता रहे, मद ममिता को मूल।

परे भवन में भरम के, भयेऊ कठिन तन मूल॥

चौपाई

सुधार संत मणि मुक्ता जैसे। सभा शोभित बुद्धि जन तैसे।१०।

निज निज अर्थ गावही गुन ज्ञाता। भक्ति बोध साधु रंग राता।११।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	हृदय कमल पद भयो अतुरागी। लोचन ललचि प्रेम रस पागी।१२।	सतनाम	कंज पुंज भृंग भाव लुभाना। लै लपटि लाल में प्रीति बखाना।१३।	सतनाम	लहा अमोल न मोल बिकाना। जीवन मुक्त हहीं ब्रह्म अमाना।१४।	सतनाम
सतनाम	सत्य स्वरूप सदा सुख दाता। जरा मरन भव कबहिं नरात।१५।	सतनाम	तिर्गुन ज्ञान मान कवि कहेऊ। येहि गुण रहित पुरुष सत अहेऊ।१६।	सतनाम	सो मम कहें व विवेक विचारी। ज्ञान जुक्ति जिमि मनि उजियारी।१७।	सतनाम
सतनाम	अति प्रचंड जिते नहिं कोउ। हारे दैंत कोटि खाल सोउ।१८।	सतनाम	साखी - ३			
सतनाम	बाण धनुष नहिं कर देखा, धन साहब समर्थ।				सतनाम	
सतनाम	दृष्ट सकल दल कांपिया, येहिगु रग ज्ञान अकय।।				सतनाम	
सतनाम	चौपाई				सतनाम	
सतनाम	बाण धनुष कर कबहूँ न देखा। बिना धनुष सब मारु अलेखा।१९।	सतनाम	तुमि बिनु जग सब रहे अनाथा। धन सारथि संत सनाथा।२०।	सतनाम	जबही हुकुम राम के भयेऊ। तीन लोक दंड फिरि गयेऊ।२१।	सतनाम
सतनाम	उनहीं खांडा भुजा दसशीशा। विशम्भर जगहहिं जगदीशा।२२।	सतनाम	मारेउ कंस दैत्य सब साथा। सुर नर मुनि सब भयेऊ सनाथा।२३।	सतनाम	मारेउ सबै मरम नहिं जाना। सो करता कवि करहीं बखाना।२४।	सतनाम
सतनाम	अविगति गति इमि काहु न जाना। पंडित वेद पुराण बखाना।२५।	सतनाम	आवहिं जाहि करहिं जग रचना। ज्यों किसान खेती करु जतना।२६।	सतनाम	माया प्रबल है अगम सरूपा। येहि तिर्गुन माया कर रूपा।२७।	सतनाम
सतनाम	साखी - ४				सतनाम	
सतनाम	वह तिर्गुन से रहित है, विमल विरोग अमान।				सतनाम	
सतनाम	ज्ञान चेतन जब चेतिये, पाये पद निर्वान।।				सतनाम	
सतनाम	चौपाई				सतनाम	
सतनाम	निरा लेप निर्भय येहि ज्ञाना। सतगुरु शब्द इमि करौ बखाना।२८।	सतनाम	जोग न जाप न मंख पुराना। तीरथ न व्रत सकल गुन ज्ञाना।२९।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अखांडित ब्रह्म अखांड बखाना। कला संपूर्ण उदित अमाना।३०।	सतनाम	शिव शक्ति वे जुगुल न होई। यथा सभनि में जम जिव सोई।३१।	सतनाम	जैसे तिल में बास समाना। एही रंग मिलेउ सो आपु अमाना।३२।	सतनाम
सतनाम	जाकी दृष्टि सकल उजियारा। जल थल इमि प्रतिबिंबु विचारा।३३।	सतनाम	निर्गुन सर्गुन छवि छत्र बिराजे। पुरुष प्रताप संत सिर छाजे।३४।	सतनाम	अडोल ना डोलहिं सो प्रभुताई। सामर्थ नाम है सदा सहाई।३५।	सतनाम
सतनाम	कांपहिं काल कठिन जो अहई। बंद छोड़ाये दनुज दल दहई।३६।	सतनाम	साखी - ५	सतनाम	देख सकल बल जिन्दा को, डंडा दीन्हो डारि।	सतनाम
सतनाम	येहि प्रभुता बल किमि कही, रहे जक्त जम हरि॥	सतनाम	छन्दतोमर - १	सतनाम	कर चाप सर नहिं लीन्हा, सब दनुज दावन कीन्ह।	सतनाम
सतनाम	जेहि भुजा अनन्त अपार, कहि थाके निगम ^१ सार॥	सतनाम	यह शेष ^२ सहत्र ध्यान, कथि ज्ञान गुण निर्बान।	सतनाम	वशिष्ट व्यास पुरान, कथि जगत में प्रधान॥	सतनाम
सतनाम	सुकदेव ब्रह्म बिराग, जिन्हि कयेऊ अति अनुराग।	सतनाम	निरा लेप निर्गुण रूप, कथि राम ब्रह्म सरूप॥	सतनाम	त्रिपुरारि अरी करि जोग, सब त्यागी सकलो भोग।	सतनाम
सतनाम	अष्टांग जोग समाधि, वह पुरुष अगम अगाधि॥	सतनाम	जड़ भरथ गोरख जोग, सब त्यागि इन्द्री भोग।	सतनाम	कवि कहेव केते बिचार, सब काया को नीरु आर॥	सतनाम
सतनाम	सनकादि आदि गणेश, सब थके कहत संदेस।	सतनाम	जग जन्म है नौ बार, वह पुरुष सब से न्यार॥	सतनाम	बली बावना नहिं दान, इन्ही ठगेव ठाकुर ज्ञान।	सतनाम
सतनाम	सत्त वर्ग सत्त सरूप, नहिं कान्ह कृष्ण भूप॥	सतनाम	जेहि दया सतगुरु दीन्ह, सो ज्ञान को परमीन।	सतनाम	जेहि प्रान पींड न भीन, मम चरन ता लव लीन॥	सतनाम
सतनाम	3	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - 9			
सतनाम			प्रेम समोरा वरषत नीरा, बुन्द अखंडित अमि झरंग।		सतनाम	
			घटा घन घोरा करत अंदोरा, छटा चमकि चहुं मनि वरंग॥			
सतनाम			अति सुख सागर सब गुन आगर, मल सब रहितगं पाप हरंग।		सतनाम	
			ऐन अंजिरा करू मन थीरा, दरिया दरसन सो वर्ण॥			
सतनाम			सोरठा - 9		सतनाम	
			अली मंदिल ^१ में वास, वारिज वारि के उपरे।			
सतनाम			फुले कंज सुवास दिन, मनि दिन उदित भए॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			कोहै कमल बारी केहि कहेउ। कोहै मधुकर वास लो भएउ।३७।		सतनाम	
			कोहै भान जो तिमिरि नसावै। कोहै उदित परम पद पात्रै।३८।			
सतनाम			कोहै दास पुरुष केहि कहई। कोहै सतगुरु इमिपद लहई।३९।		सतनाम	
			मोह बारी है वारिज चरना। मन मधुकर कवि इमि कर बरना।४०।			
सतनाम			नाम भान जब भए प्रकासा। उदित ब्रह्म तहां करै निवासा।४१।		सतनाम	
			जन निज दास पुरुष सत अहई। सुकृति सत्त गुरु सो पद गहई।४२।			
सतनाम			परचे पांजी पंथ बिचारी। ज्ञान गमि तब होए उजिआरी।४३।		सतनाम	
			कोइल कुहुके कौने भाऊ। बंक नाल बस कौने ठाऊ।४४।			
सतनाम			जब येहि तन के निद्रा गहई। परम हंस कबने धार रहई।४५।		सतनाम	
			कोइल कुहुके अपने भाऊ। बंक नाल बस नाभी ठाऊ।४६।			
सतनाम			जब यह तन के निद्रा गहई। परमहंस चेतनि महं रहई।४७।		सतनाम	
			साखी - ६			
सतनाम			चेतनि चति कहं चेतिए, चतुरानन्द है पास।		सतनाम	
			चारि वेद जाके कही, सो तब क्या निवास॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			चारिउ वेद चारिउ है मुन्द्रा। काया भेद कहेव इमि सुन्द्रा।४८।			
सतनाम			एक मुख सुनेउ सकल मुनि ज्ञाता। एक मुख देखी प्रेम निजुराता।४९।		सतनाम	
			4			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम

सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
निगम नेति तिहु लोक बखाना। कथिके वेद नाहि पहिचाना।६६।	वेद चतुर है चारिउ भांति। तेहि महंबीता देवस अवराती।७०।	तामे उडिगन ^१ मनि सब अहइ। तामे दिन मनि इन्दु जो कहइ।७१।	पांचो मुन्द्रा तामे अहइ। ईगला ^२ पिगला ^३ सुखमनि कहइ।७२।	छवो चक्र के कहिए भेदा। जोगीनिस दिन करे निखोदा।७३।	जोग करे फिरि भोग मे आवै। ज्ञान गमि विरला कोइ पावै।७४।	मन कंदर्प दोउ बड़ है बीरा। एक निमिखि तन राखु न थीरा।७५।
			साखी - ६			
			दरिया अगम गंभीर है, सत्तनाम है सार।			
			कवि थाके मुनिवर कहै, वेद ना पावहिं पार॥			
			छन्दतोमर - २			
			सुरबैठु त्रिकुटी तीर, यह बड़े बांके वीर।			
			यह कनककामिनि जोर, तुमज्ञान जनि कर भोर॥			
			तैजागु जोग सम्भारि, यह पांच बैठे हारि।			
			जब काम को प्रकास, तुम अवटु अनल अकास॥			
			मदजरे ममिता झारि, तहां दुइ दीपक वारि।			
			तब ब्रह्म भयो प्रकास, इह मेटिजम को त्रास॥			
			तहां लाल हीरा खानि, मनिसंत ले पहचानि।			
			नहिं काल कुबुधा चोर, भव हंस वीमल तोर॥			
			चुंगुमोती मुक्ता जानि, जहां मान सरवर खानि।			
			जहां पुहूप सेज सुगंध, एहलप्ट परी मल गंध ॥			
			जहां अमि वरषत नीर, यह दया सिंधु गंभीर।			
			अखंडित ब्रह्म परकास, भव अमर लोक में बास॥			
			नहिं बहुरि भव का चिन्त, जब मिलेउ सतगुरु मीत।			
			गुन कहत नाहीं ओराय, एह शेष सहस्त्र गाय॥			
			मुख एक किमि कही भाव, गुन प्रेम सुखद सुभाव।			
			6			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नरसिंघ रूप धरि ओद्र विदारा। गैब रूप धरि गरविहिं मारा।६०।	राम रूप दसरथ गृह आए। लंका पति के गरद मिलाए।६१।	कृष्ण रूप धरि कंस पछारा। गोर्बधान धरि भए करतारा।६२।	यह पौरुखा बल है प्रभुताई। निकलंकी फिर रूप बनाई।६३।	मछ कछ बराह स्वरूपा। राव रंक सुमिरहिं सब भूपा।६४।		
			साखी - ११			
			एह कर्ता के कर्म यह, सो गुन कीन्ह प्रकास।			
			सतगुरु ज्ञान विचारि के, होहु बिमल निज दास॥			
			चौपाई			
यह गुन वह गुन करो विचारा। नीरगुन नाम है पुरुष निनारा।६५।	यह गुन आवै यह गुन जाई। वह गुन अजर जरे नहिं भाई।६६।	पाँच तत्तु प्रक्रीति पचीसा। ले गुन रचा जक्त जगदीसा।६७।	सो तिर्गुण कही जक्त भुलाना। वह गुन अचल अमर परधाना।६८।	सो मगु छोड़ि दूसर मगु कीना। वेद पुरान पंडित लौ लीना।६९।	लागहिं कान करम नहिं चीन्हा। सहजहिं लोक मुक्ति फल दीन्हा।१००।	आपु ठगे फिर और ठगाया। चीन्हे न काल करम फैलाया।१०१।
को मारे को रक्षा करइ। को दे मुक्ति नर्क को मरई।१०२।	बिनु बोले बनि आवै कैसे। सांच सुने यह विष दे तैसे।१०३।	अमृत विष का करो बिचारा। सुधा प्रेम है ज्ञान सुधारा।१०४।				
			साखी - १२			
			अमृत छोड़ि विष चाखही, सो विष बसे भुअंग।			
			गरुरी ज्ञान बिचारिये, करे गरुड़ तेहि भंग॥			
			चौपाई			
बामी विषधर सो गृहि माहीं। गरुड़ मन्त्र अपने चलि जाहीं।१०५।	काढ़े जीभ्या घुरि चटावै। चीन्हे सतगुरु काल दुरावै।१०६।	जब चीन्हे तब भव परमीना। जैसे आड़ अटकु नहिं मीना।१०७।	सब गुणगामी गर्व न राता। विमल प्रेम गुन सुमिरहिं ज्ञाता।१०८।			
			8			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जैसे भृंग भाव फुल लीन्हा। संत असंत के परिचय कीन्हा।१०६।	सतनाम	जैसे छीर से नीर निकाला। यह मत चीन्हा सो पीक मराला।११०।	सतनाम	जैसे चकमक पथरिहिं लागा। तैसे क्रोधे अगिनी तन जागा।१११।	सतनाम
सतनाम	जैसे ताव लोहा महं दीन्हा। चिनगारी तन दुख अति भीना।११२।	सतनाम	जैसे फणिक छुवत उठि धावै। फुहकारी से त्रास दिखावै।११३।	सतनाम	जैसे जड़ लाठी में भेदा। ज्ञान बिना कर लिया लवेदा।११४।	सतनाम
सतनाम	साखी - १३					सतनाम
सतनाम	मन पक्षी भौ ज्ञान अहेरी, ऐसे करो विचार।					सतनाम
सतनाम	जहां चले तहां धेरिये, खैंचि कमान करार॥					सतनाम
सतनाम	छन्दतोमर - ३					सतनाम
सतनाम	सत पुरुष नाम अनूप, कथि काया का वाको एह॥					सतनाम
सतनाम	दिव्य दृष्टि जेहि उंजियार, जग जोति अगम अपार॥					सतनाम
सतनाम	यह चंद उड़िगन जेत, यह देखिये सब सेत॥					सतनाम
सतनाम	यह भाल छकि छवि भान, कयि नाम निर्गुन ज्ञान॥					सतनाम
सतनाम	जेहि दसन दमकत नूर, जिमि नसा श्रवण पूर॥					सतनाम
सतनाम	अमि बोलत वैन सुधंग, झरि झरित सर्वो अड॥					सतनाम
सतनाम	जेहि भुजा अति प्रचंड, सात द्वीप है नवखण्ड॥					सतनाम
सतनाम	उर अड सत सुबास, रोम रोम परिमल बास॥					सतनाम
सतनाम	कटि कस्यो वस्त्र सेत, यह परम सुन्दर हेत॥					सतनाम
सतनाम	यह जंघ जुगल जोर, रमि रहे सबेते ओर॥					सतनाम
सतनाम	पद पाये संत जुगल जोर, रमि रहे सबेते ओर॥					सतनाम
सतनाम	पद पाये संत अधीन, तेहि चरण चित लौलीन॥					सतनाम
सतनाम	भव भरम भंजन नीति, करु सार शब्दहिं प्रीति॥					सतनाम
सतनाम	गुरु ज्ञान भयो प्रकास, मेटि तम तिमिर त्रास॥					सतनाम
सतनाम	जम करत नाहीं जोर, येह बांचि नर्क अधोर॥					सतनाम
सतनाम	जड़ जानिए येह सांच, मन तेज ममिता कांच॥					सतनाम
सतनाम	येह दर्स दरिया पाये, कलि कर्मजात बिहाये॥					सतनाम
सतनाम	9	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द नराच - ३			
सतनाम			गहिर गंभीर सर्व सरीरा नाम हिरंमर सो कहिअं॥		सतनाम	
			अति-छवि सोभा ता चित लोभा, चंचल मनसो थिर रहिअं॥			
सतनाम			पदुम प्रकासा सब भर्म नासा भ्रमर कमल में सो रहिअं॥		सतनाम	
			संत सुभागा चरनन्हि लागा भाग भाला गुन ईमि कहअं॥			
			सोरठा - ३			
सतनाम			कोई नीर्मल संत सुजान, सतगुरु पद अनुरागहीं।		सतनाम	
			जमसे वांचि अमान, सुकृत जेहि सांचो बसे॥			
			चौपाई			
सतनाम			केते जोगिह जोग बखाना। इन्द्री काहु के कहा न माना।११५।		सतनाम	
			इन्द्री काम भोग रस जागै। खटरस बीजन रसना पागै।११६।			
सतनाम			नास बास रहा लपटाना। बास कुबास दुबो बिल गाना।११७।		सतनाम	
			स्त्रवन सुने बिरह रस बानी। नैनन्हि सुंदर त्रिया बखानी।११८।			
सतनाम			हृदय सितल समनीर जोजानी। प्यास न मानत तातल पानी।११९।		सतनाम	
			निंद चाहे सेज सुपेती। और भोग कहिए जगकेती।१२०।			
सतनाम			यह जोग भोग करहिं फिरी आई। यह पांचो परिपंच देखाई।१२१।		सतनाम	
			तपते राज बहुरी फिरि आई। पछिली पूंजी गत होय जाई।१२२।			
सतनाम			खटरस वीजन गंध सुगंधा। मीन मासु भक्ष करिहैं अन्धा।१२३।		सतनाम	
			पान फुल रस सुंदरि नारी। अब वेस्वा रति रहत पियारी।१२४।			
सतनाम			गज अब बाज साज सब कीन्हा। संत न चिन्हे मतिका हीन्हा।१२५।		सतनाम	
			साखी - १४			
सतनाम			जीव चाहे सुखराज सब, मनसे कथे निरास।		सतनाम	
			ज्ञानहिं भक्ति बिचारिके, तब सतगुरु का दास॥			
			चौपाई			
सतनाम			एक साधे सब साध ओराई। सब साधे फिरि साधि ना जाई।१२६।		सतनाम	
			ग्यान साधे सो साधु कहावै। छुछुम इंद्री तबे सुख पावै।१२७।			
सतनाम			10		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ज्ञान डोरि मनचंग उड़ाया। जबकल घैंचिनिकट चलि आया।१२८।	ज्ञानहिं मन से खेल बनाई। दीव्य दृष्टि में दर से आई।१२९।	दुरि अब निकट बिकट के धावै। ज्ञान राजा तब त्रास देखावै।१३०।	हैसर बग्गी बहु विधि भांती। घट घट फिरत जाति अजाती।१३१।	अईसन पवन फिरंग बनाया। यह लक्षगंमि के हुजन पाया।१३२।	पल में पलक देखो फिरि जाई। ज्ञान सते सब रंग बुझाई।१३३।	भव निर्मल पदकाम न करई। चिन्हे चोर सकल गुन लहई।१३४।
चिन्हि के यिर तवें मन माना। सतगुरु पदते प्रेम समाना।१३५।	साखी - १५					
भवो प्रेम रत ज्ञान में, गुरुगमि करो बिचार।	कहें दरिया दरसत रहे, दरपन बीच मंझार॥					
चौपाई						
नेम कहां जब मीनहिं खावै। ज्ञान कहां जब भांग बुकावै।१३६।	भक्ति कहां जब है अभिमानी। त्रीया कहां नहिं पिया पहचानी।१३७।	जोग कहां जब जुक्ति न जाना। काया कहां नहिं भेद पहचाना।१३८।	सिखा कहाँ जब सिर नहिं देवै। सतगुरु सो भवसागर खेवै।१३९।	दर्द कहाँ परदर्द न जाना। दर्ब सोई परमारथ ठाना।१४०।	आवत देखा जात न साधी। घोरि पकरि जम मुसुकन्हि बाँधी।१४१।	घरि भर घर में रहन न पावै। खोदि खादि फिरि अग्नि जरावै।१४२।
भएयो अंदेसा खवरि न पाई। कह ग्रिहि नारी रोदन फैलाई।१४३।	जेहुं ऐहो तेहूं चली जईहो। सतगुरु चरन सुध नहिं पइहों।१४४।	करो भक्ति निज ज्ञान बिचारी। धन धन जग में है उजियारी।१४५।	अन्ध कुप कबहीं नहिं परिहो। उदित ब्रह्म भवसागर तरिहो।१४६।	जरा मरनते होइहो न्यारा। जननी गर्भ न होए अवतारा।१४७।	साखी - १६	
कहें दरिया चित चेतिये, सतगुरु कहा बिचारि।						
सीतल चरण सरोज रज, भक्ति करहिं नर नारि॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

11

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जिमि करि जल बिनु मीन दुबारी। उलटि-अवटी भवबिखम बेकारी।१४८।	सतनाम	कठिन कसौटी जम जगजीवा। बांधो ब्याधो मर कट ग्रिंवा।१४९।	सतनाम	घर घर द्वारे जाए नचावै। हुकुम छरी तन त्रास देखावै।१५०।	सतनाम
सतनाम	बहु प्रकार बंधन नहिं छूटा। पकरि पकरि भवसागर लूटा।१५१।	सतनाम	झुनुका फन्द रचा बड़ भारी। घंट बनाए जीव धरि मारी।१५२।	सतनाम	अस मत मचेवों मर्म नहिं जाना। उलटि परा नरनी अरुझाना।१५३।	सतनाम
सतनाम	बधिर सिख आंधर गुर कीन्हा। नैन बिहुंन मगु कैसे चिन्हा।१५४।	सतनाम	तापर दस बिस लाइन्ह साथा। बुड़ि मुए भव भए अनाथा।१५५।	सतनाम	अव घट तरनी केवट अनारी। परे चकोह टुटली पतवारी।१५६।	सतनाम
सतनाम	इत उत नाहिं बुड़े मझ धारा। कन हरि चिन्हिना कीन्ह गवारा।१५७।	सतनाम	साखी - १७			
सतनाम	निराकार निरगुन कथे, बिनु करता करुआर।					
सतनाम	गुन बिहुना बुड़ि मुआ, गुन बिनु धैचनि हार॥					
सतनाम	छन्दतोमर - ४					
सतनाम	सब कहत निरंकार, किमि होहिं भौजल पार॥					
सतनाम	बिनु रूप अगम अपार, बिनु द्रिष्टि है उजिआर॥					
सतनाम	बिनु संधि श्रवन रोच, बिनु बैन सबकि सोच॥					
सतनाम	बिनु नासा बास सुबास, सब कहत है हरि को दास॥					
सतनाम	बिनु भुजाकर को हिन, येह वेद को मत चिन्ह॥					
सतनाम	नहिं पेट पिठि हैं उर, सब कहत हाल हजूर॥					
सतनाम	नहिं जंघ पद को भाव, चहि चलन चाहत चाव॥					
सतनाम	सब कहत मर्म आंकुह, बिनु छीर घीत कह दूह॥					
सतनाम	जब पांच तत्तु नहिं तीन, तब कौन करता चीन्ह॥					
सतनाम	तब रूप बिनु अंधिआर, को खड़ा है दरबार॥					
सतनाम	किमि गए संत हजूर, सब दास देवता सूर॥					
सतनाम	अदेख बचन बिकार, जब चीन्हा नहीं करतार॥					
सतनाम	येह झूठ कहना चोर, सो परे नरक अधोर॥					
सतनाम	12	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
दरिया जल थल कहीए अकासा। दरिया भान तेज परकासा।१७०।	दरिया उड़िगन 'इन्दु' समाना। दरिया दिल आतम सब जाना।१७१।	दरिया सो गुन तिर्गुन पारा। कहि कवि थाके बेद पसारा।१७२।	दरिया नाम देह जनि जानी। दरिया नाम पुरुष पहचानी।१७३।	दरिया हीरा हिरम्मर नीका। दरिया चारि वेद का टीका।१७४।	दरिया बारे पारे इैसे। दरिया नाम उनमुनी दीसे।१७५।	बेवाहा वे किमति जो कहिया। दरिया दरशन सोपद गहिया।१७६।
साखी - १६	दरिया नाम समुन्द्र है बुन्द बुन्द संसार।	दोउ तरंग जाफा हुआ, राम कृष्ण अवतार॥	चौपाई	निगम कहे जम विशने कीन्हा। विशन के छोड़ि काहे नहिं दीन्दा।१७७।	पुत्र पिता के किमि कर नासा। धरि धरि सबके करे तमासा।१७८।	ब्रह्मे अक सबके लिखि दीन्हा। उनके परलै के फेरि कीन्हा।१७९।
फिरि रुद्रके होइहैं नासा। वेद कहे तन जमकी त्रासा।१८०।	इन्द्रसो केते चलि चलि गयउ। राज अमर पद केहू न पायउ।१८१।	दस अवतार गने संसारा। सो परलेतन कीन्ह संघारा।१८२।	अठराह जन्म हमहूँ चलि आये। पांच जन्म धरि यह गुन गाये।१८३।	किछु गोप किछु प्रगट कीन्हा। आपन बात आप लिख लीन्हा।१८४।	साहब बचन कहा समुझाई। सो अपने दिल निश्चय आई।१८५।	धर्म राय सब दुनियां बिगोई। या जग तन धरि सब मिलि रोई।१८६।
एक पुरुष सत्त अहे अमाना। तेहिं तन जम नहिं करे पयाना।१८७।	साखी - २०	पुरुष किया जग जानि जम, नाम रखा धर्म धीर।	हुकुम राखे करताके, और कौन बड़ा बीर॥	चौपाई	ऐसो सत करता है भाई। सतगुरु ज्ञान चीन्हो चितलाई।१८८।	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	आये सरन जम करे न हानी। निश्चय होउ मुक्ति पहचानी।१८६।	सतनाम	सत की नाव चढ़े जन कोई। तीन लोकते न्यारे होई।१८७।	सतनाम	विविध लहरि जो उहे तरंगा। कनहरि कसि के गहे उतंगा।१८८।	सतनाम
सतनाम	सो कनहरिया करता अहई। मिरालेप निश्मोलिकां कहई।१८९।	सतनाम	उतरे पारपर्म गुरु ऐसा। तीनलोक मानो छबिबरे तैसा।१९०।	सतनाम	पुहूप पलंग पर करु सुखराजू। छत्र मनोहर सब सिर छाजू।१९१।	सतनाम
सतनाम	अति विलास गुनकिमिकरि कहिये। अमृतसागर सो सुख लहिये।१९२।	सतनाम	अमर चीर सुगंध सोहाई। अतिछवि सुन्दरबरनि न जाई।१९३।	सतनाम	यह निश्चय जन जानहु नीका। सतनाम इमि सब को टीका।१९४।	सतनाम
सतनाम	साखी - २१					सतनाम
सतनाम	सत्तकी नाव जो चढ़े, नर जाय अमर पुर गांव। आवागवन रहित भयो, अजर अमर निज ठांव॥					सतनाम
सतनाम	छन्दतोमर - ५					सतनाम
सतनाम	एह लोक महिमा हेत, जहां पुहुप पलंग है सेत॥ जहां गंध परिमल बास, झरि झरत अग्र सुबास॥ जहां अमि सागर संग, तहां विविध कौतुक रंग॥ जहां लाल हिरा ज्योति, मनि तहां अविगति होति॥ जहां चंद सुरनहिं जाय, यह पवन गमिनहिं पावे॥ जहां अग्रझल के नूर, सब हंस है भरि पूर॥ छबि देखि मगन सोहाये, नहिं काल संसे पाये॥ नहिं देवस को कछु भाव, नहिं रइनि उड़िगन आव॥ नहिं नींद आलस होये, सब कर्म बैठे खोये॥ यह छुघा नाहीं शरीर, जब पिया अमृत नीर॥ नहिं काम कामिनि संग, तहां जुगल सोभित अंग॥ नहिं माया ममिताकाल, सब छूट जमको जाल॥ नहिं तरुन वृद्धि है बार, रंग एक असल करार॥ धन ज्ञान सतगुरु दीन्ह, जो मुक्ति को पथ चीन्ह॥ जीन्हि वारि तनमन दान, सो संत सुबुद्धि सुजान॥					सतनाम
सतनाम	15					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

छन्दनराच - ५

अति सुखसागर सबगुन आगर, रहि अमृत झरि आवै॥
 पलंगसुबासा सबभर्म नासा, पुहुप बिछौना सो पावै॥
 अमर सोहासित परिमल वासित, पर्म आनन्द सदा कहिये॥
 जन्म प्रसंग सब सुख संग, इमि कर सतगुरु पद गहिये॥

सोरठा - ५

एक मुख कहा न जाय, अमरलोक बहु भांति हए।
 गुरगमि ज्ञान सुनाय, संत सुधर जनजानिए॥

चौपाई

प्रथमहिं नारि जो पुरुष बिलासा। तामे तीन देव प्रगासा।१६८।
 बाहर भीतर देखु बिचारी। दोउ जगल पुरुष एक नारी।१६९।
 शिव शक्ति सब संश्रित अहइ। जहांले आतम जीव सब कहई।२००।
 सो बाहर छबि रचा सवारी। अतिगुन कोमल बुद्धि अधिकारी।२०१।
 भंवरा भंवरि दोउ रसबासी। लेहि घानि नहिं होहिं उदासी।२०२।
 सो त्रिया तन सिन्धु शरीरा। उपजे लाल मोती घन हीरा।२०३।
 सो फिरि करमे जाये बंधावै। ज्ञान बिना जौहर कहां पावै।२०४।
 ऐसे लोभ ललचिकर लागे। शक्ति बिना दुजानहिं जागे।२०५।
 बिरलाजन जो कीन्ह विचारा। सतगुरु बिना ना होय उबारा।२०६।
 अनुभव ज्ञान भया परसंगा। मन मत भाव विविध है रंग।२०७।
 अनुभव कथा करे पहचानी। कोहै सतगुरु निर्मल ज्ञानी।२०८।
 सतगुरु चरन चीन्ह जब पावै। तब अनुभव गुन हित करि गावै।२०९।
 तीन लोक से बाहर कहई। तब सतगुरु गुन हित करि गहई।२१०।

साखी - २२

तीन लोक के बाहरे, सो सतगुरु का देश।
 जो जन जानि बिचारहीं, यम नहि पकरे केश॥

चौपाई

जब सतगुरु परचे नहिं पाई। सो जिव जानि सदा जहड़ाई।२११।
 सत्य भाव की जुक्ति न जाना। सो जन विषय सदा लपटाना।२१२।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	पंथ न थाके पंथिकथकि गयउ। थाके सो शिव शक्ति नहीं थकेउ।२१३।	सतनाम	या तन थाकि जोग नहीं थकेउ। थाके बिरंच वेद जीन्ह भखेउ।२१४।	सतनाम	थाके भंवरा कुमुदिनी के पासा। अति प्रीति नहिं होहिं उदासा।२१५।	सतनाम
सतनाम	थाके भक्ति ज्ञान जब भयउ। यह गुन प्रगट सभनि मिलि कहेउ।२१६।	सतनाम	थाके परिन्द गगन उड़ि आनेउ। गगन थाकि जिमि ठहरानेउ।२१७।	सतनाम	उपजी बिनसि सब इमि करि जावै। बुझि गयो दिया पीछे पछतावै।२१८।	सतनाम
सतनाम	जब लगि गुर गमि ज्ञान न होई। तब लगि धोखा धरे सब कोई।२१९।	सतनाम	निर्मल प्रेम जो होय निरंता। गहो एक फंद छोड़ि अनंता।२२०।	सतनाम	एक छोड़ि अनंत अरुझाना। शिव शक्ति में प्रेम समाना।२२१।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - २३</p> <p>थाके मेघ^२ करोड़ जल, धरती नहीं अघाय।</p> <p>ऐसे शिव शक्ति में, थाकि थाकि सबजाय॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	द्रोणा गिर हलि वंत ले आये। टूटि पड़ा सो कृष्ण उठाये।२२२।	सतनाम	थाके गोपाल गोबरधन लीन्हा। सहस्र गोपिन्ह से पिठि उन्हीं दीन्हा।२२३।	सतनाम	थाके बली जब बावन आये। साढ़े तिन परपीठी न पाये।२२४।	सतनाम
सतनाम	थाके राम सीता गयो चोरी। मारा बालिहिं कटक बटोरी।२२५।	सतनाम	थाके रावन बुद्धि का थोरा। अति बल गर्व भया फिरि चोरा।२२६।	सतनाम	रावन मारि राम तन फूला। धन दसरथ कुल कोई ना तुला।२२७।	सतनाम
सतनाम	सो तिर्गुन तन गयउ नसाई। कीर्ति रहा जग में छबि छाई।२२८।	सतनाम	उपजि बिनसि केते बीर गयउ। जिन्ह जिन्ह देह तिर्गुन के पयउ।२२९।	सतनाम	सो कर्ता जग थापहिं आनी। बुढ़े भवजल सो अभिमानी।२३०।	सतनाम
सतनाम	गुन जो रहित कहे गुन ज्ञाता। उत्पति परले होत निपाता।२३१।	सतनाम	<p>साखी - २४</p> <p>जो जो जग में जन्मिया, काया रहा नहिं थीर।</p> <p>अजर अमर सत पुर्ष हैं, खपे लखन रघुवीर॥</p> <p>चौपाई</p>			सतनाम
सतनाम	सीता चरित्र राम कर जाना। सीता चरित्र केहू ना पहचाना।२३२।	सतनाम				सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सीता मन मह कीन्ह बिचारी। अब कछु चरित्र करों अधिकारी।२३३।	जोति सरूप वेद जेहि गएउ। सो तन परगट भेद नहि पएउ।२३४।	सत्य पुष के मम कन्या कुमारी। हम सब चरित्र रचा फुलवारी।२३५।	त्रीय देवहिं हम वृद्धि मचाया। उन नहिं भेद हमारो पाया।२३६।	तीन देव यह हमसे भयऊ। नीगम नेति वेद अस गयऊ।२३७।	जग जननी हम जोति अपारा। सब घट प्रगट दीपक बारा।२३८।	चरित्र राम देखिहें जब नीका। आपन बल जनिहें तब फीका।२३९।
अतना गोप गुप्त कौ राखा। औरि सांच आगे कछु भाखा।२४०।	साखी - २५					
गोप प्रगट इह जानिके, कहा वचन सब सांच।		आगे चरित्र चित में बसे, सो नहिं होइहैं कांच॥				
छन्दतोमर - ६						
हम जक्त जननी ओति, तिन लोक बरते जोति॥		हम जनक के गृह आए, जेहिं नेति नीगम गाए॥				
इमी धनुष सुअमर कान्ह, मम भेद केहुना चीन्ह॥		नृप आये जग सब झारि, यह धनुष परि गौ गारी॥				
सब चले हारि बिहाये, नहिं कमठ को पिठि पाये॥		येह रावना बल जोर, उनहि धनुष देखा मोर॥				
बल हीन तेहि कै दीन्ह। मम शक्ति बिना छीन॥		परशुराम जग बड़वीर, धनुष देखि निकट ना थीर॥				
गनि राव केते भाव, नहिं निकट पाइन दाव॥		इह हारि जनक ही रोच, अघ पाप बड़ भौ सोच॥				
गुर चाहिए नहिं भाव, जिन्ह कीन्ह ऐसो दाव॥		सब सोच नारिन्ह झारि, प्रन कठिन दीन्हो डारि॥				
सिया मातु सोच बिचारी, नृप हारिया जग झारि॥		यह जनक के भई रोस, यह कठिन कमठा गोस॥				
सब देव अब त्रीपुरारि ^३ , परिपंच दीन्हो डारि॥						
<div>18</div>						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द नराच - ६			
सतनाम			यह परिपंची ज्योतिन कंची, कचन की कलियाँ झलके ॥		सतनाम	
			है अति निकट-विकट करि जानो, घट बरते सो पुलके ॥			
सतनाम			जानि बिचारो ज्यों भर्म टारो, सो नृप जानत है जानकी ॥		सतनाम	
			है ब्रह्ममंडा सब नव खंडा, खलक न जाने यह मन की ॥			
			सोरठा - ६			
सतनाम			मम तोरेव धनुष प्रचारि, राम जन्म जग विदित है ।		सतनाम	
			हरखे नर अव नारि, सिया जुगल जग में भई ॥			
			चौपाई			
सतनाम			रावन मारि राम हरखाना । भयो गर्व तब सीता जाना । २४१ ।		सतनाम	
			कहे सिया सुनो श्रीरामा । दस सिस काटि किन्ह धुरिधामा । २४२ ।			
सतनाम			मैं दासी तुअं अंतर जामी । कहो बचन सुनो निजु स्वामी । २४३ ।		सतनाम	
			एहि रावन के कहिए न वीरा । सहस्त्र वदन है सेन्धु का तीरा । २४४ ।			
सतनाम			अति प्रचंड भुजाबल अहई । महा बिकट वीर तेहिं कहई । २४५ ।		सतनाम	
			अति है गर्व कटक नहि राखा । अइसन वीर वेद नहिं भाखा । २४६ ।			
सतनाम			अइसन वीर कहां है एका । जे नहिं सैन कटक सब टेका । २४७ ।		सतनाम	
			वह नहिं जाने नाम तुम्हारी । जग में जन में बहु बफु धारी । २४८ ।			
सतनाम			चहूँ ओर मेंरु मंडल है नीका । सहस्त्र वदन तहवां हए टीका । २४९ ।		सतनाम	
			भोजन चालिस है बिस्तारा । एक सै साठि सहर गुलजारा । २५० ।			
			साखी - २६			
सतनाम			अइसन सहर मदनपुर, जहां रती ^३ काम संजोग ।		सतनाम	
			निस बासर सुख बेलसे, तां विपति नहिं सोग ॥			
			चौपाई			
सतनाम			होरा खानि मोती सब अहई । झलकत नग गुन किमि कर कहई । २५१ ।		सतनाम	
			सुन्दर नर नारी सब सोभा । मानो कमल भमर चीत लोभा । २५२ ।			
सतनाम			पट वस्त्र सब पेन्हे जराऊ । मानो चित्र लिखि बीच आऊ । २५३ ।		सतनाम	
			नहिं तहां दुखी सुखी सब अहई । अनि धनाध गुन किमि कर कहई । २५४ ।			
सतनाम			अति बेलास सब रस के खानी । नहिं तहां दुखी सुखी पहचानी । २५५ ।		सतनाम	
			19			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जहाँ लहि बरन बसे सब लोगा। सब सुख कहिए उहई भोगा।२५६।	सतनाम	इन्द्र लोक मानो उतरा नीके। सब सुख तहां देखि एह जीके।२५७।	सतनाम	गंधर्पी बोले गंध सुबासा। निर्प आगे सब करहिं तमासा।२५८।	सतनाम
सतनाम	निसुवासर में एहि बड़ाई। नाच काछ सब राग सुनाई।२५९।	सतनाम	साखी - २७	सतनाम	रहत असंक सुख अति, जानत काहु न बीर।	सतनाम
सतनाम	सिया बचन तब सुनि के, कोपे लखन रघुवीर॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सब मिलि मंत्र जो किन्ह बिचारी। अब प्रभुता बल देखिए भारी।२६०।	सतनाम
सतनाम	हम तौ दनुज दईत सब मारा। महा प्रचंड जगतेहि पछारा।२६१।	सतनाम	असकै लखन कोपिकहे बानी। सहस्त्र बदन कै करी हौ हानी।२६२।	सतनाम	राम काहां तुम का अकूलाने। बड़ है चरित्र भेद कोई जाने।२६३।	सतनाम
सतनाम	मंत्री से अस बोले बिचारी। यह सब चरित्र करहू निरुवारी।२६४।	सतनाम	रावन मारी दुख सब गएउ। यह पीछे दुख किमि करि भाएउ।२६५।	सतनाम	किमिकरि चरित्र कहों निरुवारी। तुम प्रमातम द्रीष्टि पसारी।२६६।	सतनाम
सतनाम	कहे मंत्री तुम सब मतिधीरा। तुमते कौन जक्त बड़ वीरा।२६७।	सतनाम	सगरि कटक बोलावन भाएऊ। आदि भेद यह सबसे कहेउ।२६८।	सतनाम	सुनि के चरित्र हर्खा सब भाएउ। बड़े वीर बांके जो रहेउ।२६९।	सतनाम
सतनाम	चले सभनि मिलि पंथ बिचारी। पदुम अठारह जो दल भारी।२७०।	सतनाम	खग मृगा बन चर और पखेरू। धाए चढ़े गिरि सब मिलि हेरू।२७१।	सतनाम	डोलत बोलत चले पराई। टूटत फूटत सो गृहि आई।२७२।	सतनाम
सतनाम	साखी - २८	सतनाम	भयो सोरतेहि नग्र में, सब मिलि कहा जो जाए।	सतनाम	लंकापति जिन्ह मारिया, सो पहुंचा ईहां आई॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	सहस्त्र बदन तब मुंह मुसुकाना। माया चरित्र केहु नहिं जाना।२७३।	सतनाम	जो जाने सो रखे छिपाई। प्रगट बहुरि कहे नहिं आई।२७४।	सतनाम
सतनाम	20	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	हम यह बहुत दिनह से जाना। सो कौतुक सब आय तुलाना।२७५।	सतनाम	बांधो फिरहीं मया के पेरे। जहां घौचे तहां जाहिं सबेरे।२७६।	सतनाम	जग जननी है जग उजिआरी। महा प्रचंड मैं कहों बिचारी।२७७।	सतनाम
सतनाम	त्रिय देवहिं जीन्हि आदि भुलाया। सो माया रामहिं खेलि-खेलाया।२७८।	सतनाम	माया चरित्र केहु नहिं जाना। सो त्रिगुन तन जग पतियाना।२७९।	सतनाम	जीतो सभे जो मया जीताई। मम सिर खंडिहें सिया प्रभुताई।२८०।	सतनाम
सतनाम	मृत्यु मोर आई नियराना। सनमुखा जाए रचो मैदाना।२८१।	सतनाम	सनमुखा जवें कटक चलिऐउ। महाबीर देखि संका भएउ।२८२।	सतनाम	छुटा बान गर्द जब भएउ। एकहि बान कटक चलि गएउ।२८३।	सतनाम
सतनाम	एक बान सब कटक ओराना। जिन गृहि पहुँचे आप ठेकाना।२८४।	सतनाम	साखी - २६			
सतनाम	रामलषन कर बान कसी, भीरे रण में जाय।					
सतनाम	वह टरे नहीं भूमि टरे, टरत टरे नहिं आय॥					
सतनाम	छन्दतोमर - ७					
सतनाम	दोउ अनुज इमि करिहारी, तन परे पुहुमी डारी॥					
सतनाम	उन्हीं खेत जीतेउ बीर, सब कटक लागेउ तीर॥					
सतनाम	सूर चढ़ि बेवाने धाव, यह कठिन परि गव दाव॥					
सतनाम	सुर सिया अस्तुति कीन, तुम लाज को परमीन॥					
सतनाम	सब जक्त पारे गारी, पति जाति हौ तुम हारी॥					
सतनाम	बल बांधिये परचंड, एही काटिकरु सत खंड॥					
सतनाम	तुअ सुजस जग में हीत, सुर मान हैं परतीत॥					
सतनाम	भये सिया भयंकर बीर, सुर डरे देखि शरीर॥					
सतनाम	कर खर्ग लीन्ह उपारी, सहस्त्र बदन डारेउ मारि॥					
सतनाम	फिरि धरा सिया सरूप, मन माया अवि गति रूप॥					
सतनाम	लीन्हा राम लषन जगाये, दोउ अनुज उठु अकुलाये॥					
सतनाम	पुछु राम बात बनाये, बीर कवन मारेउ आये॥					
सतनाम	सिया बोलि निज करि प्रीति, तुम सकल कटकहिं जीति॥					
सतनाम	तुम जानिये जगदीश, यह काट सहस्त्रों शीस॥					
सतनाम	तुम भक्त को भगवान, मम दूसरों नहिं आन॥					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

21

छन्दनराच - ७

महा प्रचंडे रावन डंडे, खंड अखंडे सो कहिअं॥
 दैतनि दावनि सोक नसावनि, जग जननी जग ईमि लहिअं॥
 माया उजागर सब जग सागर, नागरी मन को बुद्धि कहिअं॥
 छलते बलते कलते काटेवो, ज्यो नागिनि विष रहिअं॥

सोरठा - ७

मया प्रचंड बिचारि, हारे सकल नरेश सब।
 मुनि पंडित सब झारि, बिरला संत समाज में॥

चौपाई

बोले राम जो बचन बिचारी। यह संसे बड़ि तन में डारि।२८५।
 महावीर सब गये ओराई। इन्हि सिर खंडा कवनि प्रभुताई।२८६।
 हम दुबो अनुज मोह परि गैयऊ। यह अचरज गति किमि करि भैयऊ।२८७।
 सीता सती बोली सत बानी। मिथ्या बचन न कहो बखानी।२८८।
 देखा कटक जो सभे ओराना। अनुज जुगल दुइ रहे ठेकाना।२८९।
 सहस्त्र वदन वीर बड़ बंका। जाके तेज कटक सब दंका।२९०।
 तुम दुबो भ्राता भर्म परि गयउ। कठिन बान तन मोह अति छयउ।२९१।
 तब आदि' जोति मम जाग प्रचारी। कर गहि खर्ग जो लीन्ह उपारी।२९२।
 सहस्त्र बदन के सीर जब छीना। देवतन्हि जै जै अस्तुति कीन्हा।२९३।
 राम कहा सब चरित्र दिखाओं। तब मोरे मन निश्चय पतिआओं।२९४।
 तुम कोमल अति कमल सरूपा। अति छबि सुंदर किमि कहि रूपा।२९५।
 तुम अबला बल किमि करि पाई। तुम प्रभुता बल देहु देखाई।२९६।

साखी - ३०

सत पुरुष सत जानके, तम्हें दीन्ह जक्त को भीर॥
 शिव शक्ति जग जुगल है, और कवन बड़ बीर॥

चौपाई

तुम्ह मम पति हौ मैं तुम नारी। कहा खोज तुम परे हमारी।२९७।
 जनिखोजुचरित्र नाही पयानीका। चरित्र बिचारे मन होय फीका।२९८।
 इन्द्र जाल है चरित्र हमारा। इमि करि भुले कसल सब संसारा।२९९।
 महादेव यह चरित्र में लागे। आदि अंत गुन सब कछु पागे।३००।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बिरह बान हम उन्ह तन लाई। बिकल फीरहिं कहिं ठौर न पाई।३०१।	ब्रह्मा के बुधि हम छलि लीन्हा। बेद कथा मम गुन नहिं चीन्हा।३०२।	जोति सरूपी पुर्ष बताया। पुर्ष छोड़ि नारि गुन गाया।३०३।	नारद मुनि फिरंग परि गएउ। भर्मत भर्म अन्त न पएउ।३०४।	महिरावन से तुम्हे बंधाया। यह कौतुक केहु अन्त न पाया।३०५।	कर गहि खर्ग छिना सिरजाई। सिव सक्ति दुवो जुगल देखाई।३०६।	
साखी - ३१						
एह कौतुक सब देखिके, जौ मन राखहु थीर।						
अब सब चरित्र देखाओ, सुनहु बचन रघुवीर॥						
चौपाई						
स्वर्ग पताल भयंकर भारी। कर गहि खर्ग जो लीन्ह उपारी।३०७।	प्रबल मया जोति जग बारी। अनल लपटी चहुं छटा पसारी।३०८।	रामलखन जोरे कर ठाढ़ै। स्वर्ग पताल एक सम बाढ़ै।३०९।	छेमा करो देखा प्रभुताई। यह गुन बेद कबहु नहिं गाई।३१०।	फिरि तन धरा सुन्दर छबिनीका। तीन लोक मानी मनिवरे ठीका।३११।	सपने सोवत ईमिजो जागा। एसो भर्म राम तन लागा।३१२।	
सोवत निन्द जौ देखो कोई। पिछे बात कहन के होई।३१३।	औसन मोह भर्म भव भारी। रामलखन मिलि बात बिचारी।३१४।	दुवो जने दुई रंग जो देखा। उनकी बचन उन्हें नहिं लेखा।३१५।	यह परिपंच मया कर चीन्हा। सो जाने जौ कौतुक कीन्हा।३१६।			
साखी - ३२						
महा माया के चरित्र है, कवन सके निरुआरि।						
सतपुर्ष यह जानहीं, जीन्हि रचा पुर्ष एक नारि॥						
चौपाई						
सतगुरु बिना मुक्ति नहिं जानी। ईमि करि जम जीव करिहें हानी।३१७।	सतगुरु बिना मुक्ति नहिं पावै। कतनो पढ़ि पढ़ि रचिगुन गावै।३१८।					
23						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुक्रित	सतगुरु	अब	बहुग्याता।	जाते	पुर्ष	नाम निजुराता।३१६।
दर्व	हरहिं	परसोक	ना	हरहीं।	सोगुरु	नर्क अधोरहिं परहीं।३२०।
देह	चिन्हा	पर	प्रज्ञान	ना	चिन्हा।	औसो गुरु जक्त मह किन्हा।३२१।
भीतर	काग	हंस	कर	साजा।	सो गुरु	करहिं बड़े बड़े राजा।३२२।
ब्रह्म	न	चिन्हहिं	ब्राह्मन	जाती।	ब्रह्म	चिन्हहिं तौं होहीं अजाती।३२३।
अपने	ब्रह्म	अवरिको	आना।	ताते	जम	के हाथ विकाना।३२४।
चीन्हहु	सतगुरु	जो	अनुरागी।	आदि	अन्त	ज्ञान में जागी।३२५।
सो	गुरु	ज्ञान	मुक्ति	की	खानी।	सतगुरु भेद करो पहचानी।३२६।
साखी - ३३						
ज्ञान अचल जबही मिले, तब छुटे भ्रम भीर।						
कहें दरिया दरसन होखे, दया सिधु का तीर॥						
छन्दतोमर - ८						
जग जानु सतगुरु हीत, गहि लिजे चर्ण पुनीत॥						
यह छूट जमको जाल, नहिं निकट आवत काल॥						
यह मूल दर्सन चन्द, जहां होत परम आनन्द॥						
सब तंम तिमिरी छूट, यह भर्म भाजन फूट॥						
तहां ब्रह्म भौ प्रकास, लै लपट मधुर कर बास॥						
मन थीर अविं गति रंग, तहां उठत विमल तरंग॥						
तहां अंमि बरषत नूर, सो संत जग में सूर॥						
भव मैं न ममिता थीर, सब बरसु मोती नीर॥						
गुन हंस बिलगेव जानि, नहिं काग कौआखानि॥						
तहां भक्ति होत न भंग, येह ग्यान न सतगुरु संग॥						
जन्म भयउ निर्मल दास, येह पुहुप दीपे बास॥						
तहां हंस करु सुखराजू, तहां अमर छत्र है छाजू॥						
सब होत भर्म निकेत, गुन ज्ञान गमि निज हेत॥						
मम कहेवो ज्ञान बिचारि, इमि संत लेहु नीरुवारि॥						
24						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - ८			
सतनाम			सतगुर प्रेमा तेज भ्रम नेमा, भव के बीच सो ना भटके॥		सतनाम	
			चित चकोरा चंद के ओरा, पलक पलक में इमि लटके॥			
सतनाम			ऐन ^१ मझारं दीपक बारं, निर्गुन झरि तहा यो झलके॥		सतनाम	
			बिमल सो सारं निर्मल सुधारं, गरजि गरजि धन सो पुलके॥			
सतनाम			सारेठा - ८		सतनाम	
			गुर गमि करो बिचार, सगुन निर्गुन सो भेद यह।			
सतनाम			जन पंडित लेहु सुधार, वेद चतुर गुन जब पढ़ा॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			सिया चरित्र जग कुम्भज जानी। गोप मंत्र तब दिल में ठानी।३२७।		सतनाम	
			माया पबल केहु अन्त ना पाई। वेद चतुर गुन सब केहु गाई।३२८।			
सतनाम			जाके बसि काल नहिं माया। ताके सब करता ठहराया।३२९।		सतनाम	
			उपजत विनिसत यह जग देखा। सत्य पुर्ष कोई अगम अलेखा।३३०।			
सतनाम			जीन्हि एह रचा काल अरुमया। सो गुन अबि गति भेद ना पाया।३३१।		सतनाम	
			निर बधिक वोए बधे ना कोई। अनंत जुगके करता सोई।३३२।			
सतनाम			सो अपने दिल कीन्ह विचारा। कासो जाए करों निरुआरा।३३३।		सतनाम	
			यह बड़ मोह भर्म अति भएउ। कीगुन कर्म साधु कए लएउ।३३४।			
सतनाम			एक चरित्र मय कियो हैं जानी। सोखेवो सिंधु बारी सब छानी।३३५।		सतनाम	
			सब के मन एहि जो दीसा। सोखेव सेंधु कहेव जगदीसा।३३६।			
सतनाम			इन्द्र जाल मम विद्या जो ठानी। सोखेव सेंधु महा जल पानी।३३७।		सतनाम	
			साखी - ३४			
सतनाम			ऐसन कौतुक जक्त में, सो सब कहत है सांच।		सतनाम	
			एक विचार सांच है, औरि बचन सब कांच॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			अब मैं एहि निके निरुवारो। मुनिके पास बचन जाए डारो।३३८।			
सतनाम			घट घट करता सभो बखाना। एक चिन्हे बिनु सभो भुलाना।३३९।		सतनाम	
			जीव जीव जीव सब अहई। उलटि पलटि ^३ भवसागर परई।३४०।			
सतनाम			जौं करता यह घट में अहई। तौं कालपत न काहे के करई।३४१।		सतनाम	
			25			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अवनी आए सभे कोई नाचा। देह धरि धरि कोई नहिं बांचा।३४२।	सतनाम	त्रियदेवा ^१ से को अधिकारी। सो तन काले किन्ह उजारी।३४३।	सतनाम	सुर नरमुनि के कौन चलावै। अनेक जन्म भवसागर आवै।३४४।	सतनाम
सतनाम	हमके कहे सभे कोई ज्ञाता। सो संसे भव हम कहराता।३४५।	सतनाम	जांउ जहां जग जो कोई ज्ञानी। बिहित बिमल कै करौं बखानी।३४६।	सतनाम	जांउ जहां जग जो कोई ज्ञानी। बिहित बिमल होय करौं बखानी।३४७।	सतनाम
सतनाम	भारद्वाज परे आग जो बासी। तासो करो ज्ञान परगासी।३४८।	सतनाम	साखी - ३५			
सतनाम	यह करता जग बरता, उह करता रहा निनार।					
सतनाम	अजर अमर सतपुर्ष हैं, ताको करो विचार॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	सो निश्चे सतपुर्ष है सांचा। जो यह काल कर्म से बांचा।३४९।	सतनाम	सिंधु अगम कि गमि जौ पावै। सकलो माया जानि बिलगावै।३५०।	सतनाम	बुधी माया ^२ नहिं व्यापे जेही। सकल ज्ञान गुन जानिए तेही।३५१।	सतनाम
सतनाम	मन करता का करे विचारा। सो गुन ज्ञान सिंधु विस्तारा।३५२।	सतनाम	ताके हाथ मुक्ति है सांचा। जेहि नहिं भर्म बचन है कांचा।३५३।	सतनाम	सो ज्ञानी जग बिरला होई। ताको चरन कमल पद सोई।३५४।	सतनाम
सतनाम	कहे वेद सतगुरु की बाता। सो सतगुरु जग ईमि है ज्ञाता।३५५।	सतनाम	भोखा कहे सतगुरु की बानी। सतगुरु महिमा जे पहचानी।३५६।	सतनाम	कहे सुने नहीं बनि आवै। जो कोई ज्ञान परम पद पावै।३५७।	सतनाम
सतनाम	भोखा अलेख जो है ब्रह्मचारी। गुप्त भाव सब ज्ञान बिचारी।३५८।	सतनाम	साखी - ३६			
सतनाम	ज्ञानी मिले तौ मन मिले, पुछों बचत तेहि जाय।					
सतनाम	माया ब्रह्म बिबेक करी, ईमि सतगुरु पदपाये॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	कीन्ह गवन प्रयाग पगु दीन्हा। बिबिधि मुनि जहां हरिपद लीन्हा।३५९।	सतनाम	चले तुरंत तब मुनि पह गएउ। भारद्वाज के आश्रम आएउ।३६०।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

26

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - ६			
सतनाम			सकल जम जाला बिदित है काला, करता इनके किमि कहिये॥		सतनाम	
			माया प्रचंडे सब जग डंडे, डगमग पंथ में किमि लहिये॥			
सतनाम			कलबल बाजी ईमि दल साजी, जग नहिं जाने मुनि दहिये॥		सतनाम	
			ब्रह्म प्रकासा सब भर्म नासा, भवसागर में गुन गहिये॥			
			सोरठा - ६			
सतनाम			तुम मुनि बचन प्रमीन, भारद्वाज जग बिदित होव।		सतनाम	
			मही घीर्त काढ़ेव बीन, ईमि आएव तुम पास में॥			
			चौपाई (भारद्वाज वचन)			
सतनाम			तुम प्रतिति सभै मुनि जानी। आदि अन्त निर्मल तुम ज्ञानी।३६६।		सतनाम	
			पूरन ब्रह्म सभे विधि ज्ञाता। गुन ज्ञानी तुम ^१ हरिपद राता।३७०।			
सतनाम			जोग बिराग सभै तुम जानी। सोखेव सेंधु जाहां लगि पानी।३७१।		सतनाम	
			तुम महिंमा हरिहर जो जाना। सनकादिक ब्रह्मादिक माना।३७२।			
सतनाम			शुक्राचार्य त्रिहसपति जानी। आदि गणेश औ कहेव भवानी।३७३।		सतनाम	
			सो किमि भर्म भएव गुन ज्ञाता। माया प्रबल है सो तन राता।३७४।			
सतनाम			सुनि के भर्म मोहि तन भएउ। आदि ब्रह्म दूजा ठहरएउ।३७५।		सतनाम	
			तिर्गुनते नहिं है कोई पारा। आदि ब्रह्म गुन राम पियारा।३७६।			
सतनाम			सास्त्र वेद सभे कोई जाना। महामुनी तुम भर्म भुलाना।३७७।		सतनाम	
			साखी - ३८			
सतनाम			आदि अन्त गुन रहित है, सो गुन धरा शरीर।		सतनाम	
			सो बावन बलि जाचिया, दसरथ सुत रघुवीर॥			
			चौपाई			
सतनाम			भारद्वाज मुनि करहु बिचारा। बिन गुन किमि रचा संसारा।३७८।		सतनाम	
			उह गुन रहित तौ यह गुन कहवां। बिन गुन करता जइहो तहवां।३७९।			
सतनाम			प्रथमहिं तिन गुन जो कीन्हा। पीछे सृष्टि सकल रचि लिन्हा।३८०।		सतनाम	
			कहो निर्गुन गुन कहां से आई। बिनुगुन गमि यह किमि कर पाई।३८१।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जब ब्रह्म कहा तब गुन है नीका। यह गुन सकल कही तब जीका।३८२।	तहां से पांच पचीस जो आई। तहां से कांम क्रोध फैलाई।३८३।	तहां से पांच तत्तु यह चीन्हा। तहां से आतम सब रचि लीन्हा।३८४।	तीन राम का करहु बिचारा। प्रथमहिं आतम राम संवारा।३८५।	प्रसुराम दुजे यह कहई। तीजे तौं दसरय ग्रीह अहई।३८६।	चौथे ब्रह्म है पुर्ष पुराना। जाको जाप करहिं भगवाना।३८७।	
साखी - ३६						
बसीष्ट गुरु है राम को, ताही सुनायेव नाम।						
कवन पुर्ष वो जपत है, कीयो दूसरो धाम॥						
चौपाई (भारद्वाज वचन)						
सो करता ^१ गुरु काहे के किन्हा। उनहुं नर्क स्वर्ग भर्म भीन्हा।३८८।	ऐसन मोह भर्म भवो भारी। किमि नहिं ज्ञानहिं किन्ह बिचारी।३८९।	रामे बुझा दुजा करतारा। ईमि गुरु किन्ह मुक्ति के द्वारा।३९०।	यह सुनि मोहि भर्म अति भैउउ। करता राम कर्म में कहेउ।३९१।	सहस्त्र ^२ अठासी मुनि गुन ज्ञाता। कीनहु ना भर्म कहेव एह बाता।३९२।	सिव लहि कवन श्रीष्टि जग भारी। राम नाम गुन अर्थ बिचारी।३९३।	सदा सती वोए सिव संग रहेउ। ईमि करि मोह उन्हे तन भएउ।३९४।
आदि अन्त सिव कथा विचारी। आदि अन्त सब चरित्र सुधारी।३९५।	निर्गुन सर्गुन ईमि ब्रह्म जो कहेउ। तिर्गुन राम निर्गुन छबि छैयउ।३९६।	ईमि अमि कही अस्थित जो कीन्हा। राम नाम गुन प्रगट चीन्हा।३९७।	साखी - ४०			
आदि अन्त मुनि जक्त में, कहेउ सभनि मिलि ज्ञान।						
सो मुनि तुम्हे न तुलहीं, तुम हृदय सिन्धु समान॥						
चौपाई						
तुम मुनि निर्मल सिन्धु सरीरा। सोखेव सागर अगम गंभीरा।३९८।	जाको योद्र ^३ अन्त नहिं पाई। सो गुन काह कथे चतुराई।३९९।					
29						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

[illegible]

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - १०			
सतनाम			वोयल सन बंधा फिरिफिरि, बंधा रंधा ^१ काले सो करअं॥		सतनाम	
			आवत जात परे भव चक में, चौरासी में सो भरीअः॥			
सतनाम			सतगुरु निन्दहि बंदहिं जम के, जाल परासव इमि करीअं॥		सतनाम	
			पर सहु पदके दरपन दरसे, दया समेत गुन ईमि धरीअ॥			
			सोरठा - १०			
सतनाम			ज्ञान बिना जम लूट, मानुष जन्म अनूप है।		सतनाम	
			या तन जइहें छूट, फिरि पाछे पछताव भया॥			
			चौपाई			
सतनाम			जो जीव जग में है सब झारी। बांधि कर्म जम करे उजारी।४०८।		सतनाम	
			भारद्वाज मुनि तुम बड़ ज्ञाता। दिव्य दृष्टि ज्ञान मन राता।४०९।			
सतनाम			फिरेउ या जग सभे बिचारी। तब तुम्हारे पह पगु मय ढारी।४१०।		सतनाम	
			तुम हौ श्रेष्ठ सभे जग जाना। अति गुन महिमा वेद बखाना।४११।			
सतनाम			रामचन्द्र तुम्हो थौ दीन्हा। चरन छुर्द्र रज ^३ माथे लीन्हा।४१२।		सतनाम	
			सो जनि भर्म भूलहु जग आई। खोजहु सत्य पुरुष गुन गाई।४१३।			
सतनाम			सत्य ब्रह्म राम गुन दूजा। शिव समाधि आरति करि पूजा।४१४।		सतनाम	
			सो गुन ब्रह्मे बहुत बिचारी। चारि वेद महततु सुधारी।४१५।			
सतनाम			निर्गुन ^३ आदि है सर्गुन मुरारी ^४ । सोइ बिशम्भर ^५ है बिसुधारी।४१६।		सतनाम	
			नारद ^६ सारद आम्रित आमी। राम ब्रह्म कही अन्तर जामी।४१७।			
			साखी - ४२			
सतनाम			सो मम हृदय विचारि के, चरन धरेउ चित जानि।		सतनाम	
			आदि अन्त गुन वेद मथी, कहेउ विरंचि बखानि॥			
			चौपाई			
सतनाम			वोह है जोति पुरुष है सोई। ईमि करि चरित्र राखे सब गोई।४१८।		सतनाम	
			रहे गोप फिरि प्रगट सरीरा। वोए जग जोति जानु मति धीरा।४१९।			
सतनाम			वोए पाले फिरि प्रलै करई। वोए दे स्वर्ग नर्क ^७ फिरि भरई।४२०।		सतनाम	
			इन्द्रजाल जेउ सब मति फेरी। डारी जाल फिरि लेत सकोरी।४२१।			
सतनाम			31		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चाहे बुद्धि भरम दे डारी। चाहे जग जन लेत उबारी।४२२।	चाहे घौंचे चरख फीरावै। चाहे तौ अस्थीर गुन गावै।४२३।	आपही बाध सींघ है सोई। आपहिं बृखाब ^१ जड़जन वोई।४२४।	आपहिं गरुड़ ^२ आप असवारा। आपहिं लिए जक्त को भारा।४२५।	आपहिं मारे आपहिं खाई। आपहिं आत्म पोखो जाई।४२६।	आपहिं भक्त सिध जन जानी। आपन गुन ईमि करे बखानी।४२७।	
		साखी - ४३				
		यह कौतुक करता के, कहेव बीमल निजुज्ञान।				
		आदि अन्त गुन एक है, ब्रह्म दुजा नहिं आन।।				
		चौपाई				
जब है पुरुष नारी तब कीन्हा। नारी बिना जग कैसे चीन्हा।४२८।	नारी पुरुष तुम एक कहेऊ। ऐसन ज्ञान वेद नहिं लहेऊ।४२९।	आपुहिं चेत चरित्र सब कीन्हा। यह गुन मृथा ^३ भर्म कर चीन्हा।४३०।	नर्क स्वर्ग दुइ आपुहिं भरई। ऐसन गुन करता नहिं करई।४३१।	जो मारे सो काल है नीका।नेहिं दर्द संकल जग जीका।४३२।	आपुहिं मारे आपुहिं खाई। सो तौ कर्म है काल कसाई।४३३।	जड़ चेतन्य यह दुइ बिचारी। जड़ पाहन ^४ चेतनि चित्त न्यारी।४३४।
बिना ज्ञान खल बुड़े झारी। महा अगूढ भरम नहिं टारी।४३५।	इठ निग्रह करि काल समाना। माया बुद्धि नहिं मन पहचाना।४३६।	इन्द्रिय ज्ञान कर्म में अयऊ। सो सब भ्रम चेतनि नहिं रहेऊ।४३७।	अनुभव भव से कहिए नीका। संग्रह शक्ति से भय फीका।४३८।	ब्रह्म ज्ञान कथहिं ब्रह्म जानी। सो खंडित करी मर्म न जानी।४३९।		
		साखी - ४४				
		उग्र ज्ञान यह अग्र है, सुनि मुनि बचन बिचारि।				
		जब चेतनि चित चेतिये, होए ब्रह्म उजियार।।				
		चौपाई				
नीगम कहे नेति ^५ हम जानी। सो मगु सुफल सदा हम मानी।४४०।	जे मगु चलेउ महा मुनि जोगी। भक्त भेख औ गृह संजोगी।४४१।					
		32				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जे मगु कहेउ वशिष्ठ विचारो। कहेउ व्यास गुन ईमि अधिकारी।४४२।	सतनाम	शुक्राचार्य बृहस्पति कहेउ। सप्त ऋषि मुनि सो पद गहेउ।४४३।	सतनाम	प्रासर ऋषि ज्ञान गुरु ज्ञाता। अब सब कहेउ विविध मुनि बाता।४४४।	सतनाम
सतनाम	सृङ्गी ऋषि कर्म जोग पसारा। जोग सिद्धि गोरख उजियारा।४४५।	सतनाम	नवो नाथ चौरासी सिध्या। सो पथ धरेउ प्रेम रस नीध्या।४४६।	सतनाम	सो सम रहेउ ज्ञान गमी नीका। वेद उलंघन जानि हम फीका।४४७।	सतनाम
सतनाम	सो गुरु ब्रह्म परम गुरु ज्ञाता। जप तप संजम कहेउ बिधाता।४४८।	सतनाम	सग गुन कहेउ ज्ञान निरुआरी। ब्रह्म एक है दृष्टि पसारी।४४९।	सतनाम	साखी - ४५	सतनाम
सतनाम	आदि कहा सो अन्त है, ताकर करहु बिचार।	सतनाम	पाच तत्तु गुन तीन है, रमि रहा करतार॥	सतनाम	छन्दतोमर - ११	सतनाम
सतनाम	यह जानु रमीता रूप, कथि राम ब्रह्म स्वरूप॥	सतनाम	यह शिव शक्ति है सार, नहिं पुरुष इन्हते पार॥	सतनाम	यह ज्ञान दीपक वारि, कहि नेति नीगम झारि॥	सतनाम
सतनाम	कहि व्यास औ सुकदेव, इन्ह राम पद कहंसेउ॥	सतनाम	वसिष्ठ जग में जानि, लीन्ह ज्ञान गुरु को मानि॥	सतनाम	वालमीक उलटा राम, सब सिद्ध पुरो काम॥	सतनाम
सतनाम	बिरंचि शिव समेत, गुन सारदा कथि केत॥	सतनाम	अनंत नाम अधार, नहिं सेस पायो पार॥	सतनाम	सुकदेव ज्ञान स्वरूप, कथि राम नाम अनुप॥	सतनाम
सतनाम	जढ़ जनक जानेव ज्ञाना, कथि राम पद बिख्यान॥	सतनाम	गनेश गमि उजियार, दीवि द्रीष्टि जाके सार॥	सतनाम	यह दीन दिन मनि ^१ देव, निजु राम पद कहंसेव॥	सतनाम
सतनाम	सप्त ऋषि औ वहुयूर ^३ , कथि राम पद भरिपूर॥	सतनाम	यह संत जग में जेत, कथि राम पद निजु हेत॥	सतनाम	गुन कहत नाहिं वोरात, कवि कहेव केतनि बात॥	सतनाम
सतनाम	33	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दराच - ११			
सतनाम			निगम नेति विरंचि बिधाता, ज्ञानी ज्ञाता सो कहिंअ॥		सतनाम	
			जोग समाधी अगम अगाधी, चरनन्हि चित में सो लहिंअ॥			
सतनाम			मेरू ^१ मंडल ब्रह्ममंडे अखंडे ^२ , अखंडित ब्रह्म सदा रहिंअ॥		सतनाम	
			चर अचर ^३ सब संत असंते, अविगति लीला किमि कहिंअ॥			
सतनाम			सोरठा - ११		सतनाम	
			यह मुनि बचन बिचारी, जीव सिव माया सहि।			
सतनाम			परमात्म सकल संवारि, यह निर्गुन गुन रहित है॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			सिव सक्ति तुम कहा बिचारी। जहां लही जल थल जो बफुधारी।४५०।		सतनाम	
			सिव बीना सक्ति नहिं माने। सक्ति बीना को सिव बखाने।४५१।			
सतनाम			जीव सिव तुम ब्रह्म बखाना। मन है सिव सक्ति परधाना।४५२।		सतनाम	
			गुन बिनु कवन जो करे बखाना। निर्गुन से तब गुन पहचाना।४५३।			
सतनाम			बिनु गुन भौजल चले ना तरणी ^५ । उलटि नाव गुननते बरणी।४५४।		सतनाम	
			छोड़ि के गुन निर्गुन के आसा। गुन निर्गुन दुवो करो प्रगासा।४५५।			
सतनाम			यह गुन आदि केहु केहु जाना। यह गुन ब्रह्मा वेद बखाना।४५६।		सतनाम	
			मन प्रमेश्वर मन है रामा। मन आवे मन करु विश्रामा।४५७।			
सतनाम			मन इन्द्री कंद्रप गुन जानी। खट दरसन ^२ मन करे बखानी।४५८।		सतनाम	
			मन चंचल चतुर चित ऐसे। मन के साधि बने तन कैसे।४५९।			
सतनाम			मन की बुधि भर्म सब करई। चीन्हे बीना सरबस सब हरई।४६०।		सतनाम	
			साखी - ४६			
सतनाम			मन प्रमेश्वर जानि के, करहिं भजन मुनि संत।		सतनाम	
			बीना विवेक बिचार बिन, होत बीगुरुचनि अंत॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			अब मैं बचन बुझा तुम नीका। सर्व जोग मनि ज्ञान का टीका।४६१।			
सतनाम			भर्म जाल सब गएवो बीहाई। निज मन ज्ञान चेतनि होए आई।४६२।		सतनाम	
			जब लगी अपने आप न जाना। श्रवन ज्ञान सुनि हृदय न माना।४६३।			
सतनाम			माया ब्रह्म मैं चीन्ह बिचारी। यह जग माया ब्रह्म है न्यारी।४६४।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	34	सतनाम	सतनाम	सतनाम

मंजन^१ करि बाहर जब अभऊ। नर तन तेज शक्ति^२ तन भयऊ।४८५।
नंख सिख नीके निरखु निहारी। सुन्दर तन भव राजकुमारी।४८६।
देवस रैन निकट जल ताही। पूछे केवट कवनि तुम आही।४८७।
को तोर पुरुष का कर तुम नारी। चढ़ तरनी देउ पार उतारी।४८८।
मातु पिता कोई पति नहीं अहई। इमि करि बैन केवट से कहई।४८९।
कहे धीमर^३ धन भाग हमारा। कर गहि खैंचि भवन पगु ढारा।४९०।

साखी - ४६

तेजहु अचेत चेत करु, या गृह सैती संभारी ।
करहु भोजन सब भावकरी, हमहीं पुरुष तुम नारि ॥

छन्दतोमर - १२

दिन बीत बहुत बिचारि, जल लेन सुरसरी नारि॥
 जल बुडि मंजन कीन्ह, नर देइ सुन्दर लीन्ह॥
 नर निरखु नगरे आव, नहिं शक्ति को कछु भाव॥
 अड़बन्द बांधु संभारि, यह तिलक चर्चेउ चारू॥
 जनेउ नूतन कीन्ह, यह धोती पोथी लिन्ह॥
 ब्रह्मचर्य बहुत बिचारी, इमि पंथ में पगु डारि॥
 जहां मिले प्रेमी हित, मुनि भाव बहुत पुनीत॥
 फिरि गये गृह जहां नारि, इमि चरन लीन्ह पखारि॥
 फिरि सेज बैठ के दीन्ह, बहु भांति आदर कीन्ह॥
 नइवेद^४ कीन्हो थार, यह पांच धरि प्रकार॥
 फिरि भोजन मुख में दिन्ह, यह आत्मा सुख लीन्ह॥
 फिरि शयन दीन्ह बनाय, इमि चरन दाबेउ जाय॥
 फिरि बोली बैन बुझाय, दिन बहुत बीते आय॥
 हम ध्यान करते नित्य, यह जानि पछली प्रीति॥
 मुनि बोले बचन निराह, ईमि परेउ औघट घाट॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - १२			
सतनाम			कहत सकोचत ^१ पाप ना मोचत, सुर सरि कोजल ईमि कहिये॥		सतनाम	
			लहरितरंगा ईमि करि गंगा, तिरछन घर तहां बहिये॥			
सतनाम			भइ परतीता मया न जीता, चढ़ि चख मम किमि कहिये॥		सतनाम	
			पवन फिरंगा बहु बिधि रंगा, मन चंचल चित किमि लहिये॥			
			सोरठा - १२			
सतनाम			कुम्भज बोले बिचारि, तुम्हे मुनि माया बिधंसकरी।		सतनाम	
			बहु विधि बांधि डारि, सतगुरु ज्ञान सो बांचिये॥			
			चौपाई			
सतनाम			एक जन्म के यह फल लीन्हा। दूसर जन्म फिर आगे कीन्हा।४६१।		सतनाम	
			भरमत भरमत भर्मेउ जाई। फिरि निज देह मनुज कै पाई।४६२।			
सतनाम			बालक से तरुनापन भयऊ। भये पण्डित विद्या बहु भयऊ।४६३।		सतनाम	
			योग विराग बहुत लवलीना। नारद जग में बहु परमीना।४६४।			
सतनाम			कीन्हो जोग काम धरि मारी। यहि विधि तन में भया हंकारी ^२ ।४६५।		सतनाम	
			जहां जाहिं तहां सादर करई। बहुत प्रेम मोद मन भरई।४६६।			
सतनाम			नृप लेहिं दिक्षा गुरु कै मानहिं। बहुत शिष्य प्रसिद्ध बखानहिं।४६७।		सतनाम	
			यहि प्रकार फिरहिं सब देश। मागहिं दिक्षा देहि उपदेशा।४६८।			
सतनाम			सनकादिक से भेट जो भयऊ। भयो निजु प्रेम बचन तब कहेऊ।४६९।		सतनाम	
			मैं तौ कंदर्प ^३ जारेउ नीका। त्रिया बचन मोही लागत फीका।५००।			
सतनाम			शक्ति भाव मोहिं कछु नहिं भावै। नित्य नइ प्रेम भक्ति चित आवै।५०१।		सतनाम	
			साखी - ५०			
सतनाम			सनकादिक बोले बिचारि, तुम सदा सिद्ध प्रमीन।		सतनाम	
			जहां तहां बचन न भाखियो, ज्ञान रहौ लवलीन॥			
			चौपाई			
सतनाम			अस उमड़े फिरि कहा ना माना। जहां तहां करहिं यहि बिख्याना।५०२।		सतनाम	
			शिव शक्ति जहां बैठे जोरी। कीन्ह प्रणम बिनै बहु मोरी।५०३।			
सतनाम			चर्चा कीन्ह ज्ञान जब भयऊ। जोग समाधि साधु मत भयऊ।५०४।		सतनाम	
			उलटि पवन हम साधेव जोगा। नारी पुरुष कै त्यागेउ भोगा।५०५।			
सतनाम			37		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कंदर्प	हमसे	दावन	पयऊ।	बैठे	हारि	पिठि दे गयऊ।५०६।
शिव	बूझा	यह	अन्तर्यामी।	भये	हंकार	गर्व अतिगामी।५०७।
तुम	जीता	सब	जोग प्रचारी।	मन	माया का	करे तुम्हारी।५०८।
आदि	सिद्ध	तुम	गज परधाना।	सुर	नर मुनि	कोई मर्म न जाना।५०९।
अब	भयो	गर्व	बहुत तन राता।	निज	मुख शिव	कीन्ह विख्याता।५१०।
ब्रह्म	सपूरन	सब	विधि नीकां।	सर्व	जोग मणि	ज्ञान का टीका।५११।
साखी - ५१						
शिव कहा जग विदित हौ, बिमल विरोग अचित।						
तुमसे कोई न जीति हैं, जोग न होय अनीत।।						
चौपाई						
फिरि	रमे	जक्त	में चले	बिचारी।	शिव के	कहे गर्व भयो भारी।५१२।
मिले	विष्णु	प्रदक्षिन	कीन्हा।	नारद	भक्ति प्रेम	रस भीना।५१३।
कहे	विष्णु	तुम	सब गुन	लायक।	सिद्ध पुराण	सभे मति शायक।५१४।
जे	नहिं	चेत	चेतावन	दीन्हा।	तुम गुन	महिमा केहु केहु चीन्हा।५१५।
सुर	नर मुनि	सब	करे	बखाना।	सारद शिव	भेद तुम जाना।५१६।
जोगी	जग में	जो	कोई	अहई।	तुम गुन	भेद कोई नहिं लहई।५१७।
निगम	नेति	निषेद	बिचारी।	तुले	न तुम्हें	कोई ब्रह्मचारी।५१८।
तुम	सिद्ध	सुद्ध	विमल	पद लहेऊ।	तुम प्रसीध	ज्ञान इमी कहेऊ।५१९।
नारद	भक्ति	नर	करही	बखानी।	नवधा भक्ति	सतन पहचानी।५२०।
सब	विधि	विष्णु	कहा	निजु	हीता।	तुम गुन गामी ब्रह्म पुनीता।५२१।
साखी - ५२						
तुम मम भक्त जक्त में, जानत सकल जहान।						
ज्यों पुरइनी जल लेप नहिं, इमि दृष्टान्त अमान।।						
चौपाई						
नारद	बोले	गर्व	अतिगामी।	मनअनंग	जीता	मम स्वामी।५२२।
अजपा	मंत्र	जाप	मैं	कीन्हा।	दहेवो	काम धरि कियो मलीना।५२३।
माया	मन	की	संधी	ना आवै।	बहु प्रकार	कटक ^४ जो धावै।५२४।
अनंत	फंद ^५	जों	बहु	विधि	करई।	कईसो आए निकट होए लरई।५२५।
38						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जौं छवि सुन्दर बहु चतुराई। नैन बान करि दाव न पाई।५२६।	दहेवो सो सब मुनि कोई ना बाचा। कामिनी काल सभे घट नाचा।५२७।	नारद के मन कारन भएउं सक्ति भाव इमि तन में छएउ।५२८।	आदि जोति जग महिमा कीन्हा। अगम है चरित्र केहु गति चीन्हा।५२९।	इन्द्रजाल एक सहर बनाया। राजा सैल निधि तहां सोहाया।५३०।	झुठि हाट जो बाट बसाया। झुठि माया कंचन छबि छाया।५३१।	मिथ्या नारी पुर्ष बहु बानी। मिथ्या कलोल कोताहल ठानी।५३२।
साखी - ५३	मीर्था महल सरूप करी, राजा रानी कीन्ह।	रचेवो कुमारी कोमल एक, कन्या भेद ना चीन्ह॥	चौपाई	इमि करि पेखना पुतरी धावै। घैंचे कल सब नाच देखावै।५३३।	जो पैठे सो रहे लोभाई। शहर से बहुरि निकलि नहिं जाई।५३४।	रचा सुअंमर सब नृप सुना। केहु ना चीन्हा पाप अव पुना।५३५।
नारद देखा नग्र जब आई। जो मति रहि सो गई भुलाई।५३६।	देखहिं बहु विधि नग्र सोहावन। अमृत तेजि चाहहिं विषि पावन।५३७।	नृप आए बहु सादर कीन्हा। लीन्ह लीआमहलपगु दीन्हा।५३८।	यह कन्या मम राज कुमारी। इनकर लक्षन कहो बिचारी।५३९।	देखा बदन नयन कर नीका। अतिछवि सुन्दरि मनिजनु टीका।५४०।	अति सुल क्षनि सब गुन नीका। अवरि बांम धांम जग फीका।५४१।	सुन्दर बरबरिहें एहि आई। एहि जग समर जीते नहिं पाई।५४२।
साखी - ५४	कछु प्रगट कछु गोपकरी, कहा वचन समुझाय।	कन्या कनक उरेहिया, मिले सुन्दरबर आय॥	छन्दतोमर - १३	यह सक्ति सोभा रूप, छवि देखि अजव अनूप।	यह चिखुर ^२ झीन सोहाय, मनि भाल झलके आय॥	
39						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

यह नयन बांके बान, हरि लीन्ह मुनि को ज्ञान ॥
 यह नासिका जनु कीर^१, सुगंध बहत समीर^२ ॥
 यह श्रवन उड़िगन भाव, मनि जोति सोभा पाव ॥
 यह दसन दारीम^३ बीज, निजु रसन^४ प्रेमहिं पीज ॥
 यह अधर मन मुसुकाय, रति^५ सोभा सब गुन पाय ॥
 यह कंठ सुन्दर सोहाये, कुँच कंचन कलसा पाय ॥
 यह भुजा जनु मृग नाल, नख दसो लागे लाल ॥
 कटि^६ केहरी को अंग, जंघ केदली^७ खंभरंग ॥
 गज गामिनि को चाल, मन देखि बहुत नीहाल ॥
 जराव चीर सुभ अंग, सब कला कौतुक संग ॥
 फुल माला कर में लीन्ह, नृप देखि बहुत अधीन ॥
 जब चले जेहि दीस ढारि, यह काम बाने मारि ॥
 सब ललचि उठे धाये, किमि फुल माला पाये ॥

छन्दनराच - १३

चीत्र विचीत्र तहां चीत चुभेव, चहुंदीस झलकि पलकी आवै ॥
 सक्ति को भाव माया छवि छाव, छकित भए मुनि कब पावै ॥
 बहे समीरा लाग शरीरा, तट खोलि कपाट^{१०} चीराग बुतावै ॥
 सौ मति भर्मा रहा ना धर्मा, काम कला मति फेरि बनावै ॥

सारेठा - १३

विकल भए मुनि काम, जहां विष्णु तहां जाइये ॥
 सुन्दरि सोभा बांम, बड़े भाग सो पाइये ॥

चौपाई

बहु त्रीछन तहां चलि गएउ। बीचहिं भेंट विष्णु से भएउ। ५४३।
 होए सुभ काम सुदिन भलपैउ। बिन प्रयास निकट चलिअैउ। ५४४।
 कीन्ह प्रनाम दुनो कर जोरी। महाराज सुनु बिनती मोरी। ५४५।
 एक सुन्दर ग्राम ताहां चलि गएउ। अजव अनूठा किमि कर कहेउ। ५४६।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	नृप तहां एक बसे सुधर्मी। तेहि गृह कन्या है कुलकर्मी।५४७।	सतनाम	रचा स्वयम्बर कर जय माला। जेहि गृव मिले सो होय निहाला।५४८।	सतनाम	मनसा मन हम व्याह विचारी। सुन्दर तन मम देहु संवारी।५४९।	सतनाम
सतनाम	सुन्दर देह दीन्ह मुँह वे शोभा। कन्या देखि हिये लागु न लोभा।५५०।	सतनाम	जहां स्वयम्बर तहां चलि गयऊ। कन्या देखि देखि मगन मन भयऊ।५५१।	सतनाम	शिव दुइ गन जो दीन्ह पठाई। नारद कौतुक देखाहु जाई।५५२।	सतनाम
सतनाम	साखी - ५५					सतनाम
सतनाम	माया जक्त में जोर है, अचरज जानु न कोय।					सतनाम
सतनाम	विष्णु सकल तन व्यापिया, चलेउ वियाहन सोय॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	आदि जोति जग इमि जहड़ाई। ब्रह्मा विष्णुहिं नाच नचाई।५५३।	सतनाम	कन्या उलटि बहुरि फिरि आई। नारद उठि बदन देखाई।५५४।	सतनाम	सुन्दर तन मुँह मरकट ^३ कीन्हा। बाजीगर ^४ नचावन लीन्हा।५५५।	सतनाम
सतनाम	जेहि दिश नारदबहुरि ना आवै। उस्स-उस्स ^५ मुनि अगुमन जावै।५५६।	सतनाम	हँसे दुवो गन कौतुक ^६ देखा। दीन्हा श्राप यह लेहु विशेषा।५५७।	सतनाम	मुनि प्रतिमा जौ देखहु जाई। तब निश्चय तू मन पति आई।५५८।	सतनाम
सतनाम	देखा प्रतिमा ^७ क्रोध जो भयऊ। लघु बहु बचन विष्णु के कहऊ।५५९।	सतनाम	वेगि विष्णु तहाँ पहुँचे आई। मेलिसि माला विवाह कराई।५६०।	सतनाम	लीन्ह लिआये चरित्र न जाना। भये जुगल तब पहुँच ठेकाना।५६१।	सतनाम
सतनाम	नारद पहुँच विष्णु जुग बन्धा। कीन्ह उपद्रव कामते अन्धा।५६२।	सतनाम	आप के सुख तुम देखि न पाई। छल तुम करो सदा चतुराई।५६३।	सतनाम	साखी	
सतनाम	नारद चित महं चेति के, चंचल मन भयो थीर।					सतनाम
सतनाम	भला भया हम बांचिया, यह कन्या भयो भीर॥ ५६॥					सतनाम
सतनाम	41	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	कीन्हो कष्ट सुघट ^१ परि गयऊ। कीन्हों अनविधिबिधि सबभयऊ।५६४।	सतनाम	तुम मम भक्त ^२ सदा हितकारी। इमि कारन मम लीन्ह उबारी।५६५।	सतनाम	धरा चरन बहु विनय बिचारी। दया करहु मम बहुत बिगारी।५६६।	सतनाम
सतनाम	नारद सम हित दूजा ना कोई। हृदय प्रेम सदा मम होई।५६७।	सतनाम	चलो गई कन्या नग्र नहि रहेऊ। नारद विष्णु ज्ञान मत ठयऊ।५६८।	सतनाम	प्रबल माया ^३ इमि मर्म ना जाना। यहां आय फिरि गये ठेकाना।५६९।	सतनाम
सतनाम	इन्द्र जाल ^४ इमि सभै नचावै। झूठ कला करि सांच देखावै।५७०।	सतनाम	मोह भर्म भव ^५ सागर पानी। सो कल फेरत मर्म ना जानी।५७१।	सतनाम	होय ज्ञान तब गुन धरि खींचे। बिन गुन ग्यान पराभव नीचे।५७२।	सतनाम
सतनाम	अगम अथाह अगोचर ^६ गयऊ। टुटि गयो गुन पीछे पछतयऊ।५७३।	सतनाम	साखी - ५७	सतनाम	कुम्भज बचन बिचारिके, सुनो सकल मुनिज्ञान।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	मनबाजी जग जीतिया, कोई उबरे संत सुजान।।	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	बहु विधि वेदहि सब मिलि गयऊ। महा महासिन्ह मत एहि ठयऊ।५७४।	सतनाम	बिना ज्ञान सब जग बौराना। जिन्हि नहिं सतगुरु पद पहिचाना।५७५।	सतनाम	स्वर्ग नर्क की डर नहि डरई। तन छूटे भवसागर ^७ परई।५७६।	सतनाम
सतनाम	कहि कवि इमि बैकुण्ठ बखाना। वे बैकुण्ठ की मर्म ना जाना।५७७।	सतनाम	कथनी कथि कथि बहु चतुराई। चोर चतुर कहीं ठवर न पाई।५७८।	सतनाम	ब्रह्मलोक सब कहैं बखानी। तेहि ब्रह्मा के किमि भई हानी।५७९।	सतनाम
सतनाम	सिवलोक सिव अस्थाना। तहाँ काल फिरि करे पयाना।५८०।	सतनाम	इन्द्र लोक इन्द्र वे रहऊ। सहस्त्र भगु उन्हि सहजे पयऊ।५८१।	सतनाम	मन माया के इहे बखोरा। चढ़ि चर्खा ^८ नहि होय निमेरा।५८२।	सतनाम
सतनाम	हरि हर भक्ति करे सब कोई। मन परचे बिनु जात बिगोई ^९ ।५८३।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	42	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

साखी - ५८

मन प्रचे नहिं पाइया, बहु विधि कहे बनाय।

चोर साहू चीन्हे नहिं, सरबस मूसे^१ जाय॥

छन्दतोमर - १४

इमि मेरु^२ डंड संभारि, ले डगर डोरी सुधारि॥

इमि अरध उरध खंभ, जिमि प्रथम^३ कीजे॥

भरी भवंर गोफा^४ घाट, इमि उलटि चीन्हे बाट^५॥

चहि चित चकमक झारि, तहां निर्मल बातो बारि॥

तहां गंगा जमुना नीर, तट तिर्कुटी के तीर॥

तहां सरस्वती^६ सुभधार, इमि पियत प्रेम उदार^७॥

तहां गंगन गरजु गंभार, चहुं छटा^८ बखत नीर॥

तहां परत बूंद अघात, इमि उलटि जिमि तेजात॥

तहां झींगुर की झनकार, इमि झींझी जंत्र अपार॥

तहां सुन सिखरा जाय, तब तान तार बजाय॥

निसि देवस बाजन तूर, कोई संत पहुंचे सूर॥

दिव्य दृष्टि धाजा सेत, सब भर्म होत-निकेत॥

वह ब्रह्म पुरुष पुरान, इमि ज्ञान गुन पहचान॥

निरा लेप निरगुन नाम, निजु बैठ अमरा धाम॥

गुन ज्ञान सतगुरु संत, इमि मिला सब का अन्त॥

मम जोग जागेव जाये, सब अगम गमि इमि पाये॥

छन्दनराच - १४

ज्ञान निखेदा सब कहि भेदा, भर्म छुटा भव किमि परिअं॥

पाप ना पुन्य वेद बिहूना, निरगुन गुन सो धरिअ॥

अजर जरे नहिं झलकत निस दिन, पलकहिं अजपा सो कहिअं॥

सुनु संत स्त्रोता कथै निरोता, निरखि परखि पद इमि लहिअं॥

सोरठा - १४

कुम्भज बचन बिचारि, भए बिछछन ज्ञान में।

कर्म भर्म सब जारि, जरा मरन ते रहित भयो॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	शिव कहा सुन बचन भवानी। कीन्हों चरित्र विश्नु सब जानी।५८४।	सतनाम	माया प्रबल केहु अन्त न पयउ। यह सब चरित्र विश्नु से भयउ।५८५।	सतनाम	डारि जाल फेरि लेत सकोरी। ताकत तनिक नयन की कोरी।५८६।	सतनाम
सतनाम	नारद उलटि भर्म तन भयउ। कन्या देखिकदर्प तन ^१ अयउ।५८७।	सतनाम	रघुवर जब जस करे उपाई। जढ़ ^२ चेतन करि लेत बचाई।५८८।	सतनाम	चाहे ज्ञान भर्म करि डारे। कल घौंचि फिर आप संभारे।५८९।	सतनाम
सतनाम	नारद विश्नु परम हितकारी। दया किन्ह तब लीन्ह उबारी।५९०।	सतनाम	तोरेव गर्व ज्ञान कई दीन्हा। हरि पद प्रेम कियो लौ लीना।५९१।	सतनाम	भक्त विश्नु कछु अन्तर नाहीं। ज्यों जल कमल ^३ सदा सुखआहीं।५९२।	सतनाम
सतनाम	जैसे मधुकर ^४ धानि लेभाना। दुबो परस्पर प्रेम समाना।५९३।	सतनाम	साखी - ५९	सतनाम	इमि करि संत जक्त में, हरि पद करु अनुराग।	सतनाम
सतनाम	दया समेत दरसत रहे, परसि चरन चित लाग॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	बोली सती सुनो शिव स्वामी। तुम त्रिभुवन गति अन्तर जामी।५९४।	सतनाम
सतनाम	त्रिय करता यह जग में अहई। ब्रह्मा विश्नु महेश्वर कहई।५९५।	सतनाम	करता एक की तीन कहावै। यह अचरज कछु कहत न आवै।५९६।	सतनाम	जेहि दिन तीन देव नहिं रहेउ। तेहि दिन चरित्र कवन यह भाएउ।५९७।	सतनाम
सतनाम	तब सब चरित्र रचा यह आनी। तीन देव केहु मरम ना जानी।५९८।	सतनाम	जादिन पुरुष अकेला रहई। तादिन सक्ति ^५ संग नहिं कहई।५९९।	सतनाम	रहे वह निरंजन अंजन नाहीं। सेवक सदा पुरुष के पाहीं।६००।	सतनाम
सतनाम	रचेव कन्या एक बहु विधि नीका। अति छबि सुन्दर मनिजगटीका।६०१।	सतनाम	देखि निरंजन रहेव लोभाई। सक्ति संग सुख बेल सेव जाई।६०२।	सतनाम	तबहीं तीन देव जो भाएउ। रजगुन तंमगुन सतगुन कहेउ।६०३।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	44	सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ६०			
सतनाम			मथन करो समुंद्र के, जग जननी कहि दीन।		सतनाम	
			पाये रतन जतन करो, इमि मम होय न भीन॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			मथेव समुंदर जबहीं जाई। तीन वस्तु तब निकली आई।६०४।		सतनाम	
			तेज वेद विधि तिनु पाई। तीन भाग तब लीन्ह लगाई।६०५।			
सतनाम			वेद आप ब्रह्मा ने लीन्हा। तेज लेश बिश्र कह दीन्हा।६०६।		सतनाम	
			शंकर विधि तब लीन्हों आई। तीनों जने एक मत ठहराई।६०७।			
सतनाम			चलल चलल माता पहं अयउ। तेमते तिनि भेखा ^१ बनयउ।६०८।		सतनाम	
			तीनो जना के काम मतएऊ। तेज तेज विधि संयम किएऊ।६०९।			
सतनाम			तीनों कन्या तीन्हूँ कहं दीन्हा। भए मगन मन सो लवलीना।६१०।		सतनाम	
			ब्रह्मा संग सावित्री रहेउ। विश्र के संग लक्ष्मी भएउ।६११।			
सतनाम			शंकर के संग देवी लहेउ। जोग भो सभ सग्रह किएउ।६१२।		सतनाम	
			तेहि पीछे श्रीष्टि जो ठयउ। अंडज तौं माता से भयउ।६१३।			
सतनाम			पिंडज ब्रह्मे लीन्ह बनाई। उखामज सब विष्णु ते आई।६१४।		सतनाम	
			अनचर शंकर लीन्ह पसारा। त्रिव देवा तिनि कीन्ह बिस्तारा।६१५।			
सतनाम			साखी - ६१		सतनाम	
			चारि खानि बानी जक्त में, यह सब रचना कीन्ह॥			
सतनाम			जीन्हि पुर्ष जग जननी रचिया, ताको भेद न चीन्हा॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			मैं जानों तेहि दिन के करमा। नहिं होते तब हरिहर ब्रह्म।६१६।		सतनाम	
			तिनहिं चरित्र किया बिस्तारा ^२ । तीन लोक भ्रम जाल पसारा।६१७।			
सतनाम			तामे या जग रहा लोभाई। बिरला उलंधि पार होइ जाई।६१८।		सतनाम	
			विश्न बसे कैसे भई माया। जिन्हि ने आदि मर्म नहिं पाया।६१९।			
सतनाम			ब्रह्मे वेद जो कीन्ह बखाना। आदि पुर्ष ^३ की मरम ना जाना।६२०।		सतनाम	
			तुमके मैं अब किमि कर कहेउ। सक्ति संग सदा सुख लहेउ।६२१।			
सतनाम			45		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतगुरु जानहिं ज्ञान सनीपा । सो नहिं जग में होहिं अनीपा । ६२२ ।
अरुझे जक्त जाल बड़ झीना । इमि कर निकलि सके नहिं मीना । ६२३ ।
रेशम डोरी शक्ति झुलावे । तीन लोक में मचवा लावे । ६२४ ।
झूले सुर नर मुनि सब आई । गन गंधर्प^१ सब रहे लोभाई । ६२५ ।

साखी - ६२

लोभे सभे जक्त में, निरफल गया न कोय ।
नारी नयन सर लागिया, बह गुन कहां विलोय^२ ॥

छन्दतोमर - १५

वे आदि ब्रह्म सरूप, वे अजर अवगति रूप॥
वे तिर्गुन तेहै पार, नहिं देव दशरथ वार॥
वे अजर अङ ना भंग, नहिं सक्ति शारदा संग॥
नहि सैन साजेव घर^३, नहिं बांधि सागर ^४ पार॥
नहिं खर्ग^५ लीन्हो हाथ, नहिं काटी रावन माथ॥
नहिं हार जीत न सोग, नहिं नारि पुर्ष ना भोग॥
नहिं मच्छ कच्छ ना बराह, नहिं राधे रुक्मिनी नाह॥
नहिं निकलंकी धरिया देह, नहि त्रिगुन तन है खेह॥
यह दया सिन्धु उदार, नहिं जांचू बलि के द्वार॥
नहिं धरेव दस अवतार, नहि जन्म बारम्बार॥
यह तीन लोक जम जाल, यह चीन्हहु करता काल॥
विरंचि वेद विचारि, तुम देव तिनि त्रिपुरारि॥
नहिं पायेव अविगति अन्त, तब धरेव नाम अनन्त॥
जन जानि सुमिरहिं राम, नहिं अचल अमरा घाम॥
फिरि पार जाबहिं वार, जिमि रहट धरिया ढार^६॥

छन्दनराच - १५

बिना बिचारे भव जल पारे, बारे बारे सो रहिअं ॥
भव भर्म भीरा धरे सरीरा, निरमोलिक बिनु किमि कहिअं ॥
नर्क उधारा सतगुरु प्यारा, पारब्रह्म गुन इमि लहिअं ॥
छुटा भर्म भटका भव नहिं अटका, काटेव दुर्मति गुन गहिअं ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सारेठा - १५			
सतनाम			कहे सक्ति सुनो शिव, माया सकल जग व्यापिया।		सतनाम	
			इमि भव अटके जीव, करता खेय उतारहीं॥			
			चौपाई			
सतनाम			हंसि के शिव बोले प्रिय बानी। तुम गुन ग्यान सदा हम जानी।६२६।		सतनाम	
			हमरे संग तू सदा भवानी। इमि करि चरित्र हमहूँ नहिं जानी।६२७।			
सतनाम			बहु परपंच जानि तुम कीन्हा। हमके नाच नचावन लीन्हा।६२८।		सतनाम	
			सांवर विद्या कंठ उचारी। तीन लोक महं टोना डारी।६२९।			
सतनाम			हमरे साथ सदा लव लीना। तीन लोक ठगौरी ^१ कीना।६३०।		सतनाम	
			आदि अन्त तुम सब कछु चीन्हा। तुम जग में हे विदित प्रमीना।६३१।			
सतनाम			जब हम कहेव राम गुन नीका। तब तुम कहेव तिर्गुन है फीका।६३२।		सतनाम	
			जब हम कहा सकल गुन गामी। तब तुम कहा मोह का धामी।६३३।			
सतनाम			अचुतानंद ब्रह्म हम कहेउ। सक्ति संग कंदर्प तन रहेउ।६३४।		सतनाम	
			निर्गुन ब्रह्म सर्गुन हम कहई। तब तुम कहा तिर्गुन में बहई।६३५।			
			साखी - ६३			
सतनाम			हम जाना तुम्हे मोह भयो, तुम कहं ग्यान चैतन्य।		सतनाम	
			माया ब्रह्म विवेक करी, कहा ग्यान तुम धन्य॥			
			चौपाई			
सतनाम			कई कल्प में काल ^२ जो भउऊ। तब तब जन्म शक्ति कर पयऊ।६३६।		सतनाम	
			भयो अस मरन जन्म तुम जाना। शिव के पूजा कीन्ह मन माना।६३७।			
सतनाम			शिव बर छोड़ि दूजा नहिं बरेउ। यह जिव जानि तपस्या करेउ।६३८।		सतनाम	
			मातु पिता सब कहेउ अनीता। सो सब बचन जानि तुम जीता।६३९।			
सतनाम			नारद बहु विधि तुम्हें बुझायेउ। विंश ब्याह निज धाम बनायेउ।६४०।		सतनाम	
			विंशु के संग सदा सुख खानी। तीन लोक में होइ हो रानी।६४१।			
सतनाम			बाउर बर प्रीत तुम ठानी। अति दुख दारुन ^३ कहा न मानी।६४२।		सतनाम	
			हम से शिव से सदा है कामा। बाउर बर मिला निज धामा।६४३।			
सतनाम			हम जाना ओए त्रिभुवन ग्याता। तेजि परिपंच कहे का बाता।६४४।		सतनाम	
			मम शिव संग सदा सुख खानी। इमिकर बचन जो बोली भवानी।६४५।			
सतनाम			47		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ६४			
सतनाम			ऐगुन सब शिव संग है, मम गुन कहा प्रसंग।		सतनाम	
			रमि रहा मन ताहि सो, कहां दूसरो संग॥			
			चौपाई			
सतनाम			भली बचन तुम कहेव भवानी, पुर्ष ग्यान गमि हमहूँ जानी।६४६।		सतनाम	
			चीन्हें माया ब्रह्म है भीना। तीन लोक जिन्ह अविगति कीन्हा।६४७।			
सतनाम			चौथा लोक अमर अस्थाना। तीन लोकमहं काल पयाना।६४८।		सतनाम	
			सब की पतन अमर केहि कहेउ। तीन लोक मह प्रलय ^१ भयेउ।६४९।			
सतनाम			जब हम कहेव आदि गुन नीका। सब मुनि कहेव बचन है फीका।६५०।		सतनाम	
			जोगी जती यहि मत कहेऊ। राम नाम गुन इमि करि गयेऊ।६५१।			
सतनाम			राम कहा जब नाम न जानी। यह गुन रहित तिर्गुन कह मानी।६५२।		सतनाम	
			जब नहिं चेतनि ब्रह्म चित ठैऊ। तिनि लोक यह किमि करि भैऊ।६५३।			
सतनाम			जब है गुन त्रिगुन गुन कहऊ। आदि ब्रह्म से निर्गुन अयऊ।६५४।		सतनाम	
			यह घटपैठि ब्रह्म तब भयऊ। घट ^२ फूटे फेरि सो मिलि गयऊ।६५५।			
			साखी - ६५			
सतनाम			आवे जाय जग बिदित है, फिरि तिर्गुन खपि जाय।		सतनाम	
			आदि ब्रह्म परिचय बिना, सो प्रलय तर आय॥			
			चौपाई			
सतनाम			कर जोरि बिनय कीन्ह सिर नाई। धन्य स्वमी मम बचन सुनाई।६५६।		सतनाम	
			आदि अनादि ब्रह्म तुम कहेऊ। एहि निर्गुन में सब गुन लहेऊ।६५७।			
सतनाम			सिंधु समान ज्ञान जेहि भयऊ। लाल रतन ^३ मनि तामे रहऊ।६५८।		सतनाम	
			तुम समान जग काहु न देखेउ। मम स्वामी निज बचन सुलेखेउ।६५९।			
सतनाम			तुम त्रिभुवन तिहुं लोक बखाना। मम दासी तुम प्रेम समाना।६६०।		सतनाम	
			तुम पिया प्रेम सदा गुन नीका। हृदय चरन मनि मस्तक टीका।६६१।			
सतनाम			तुम दया सिंधु हो मैं तुम दासी। तुम गुन प्रेम मैं सदा उपासी।६६२।		सतनाम	
			ऐगुन त्रिया तुम्हे गुन नीका। मल सब हरेव रहेव नहिं जीका।६६३।			
सतनाम			हो पति तुमहीं अवरि पति नाहीं। जन्म जन्म पकरेव मम बाहीं।६६४।		सतनाम	
			हम तुम जुगल सदा जग रहऊ। तन छूटे फिरि सो पद गहऊ।६६५।			
			48			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

साखी - ६६

तुम शिव मैं शक्ति हौ, सदा हौं कर जोरि।
दया सदा चित राखिये, विनय बचन सुनु मोरि॥

छन्दतोमर - १६

मम चरन तुम लौलीन, इमि शक्ति शिव न भीन॥
जिमि जीव शिव के साथ, इमि शक्ति तोहरे हाथ॥
ज्यों चरनदासी दास, प्रतिपालु अपने पास॥
जनि ऐब खोजु सरीर, शिव सदा सिन्धु गंभीर॥
जैसे बारि^१ बारिज^२ संग, मधु घ्रानि मधु कर^३ रंग॥
जग और पुहुप बिकार, तुह चरन पदुम अंकार॥
पपिहा^४ पिया सो प्रीति, जल त्यागि और अनीति^५॥
चकोर चंदहिं लीन्ह, दृष्टि और काहू न दीन्ह॥
एक पक्ष पंक्षी कीन्ह, जोरफा जग में लीन्ह॥
दुवो जुगल चले बिचार, नहिं छुटि जिमि पगु ढार॥
जल मीन बिछुरि बतावे, फिरि बहुरि जल मे आवे॥
मम जुगल फुटि गौ अंग, तब जन्म हम तुम संग॥
बर बरेव तुम को जानि, सब शम्भु सुखहिं बखानि॥
मेरो प्रान पति कल्यान, तुम ब्रह्म देव सुजान॥
विष खाये अमृत कीन्ह, सर्वज्ञ सब गुन भीन॥

छन्दनराच - १६

तुम जग नागर सभै उजागर, आगर बुद्धि को किमि कहिये॥
मैं बुद्धि बामा सब सुख धामा, धन्य सोई पद इमि लहिये॥
मैं सक्ति स्वरूपा तुम शिव भूपा, परसि परसि गुन सो गहिये॥
मम दासी तुम चरन उपासी, संशय तन की सब धोइये॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - १६			
सतनाम			धन तुम त्रिभुवन नाथ, विषि अमृत करि जानिये।		सतनाम	
			तुहीं गुन समुझि सनाथ, गुन ऐगुन न बिचारिये॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			हठ निग्रह कुम्मज जो कीन्हा। सब गुण ज्ञान योग कंह चीन्हा।६६६।			
सतनाम			निरंजन श्रवन सुनि तब अयऊ। चले तुरंत दरस तब दियऊ।६६७।		सतनाम	
			का हठ निग्रह कीन्हों संता। बोलि बचन तब कहा तुरंता।६६८।			
सतनाम			जो बर मांगहु देऊ मगाई। देऊं तिलक जग राज थपाई।६६९।		सतनाम	
			इमि देऊं बैकुंठ अमर कै डारो। भवसागर सब संशय बिसारो।६७०।			
सतनाम			कहो न सांच कवन पद नीका। संशय सकल निकालो जीका।६७१।		सतनाम	
			जो मंगहु सो देऊं मंगाई। धन लक्ष्मी ^२ गुन मम प्रभुताई।६७२।			
सतनाम			तीन लोक महि ^३ मंडल हमहीं। जो मांगहु सो देऊं मैं अबहीं।६७३।		सतनाम	
			जो संतन्हि यह निज पद गायऊ। ताहि लेइ बैकुंठ पठयऊ।६७४।			
सतनाम			केवल भक्ति कर्म नहिं जाना। सो जग जानि बिदित परधाना।६७५।		सतनाम	
			साखी - ६७			
सतनाम			तीन लोक हमें जानियां, मुनि पंडित गुन ज्ञान।		सतनाम	
			बोलहु बिबेक बिचारि कै, तुम का कर धरिया ध्यान॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			सो बैकुंठ मेरो है जाना। सो बर का मांगो भगवाना ^४ ।६७६।			
सतनाम			ब्रह्म लोक मैं कीन्ह पयाना। सर्व लोक मैं दृष्टि ^५ में जाना।६७७।		सतनाम	
			राज काज मद कछु नहिं चहेऊ। स्वर्ग नर्क की शंसय न धरेऊ।६७८।			
सतनाम			भव की शंसय न व्यापेव आई। सर्व जोग ज्ञान पद पाई।६७९।		सतनाम	
			एक शंसय मोहि व्यापेव आई। तिर्गुन पार ब्रह्म ठहराई।६८०।			
सतनाम			अदोइत ब्रह्म धन दया सरूपा। जीव सिव जग बहु विधि भूपा।६८१।		सतनाम	
			वह अचलानंद ^६ ब्रह्म गुन ज्ञाता। सब विधि पूरन प्रेम सुषाता।६८२।			
सतनाम			अखंडित ^७ ब्रह्म भौ कबहीं न भर्मा। यह खंडित तन पाप है धर्मा।६८३।		सतनाम	
			50			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	वै अचलानंद अचिंत अमाना। पर चिन्ता चित चेतनि जाना।६८४।	सतनाम	परमात्म परब्रह्म अनूपा। यह आत्म जग सृष्टि सरूपा।६८५।	सतनाम	साखी - ६८	सतनाम
सतनाम	जीव सकल जग जानिये, जो जन्मे जग आय।	सतनाम	कहीं हीरा कहीं सीप है, कहीं संख मोती मनिपाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	मैं निर्गुन हों सर्गुन समाई। मैं त्रिगुन धरि जग पतिआई।६८६।	सतनाम	मैं देव देव कर देव कहाया। मैं दनुज दहेव मुनि स्तुति गाया।६८७।	सतनाम	मम गोप प्रगट सब घटहिं समायो। निगम स्वरूप नेति गुन गायो।६८८।	सतनाम
सतनाम	अनन्त नाम फिर एक कहाया। निर्गुन सर्गुन दोउ प्रगट देखाया।६८९।	सतनाम	जननायक हम निर्गुन निरंता। निगम निषेद सुमिरहिं सब संता।६९०।	सतनाम	मुक्ति महात्म मत जिन पयऊ। अमर लोक बैकुण्ठ बसयऊ।६९१।	सतनाम
सतनाम	जोग विराग झमि कीन्ह प्रसंगा। दान पुन्य धर्म शुभ अगा।६९२।	सतनाम	गुन गामी जेहि गर्व न होई। मम पद पाये अमृत फल सोई।६९३।	सतनाम	सहस्र अट्टासी मुनि गुन ज्ञाता। वेद अस्थापि धर्म निजु राता।६९४।	सतनाम
सतनाम	सो किमि करि तुम भर्म भुलानेव। अदोइत ब्रह्म आत्म नहिं जानेव।६९५।	सतनाम	साखी - ६९	सतनाम	जीव शिव माया संग, सब घट प्रगट देखाय।	सतनाम
सतनाम	करो विवेक विचार के, गुन निर्गुन तब पाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	गुन निर्गुन हम दोउ विचारी। तिर्गुन सर्गुन गुन नाम है न्यारी।६९६।	सतनाम
सतनाम	वह अमर गुन निर्गुन तब कहिये। सर्गुन विनसि निर्गुन कहं पइये।६९७।	सतनाम	आकार बिना निरंकार कहावे। बिना आकार ठवर कहां पावे।६९८।	सतनाम	आकार अमर पुरुष सत अहई। सो गमि वेद कबहीं नहिं कहई।६९९।	सतनाम
सतनाम	माया चरित्र सब रचेव संवारी। त्रिदेव मचेव सो बुद्धि बिकारी।७००।	सतनाम	इमि नहिं जानूं पुरुष का अन्ता। जप तप संजम कहेव अनन्ता।७०१।	सतनाम	एक नहिं तब अनन्त कहां ते अयऊ। अनन्त जाल जग बिदित लोभैऊ।७०२।	सतनाम
सतनाम	51	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
बाझोऊ मुनि पंडित सब जोगी। राव रंक अवगृह संजोगी।७०३।	भव में अटकि भटकि सब गयऊ। संकट जोईनि निकट सब रहऊ।७०४।	अमर लोक तीन लोक से न्यारा। अजर पुरुष है सत करतारा।७०५।	साखी - ७०	अजर अमर वह ब्रह्म हहीं, नहिं धरे तिर्गुन का देह।	यह आवै जाय सरूप करी, फिरि तन होखे खेह॥	छन्दतोमर - १७
मन धरेव दस अवतार, मन जानु जग करतार॥	यह विश्नु ब्रह्मा देव, सब करहीं मन का सेव॥	यह अहैं कोसिला धीश, मुनि कहत हैं जगदीश॥	मन कान्ह कृष्णानंद, सब कहत परमानंद॥	मन बावना बलि द्वार, तुम ठगेव सब संसार॥	मन मच्छ कच्छ ब्राह, तुम धरनि धरिया आह॥	तुम काम कामिनी संग, मन कला कौतुक रंग॥
मन पांच तत्व है तीन, मन निर्गुन सर्गुन न भीन॥	मन देह धरे फिरि जाये, मन अनंत काल छाये॥	मन कहि अनल ^१ समीर, मन बूंद बरसत नीर॥	मन छटा चमके जाय, मन मगन उड़िगन ^२ आय॥	मन भान चंदा चीन्ह, मन माया होन ना भीन्ह॥	मन बारि बारिज कीन्ह, मन घ्रानि मधुकर ^३ लीन्ह॥	मन क्रोध तपसी ^४ संग, मन करत जोगहीं भंग ^५ ॥
मन दया कहिए काल, मन माखं बान बिसाल॥	छन्दनराच - १७	मन की जार करे तन छार, छलि छलि जीव के इमि करता॥	फेरि धरी मारे नर्कहिं डारे, सो हरि जग में है बरता॥	रूप न रेखा किमि करि देखा, दर्स बिना जग किमि तरता॥	सब कल खैंचत पल मैं ऐंचत, ज्यों पुतरी पेखना धरता॥	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - १७			
सतनाम			यह सब चरित्र बिचारि, तुमहिं निरंजन देव हो।		सतनाम	
			पुरुष तुम्हेंते पार, आदि ब्रह्म गुन इमि कही॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			सत बचन सत तुम कहऊ। सत पुरुष दुजा हम अहऊ॥७०६॥			
सतनाम			जा दिन ब्रह्म वह पुरुष पुरानां ता दिन संग सेवा हम ठाना॥७०७॥			
			बहुत प्रेम दाया बहु कीन्हा। तीन लोक यह हम के दीन्हा॥७०८॥		सतनाम	
सतनाम			फेरि एक कन्या कीन्ह परचंडा ^१ । साम द्वीप बरते नवखांडा॥७०९॥			
			देखत मम चित रहेव लोभाई। अति छवि सुन्दरि बरनि न जाई॥७१०॥		सतनाम	
सतनाम			उपजेव मन मत भाव अनंगा। तेहि कन्या से भयो पर सडा॥७११॥			
			तीन देव ताहि से भयऊ। तीन कन्या तिहुं के दियऊ॥७१२॥		सतनाम	
सतनाम			पिता खोज करि मरम न जाना। जोति ^२ सरूप ध्यान सब ठाना॥७१३॥			
			जोति बिरंचि वेद में कहऊ। गायत्री मंत्र सभनि मिलि ठयऊ॥७१४॥		सतनाम	
सतनाम			सुर नर मुनि यही मत कीन्हा। जोति सरूप ध्यान सब चीन्हा॥७१५॥			
			साखी - ७१		सतनाम	
सतनाम			ऐसो मता जक्त में, पुरुषहिं केहु न जान।			
			कथेव बिरंचि वेद गुन, सोई बचन जग मान॥		सतनाम	
सतनाम			चौपाई			
			जब मैं धरेव प्रथम अवतारा ^३ । केहु न गमि यह कीन्ह विचारा॥७१६॥		सतनाम	
सतनाम			फिरि दूजे जब जग में अयऊ। जोति स्वरूप बेद गुन गयऊ॥७१७॥			
			जोति से आय जोति में गयऊ। मम गुन प्रगट केहु नहिं कहेऊ॥७१८॥		सतनाम	
सतनाम			हम के कहेव जो जोति सरूपा। बहुत प्रेम कथि कहेव अनूपा॥७१९॥			
			पुरुष गमि केहु मरम न जाना। जोति जोति कहि जग बौराना॥७२०॥		सतनाम	
सतनाम			इमि करि सभे भर्म जो भयऊ। दस अवतार घरि जग में अयऊ॥७२१॥			
			जानत नाहिं कहांते आए। को है पुरुष जो तिर्गुन बनाए॥७२२॥		सतनाम	
सतनाम			को है सगुन निर्गुन के कर्ता। को है तीन लोक में बर्ता॥७२३॥			
			53			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चीन्हें बिना सब यह मत ठयऊ। निर्गुन सर्गुन दो पंथ चलयऊ ॥७२४॥	निर्गुन सर्गुन यह जाकर अहई। ताहि चीन्हे बिनु यह मत कहई ॥७२५॥	साखी - ७२	जीब शिव माया इमि, सक्ति बड़ि है जोर।	ज्ञान चेतन चित न रखे, घैंचि आपनि ओर ॥	चौपाई	धन तुम देव रिनंजन अहऊं धन तुम सेव पुरुष के ठहऊ ॥७२६॥
धनहिं पुरुष तुम्हें सब दीन्हा। धन हो तुम पुरुष कह चीन्हा ॥७२७॥	धन हो तुम जग रचना ^१ कीन्हा। धन हो तुम भार सब लीन्हा ॥७२८॥	धन तुम कर्म सभे फैलाई। धन तुम उत्पति पर लैलाई ॥७२९॥	धन वह पुरुष काल जो कीन्हा। धन तुम गुप्त केहु केहु चीन्हा ॥७३०॥	धन तुम जोति निरंजन राई। अविगति की गति बिरले पाई ॥७३१॥	तीन लोक महि मंडल माया। जाल फांस ^२ रचि सभे नचाया ॥७३२॥	चतुरानन्द तुम भेद न पयऊ। जोगी जती विविध मुनि गयऊ ॥७३३॥
निरंकार अंकार न अहऊ। अति तिरछन केहु भेद न पयऊ ॥७३४॥	मम चीन्हेव तुम भेद विचारी। मन अब ज्ञान दोउ निरुआरी ॥७३५॥	साखी - ७३	कृपा कीन्ह सतगुरु, दया सिंधु अपार।	सकल भर्म भव भागिया, गुन महिमा निजु सार ॥	चौपाई	चलि मगु पगु भयो मगन विरागी। भूमि प्रभाव भरम सब त्यागी ॥७३६॥
चित महं चेतनि गुन गहि ज्ञाता। सतगुरु प्रेम सुखद सुख दाता ॥७३७॥	जहां रहे शिव सक्ति संग जुगुता। पहुंचे तहां बचन एक निकुता ॥७३८॥	डंड प्रनाम कीन्ह बहु भांती। बृगसेव कमल भंवर रस माती ॥७३९॥	मम तुम भेद अगम सब जानी। मथेव सिंधु गुन ज्ञान बखानी ॥७४०॥	लीन्ह घृत काढ़ि छाछि ^३ दीन्ह डारी। मल ^४ सब जरे वह ब्रह्म उदगारी ^५ ॥७४१॥	अटल ब्रह्म गुन मनि भव दिया। सतगुरु बचन प्रेम तुम पिया ॥७४२॥	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जो मुनि केहु ना कीन्ह विचारा। कियो निज प्रगट ब्रह्म उजियारा।७४३।	सतनाम	अति मन झीन ^१ झुला सब कोई। कीन्ह निरुआर सोकठिन विलोई ^२ ।७४४।	सतनाम	मनकी हारि सभे किछु हारी। मन की जीत सभे जिति डारी।७४५।	सतनाम
सतनाम	साखी - ७४	सतनाम	मन परिपंच बिचार के, तुम लिया जुआ जग जोति।	सतनाम	जो हारा सो हारिया, तुम किया पुरुष सो प्रीति॥	सतनाम
सतनाम	छन्दतोमर - १८	सतनाम	शिव सक्ति संग विचारि, तुम जीता जग प्रचारि॥	सतनाम	तुम सिद्ध पुरो ज्ञान, शिव सक्ति कीन्ह ख्यान॥	सतनाम
सतनाम	तुम चीन्हा ब्रह्म निरंत, सब तेजि सकलो अनंत॥	सतनाम	सब देखि औघट घाट, तुम्हें मिला सतगुरु बाट॥	सतनाम	सब गर्व गरुआ नास, तुम काटिया जम फांस ^३ ॥	सतनाम
सतनाम	तुम भयो ब्रह्म विरोग, तेज काल कबुधा सोग॥	सतनाम	तुम हंस बंस ^४ गंभीर, इमि मान सरवर तीर॥	सतनाम	तुम कियो विबरन जानि, सब नीर छीरहिं छानि॥	सतनाम
सतनाम	तुम संत सुबुध सुजान, इमि ज्ञान मन पहचान॥	सतनाम	सुजान जग पर सिद्ध, मिला अमी ^५ सागर निघ॥	सतनाम	जल मिलेव सुरसरि जाय, फिर विलगि नहिं बिहराय॥	सतनाम
सतनाम	इमि वेधेव परिमल ^६ बास, सब गंध गुन सुबास॥	सतनाम	सब चाहि चर्चु सरीर, तन लागु सीतल समीर ^७ ॥	सतनाम	ज्यों परसु पारस जाए, कुधातु देखि सोहाये॥	सतनाम
सतनाम	भयो कनक कुंदन ^८ जानी, शिव कहा वचन बखानी॥	सतनाम	छन्दनराच - १८	सतनाम	कहा भवानी तुम गुन ज्ञानी, गर्व तेजा सब इमि लहिये॥	सतनाम
सतनाम	तुम बहु विदितसो उदित जक्त में, जरा मरन सब दूरि दहिये॥	सतनाम	जियत सो मुक्ता कर्म न भुक्ता, भव सागर में गुन गहिये॥	सतनाम	भयो सुभागा अमृत पागा, पारब्रह्म परिचय कहिये॥	सतनाम
सतनाम	55	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - १८			
सतनाम			भयो बिदा तब जानि, कीन्ह प्रदक्षि न प्रेम करी।		सतनाम	
			मम मातु पिता तुम्हें जानि, बालक के प्रति पालिये॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			अमर पुरुष अमर पुरवासा। सेत छत्र फिरे अग्र ^१ सुवासा।७४६।		सतनाम	
सतनाम			अमृत हंस पीवहिं बहुभांती। जरा मरन देवस नहिं राती।७४७।		सतनाम	
सतनाम			संग निरंजन सुत जो अहई। जुग जुग सेवा पुरुष पहं लहई।७४८।		सतनाम	
सतनाम			हंस बंस सुख अमृत बानी। करहीं बिलास पुहूप ^२ की खानी।७४९।		सतनाम	
सतनाम			मृत्यु लोक का रचना कीन्हा। कन्या साथ निरंजन दीन्हा।७५०।		सतनाम	
सतनाम			भाव भोग संग्रह तब अयऊ। कन्या संग विविध सुख भयऊ।७५१।		सतनाम	
सतनाम			उपजेव तीन देव तब आई। तीन से तीन लोक फैलाई।७५२।		सतनाम	
सतनाम			स्वर्ग पताल मृत्युलोक जो कीन्हा। तेहि बिच अवरलोक रचि लीन्हा।७५३।		सतनाम	
सतनाम			अंडज पिंडज उखामज आइ। खानि बानि सब रचा बनाई।७५४।		सतनाम	
सतनाम			बहु विस्तार कीन्ह बहु भांती। अपने रंग में सब कोई माती।७५५।		सतनाम	
सतनाम			चार वेद चतुरानन कीन्हा। जप तप संजम सबमिल लीन्हा।७५६।		सतनाम	
			साखी - ७५			
सतनाम			संध्या तर्पन कर्म बहु, मंत्र गायत्री लीन्ह।		सतनाम	
सतनाम			आदि भेद नहिं जानहीं, जम से परिचय कीन्ह॥		सतनाम	
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			बहु विधि बचन जक्त में भाखेऊ। पुरुष नाम गोप करि रखेऊ।७५७।		सतनाम	
सतनाम			आपहिं कर्ता धर्ता भयऊ। आपहिं काल आप गुन गयऊ।७५८।		सतनाम	
सतनाम			ऐसन मत यह सब कह दीन्हा। नाम निरंजन निर्गुन कीन्हा।७५९।		सतनाम	
सतनाम			निर्गुन कहा जब धरा सरूपा। हरिहर सुमरहिं नाम अनूपा।७६०।		सतनाम	
सतनाम			बहु विधि पंथ जक्त में भयऊ। निर्गुन सर्गुन यह सब मिल गयऊ।७६१।		सतनाम	
सतनाम			जोग जाप अवमखा ^३ पुराना। तीथ व्रत में सब अरुझाना।७६२।		सतनाम	
सतनाम			दान पुन्य धर्म सब कियऊ। यहि मता जक्त मिलि ठयऊ।७६३।		सतनाम	
सतनाम			षट दरसन षट कर्म अचारा। नेम नेति गुन कीन्ह बिस्तारा।७६४।		सतनाम	
सतनाम			56		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - ७६	आदि ब्रह्म की खबर न पाई। तिर्गुन तीन कर्ता ठहराई। ७६५।	जीव शिव माया मत कीन्हा। यह छोड़ कर्ता दूजा न चीन्हा। ७६६।	ऐसो मता जक्त में, तीन देव परनाम।	अमर लोक जाने बिना, तिर्गुन कीन्ह श्राम॥	चौपाई	
केते जुग बीत जब गयऊ। दयावन्त के दया जो भयऊ। ७६७।	अपने आपु आपु होय रहऊ। पुरुष नाम केहु भेद न पयऊ। ७६८।	जो जीव गया लौट नहिं आई। बहुरि हंस नहिं लोक पठाई। ७६९।	कहे पुरुष सुनो योगजीता। भवसागर जीव भये अनीता ^१ । ७७०।	जम्बू द्वीप तुम जाहु उजागर। हंस बोधि आवहु सुखसागर। ७७१।	पहिले कथिहो वेद की बानी। ताते नर करिहैं पहिचानी। ७७२।	पहिले तौं दासा पन धरिहो। पीछे ज्ञान अमर पद गइहो। ७७३।
प्रेम जुक्ति निश्चय गुन गहीहो। जे बूझे तेहि जाय बुझइहो। ७७४।	सत्ता नाम निश्चय दीढ़इहो। भवसागर ^२ में हंस बचइहो। ७७५।	साखी - ७७	निन्दा अस्तुति जो करे, अधिक प्रेम गुन गाय।	निर्मल ज्ञान निषेद करी, अपने काल दुराय॥	चौपाई	
दया तुम्हारी करिहों उपदेशा। जम्बू ^३ द्वीप है काल के देशा। ७७६।	हुकुम देहु मैं जग में जाई। कठिन काल दुखा दिहे आई। ७७७।	पिता बचन पुत्र कहराता। करि सलाम प्रेम निज बाता। ७७८।	तुमके काल जबें नियराई। तब हम बन्द ^४ छोड़ाइब आई। ७७९।	हमहु हद पर करब बसेरा। तब तौं होइहैं काल निमेरा ^५ । ७८०।	करी सलाम बिदा तब भयऊ। दस्त ^६ लेय तब सिर पर दियऊ। ७८१।	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
हुकुम लेय पगु आगे दीन्हा। सत्य नाम हृदय लिखि लीन्हा।७८२।	छोड़ा लोक अमर की छाया। दया द्वीप द्वीप आये नियराया।७८३।	बैठे हंस पलंग सुख चैना। सब मिलि आये बोले जो बैना।७८४।	कहां चले सुकृत तुम ज्ञानी। बोले बचन अमृत रस सानी।७८५।	साखी - ७८		
				पुरुष बचन सिर ऊपरे, जम्बू द्वीप चलि जाय।		
				हंसन्हि बन्द छोड़ाइहौं, सुनो श्रवन चित लाय।।		
				चौपाई		
				चले तुरंत पुहुप द्वीप आये। जहां हंसन्ह' सुख राज सोहाये।७८६।		
				छन छन बृग से आमृत बानी। चहुंओर डाक सोधाकी घानी।७८७।		
				अंबू द्वीप आये नियराई। अमृत की झरि बहुत सोहाई।७८८।		
				अंबू द्वीप सुख सागर कहिए। हंसन्हि सब सुख अमृत पइये।७८९।		
				सहज द्वीप सहज जंह रहऊ। दरसन आय तहां तब भयऊ।७९०।		
				पाएर द्वीप मह पहुँचे आई। जहां कामिनी बहु सोभा बनाई।७९१।		
				पांव छुई सब स्तुति कीन्हा। धन्यहिं पुरुष तुम्हें जो दीन्ह।७९२।		
				जम्बू द्वीप जनि जाहु सुभागा। चहुँदिस काल कुबुधि है कागा।७९३।		
				त्रिया सुभाव मोहि नहिं रीता। बोल बचन तब चले तुरन्ता।७९४।		
				साखी - ७९		
				मान सरोवर आय के, जम्बू द्वीप है देश।		
				दूत चहुँदिसि धावहीं, जम से कहहीं संदेश।।		
				छन्दतोमर - १६		
				जम दूत पहुँचे आए, सर बाण बहुत बनाये।।		
				इमि छेकिय यही ठांव, किमि जात हमरे गांव।।		
				तब जोर बहुते कीन्ह, तेहि दांव अविगति दीन्ह।।		
				इमि चले सब बिलगाय, फिर निकट पहुँचे आय।।		
				इमि जोर बहुते दाप, मम पुरुष को प्रताप।।		
				इमि चले तिरछन रूप, सत शब्द सांगि सरूप।।		
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

बहु फंद रची आये, नहिं दांव एको पाये॥

निरंजन संभरे वीर, अति बोलत बैन गंभीर॥

तुम कवन कहवां आये, निजु अर्थ कहु समुझाये॥

सत पुरुष मोहि पठाये, जीव बंद छूट जाये॥

मम सेवा बहुते कीन्हा, तुम्हें नाम कवहुं न चीन्हा॥

जब रहे वह अमर पुरगांव, नहिं सुने तुम्हरो नाव॥

तुम पुरुष से भयो चोर, जोग जीत नाम है मोर॥

मम भ्राता हम तुम्हें जानि, किमि करत नहिं पहचानि॥

मुख प्रीति थोरा कीन्हा, इमि राह सब छोड़ दीन्हा॥

जग गर्भ होइ हैं बांस, तब डरिहों जम फांस॥

छन्दनराच - १६

दूत मलीना भव सब छिना, छन में बुधि सब गई बौराये॥

पुरुष प्रतापा लहा नदापा, दबरि छेके फिर जाय दुराये॥

भा प्रतीता जम के जीता। सतवचन नहिं जाय नसाये॥

हुकुम जो लीन्हा तब पगु दीन्हा, धन कर्ता तुम भयो सहाये॥

सोरठा - १६

शब्द सरूपी आये, तन धरि गुन सब गाइयो।

केहि गृह जन्मों जाय, जहां हुकुम कर्ता^२ करें॥

चौपाई

जम्बू द्वीप में पहुंचेव आई। सुरति चेतनि कैचितवहिं जाई॥७६५॥

राजा के गृह वेद बहु बानी। सुने ग्रंथ राजा अव रानी॥७६६॥

भया जुक्ति तब पहुंचे जाई। सुरति साधि तहां चलि आई॥७६७॥

मातु गर्भ मह लीन्हों बासा। राजा रानी बहुत हुलासा॥७६८॥

दस मास गर्भ में लागा। जब जन्मेव तब धारी सुभागा॥७६९॥

आनन्द मंगल सब मिलि गाया। देय निष्ठावरी^३ दाम लुटाया॥८००॥

राजा रानी बहुत अनंदा। बिर्गसि कुमुदिनी^४ सर्दजनु चंदा॥८०१॥

कछु दिन बालक सोतन रहऊ। पित छीर मातु पंहं लहऊ॥८०२॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
पंडित बोलाय तब धरी सोचाया। राखा नाम सुकृत ठहराया।८०३।						
गया अचेत चेत तब भयऊ। सब के चीन्ह चीन्हावन कियऊ।८०४।						
साखी - ८०						
नृप जोग धीर घर आयउ, जहा वेद प्रकास।						
निति पुरान वे सुनहीं, राजा रानी पास॥						
चौपाई						
बारह वर्ष बीतेव लरिकांई। तब निज ज्ञान चेतन चित आई।८०५।						
सत युज कर्म बहुत नहिं लागा। इमि करि ज्ञान चेतनि होइ जागा।८०६।						
पढ़े पंडित जहं वेद पुराना। राज नीति गृह बहु परधाना।८०७।						
करहिं यज्ञ होम बहु भांती। जीव घात करि पूजहिं पाती।८०८।						
सालिग्राम अव देव मुरारी ^१ । पूजहिं लक्ष्मी अव त्रिपुरारी।८०९।						
सुन विप्र निज ज्ञान हमारा। निगम निषेद वेद निज सारा।८१०।						
जब लगि आत्म दर्शन न पाई। बहु विधि वेद कथे चतुराई।८११।						
तेजहु पाहन तत्व बिचारी। बरति रहा सब घट उजियारी।८१२।						
जीव कर घात धर्म कथि आनी। किमि करि लंघिहो भौजल पानी।८१३।						
राजा गुरु करि पाप के मूला। कुमति कांट तन भवो त्रिसूला ^३ ।८१४।						
साखी - ८१						
गुरु कहा बहु सीख करी। सीख जैहे कवने ठांव।						
राज गुरु जग बिदित हो। तुम बसो भर्म के गांव।						
चौपाई						
कहे विप्र सुन राजकुमारा। राज नीति तुम सभी बिगारा।८१५।						
ऐसन मत नृप गृह नहिं रहई। इमि करि मत जोगी सब कहई।८१६।						
ऐसन मत कहे ब्रह्मचारी। डंड कमंडल चले बिचारी।८१७।						
करि बैराग ^३ जो माला डारा। भिक्षा मांगहिं राज दुआरा।८१८।						
राज घर जन्म राज करु आई। काबहु बचन कथहु बौराई।८१९।						
यहां राज नेति सब खेले शिकारा ^४ । मांस भोजन नित करे आहारा।८२०।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सो सब सीखा हमरो अहई। तुम न कहो कवन पथ गहई।८२१।	राजा बचन सुनि जौं पावै। क्रोधवंत होय तुम्हें दुरावै।८२२।	जो मैं कहों सोई सुनि लीजै। राज नीति छोड़ दूजा न कीजै।८२३।	लेहु दिक्षा छोड़हु बहु बानी। यह परिपंच सुनिहिं फिरि रानी।८२४।	साखी - ८२	मातु पिता गुरु अग्या, तुम रहो चरन लवलीन।	वेद कहे सो कीजिये, राज नेति नहिं भीन॥
चौपाई	विप्र बचन कहा नहिं नीका। तुम्हारि बचन लागु मोहि फीका।८२५।	राज करत परे जम द्वारा। कोउ न मिलि है खेवनि हारा।८२६।	भक्ति बिना कहिं ठवर न पावै। केतनो दान पुन्य कथि लावै।८२७।	तुम बहु गुरु कीन्हो गुरुवाई। राज समेत नर्क के जाई।८२८।	अन्न भक्ष करु फल अंकुरा। जीव के वोएल पइ हो भरिपूरा।८२९।	सतगुरु बचन सुनो चित लाई। मुक्ति महातम भेद बताई।८३०।
सुनो ग्यान निजु करो विचारा। कबहु न जइहो जम के द्वारा।८३१।	सुनहु विप्र नीके चित लाई। बालक देखि भर्म तोहि आई।८३२।	बुढ़ वार' कर कवन विचारा। जाको ग्यान सोइ अधिकारा।८३३।	सगरे घर के गुरु कहाई। ग्यान चेतनि अजहु नहिं आई।८३४।	लेहु ग्रह तुम दान बहुता। किमि करि मेटिहें भव कै चींता।८३५।	साखी - ८३	कर्म भया सिर बोझ', तुम सुनि ले पंडित राज।
काल झपटा मारि हैं, तुम बटइ वोह बाज॥	चौपाई	विप्र कहा राजा से जाई। तुम्हरे ग्रीहि यह बालक आई।८३६।	असुर' भाव सब याके अहई। उपद्रो राज नेति सब करई।८३७।	राज लछन कछुवाके न अहइ। भीन भीन बात अवर कछु कहई।८३८।	नींदे पुजा नेम अचारा। नींदे धर्म जो नेति तुम्हारा।८३९।	
61						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

छन्दनराच - २०

गुर पर्म पुनीता सब गुन हीता, चेतनि चित निर्प सो कहिअंग॥

सुत भ्रम भूला पाप के मूला, कुल कानि सभे बहिअं॥

सब सुख सागर कुलको आगर, भागर को जल किमि लहिअं॥

गुर पदुम प्रकासा सब भ्रम नासा, भर्मीत भवनहिं गुन गहिअं॥

सोरठा - २०

करहु विवेक विचारि, गुर के बचन प्रति पालिये।

कुमति सुत औ नारि, दारुन^१ दुख तन व्यापिया॥

चौपाई

हृदय सोक मुख कहत बनाई। मोह कोह कछु कहत न आई। ८४६।

बहुत प्रीति मुख अमृत आनी। गुरु के बचन मम और न जानी। ८४७।

जो तुम कहो सोइ चित धरि हैं। सुत अव नारी दुवो परि हरि हैं। ८४८।

मोह सकल मन तप्त^२ जो लगा। चले तुरंत महल पगु पागा। ८४९।

राजा रानी जुगल भए गएउ। गुरु के बचन कहन तब लएउ। ८५०।

तुम सुत हित नहिं सभे बिकारा। निगम^३ नेति नहिं करत विचारा। ८५१।

निदंत गुर कहं गर्व जो कीन्हा। वेद उछेद सभे मति भीना। ८५२।

नींदे मीन मासु जो खाई। महा पाप औ गुन सब लाई। ८५३।

नींदे तेहि जो खेले शिकारा। जीव कर हत्या जुग जुग मारा। ८५४।

नींदे पुजा मख^४ पुराना। त्रिय देव की मर्म न जाना। ८५५।

साखी - ८५

नींदे महा मुनि जक्त में, गए नर्क की खानि।

इमि गुर बचन बिचारिआ, राज नष्ट होए हानि॥

चौपाई

ऐसन सुत गृहि देहु निकारी। नृप सुनि हैं जग परिहैं गारी। ८५६।

एहि राखे का कछु नहिं कामा। देहु निकालि रहे नहिं धामा। ८५७।

रानी सुनत मोह अति भएउ। गुर के वचन अनल तन दहेउ। ८५८।

फाटेव उर^५ मोर हीया बिहराई। सुत के संग प्रान बलुजाई। ८५९।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सुन्दर छबि यह राज कुमारा। जरो राज यह पाट तुम्हारा। ८६०।	गुरु के कहे गए बौराई। तुम धर धालक ^१ राज चलाई। ८६१।	बाउर सुत हित मातु के अहई। विप्र चंडाल ^२ दर्द नहिं लहई। ८६२।	कवन बचन उन्हीं कहा विकारा। सब गुन नीके वेद विचारा। ८६३।	मीन मासु हत्या सब अहई। विप्र जो खाए नर्क मह बहई। ८६४।	राज नेति है सब सुख नोका। जीव मारे का सब गुन फीका। ८६५।	
		साखी - ८६				
		सुत के संग सदा हम, की मम त्यागे प्रान।				
		सुनो निर्प चित होत करी, और दूजा नहिं आन॥				
		चौपाई				
सुकृत कृत देखा ग्रीह जाई। मातु पिता तन बड़ दुख पाई। ८६६।	बोलि मिर्दु बचन कहा समुझाई। कारन कवन दुखित तन आई। ८६७।	राज काज सब कुसल तुम्हारा। किमि कारन तन पूरा विकारा। ८६८।	मातु कहे दुख कहा न जाई। पुत्र सोग तन व्याप्यो आई। ८६९।	कहे निर्प सब बचन बिचारी। आदि अंत गुन सब निरुआरी। ८७०।	तुम गुर से झगरा काहे कीन्हा। अत उलंघ ^४ करि वेद न चीन्हा। ८७१।	गुर मरजाद राज ग्रीहि अहई। सो तुम मेट आपन गुन कहई। ८७२।
अति क्रोध गुर कीन्ह बिकारी। सुत के देहु तुरंत निकारी। ८७३।	राज काज करि हैं यह भंगा। औगुन सदा बसे एहि अंगा। ८७४।	कीर्त निंदक नृप सब यह करई। महा मुनिन के औगुन धरई। ८७५।				
		साखी - ८७				
		मीन मासु जो खात है, सो नृप गुरु तुम कीन्ह।				
		औ गुन सदा शरीर में, रहे मुक्ति सो भीन॥				
		चौपाई				
ऐसन गुरु तुम कीन्हो राई। महा दृष्ट ^५ तन पाप समाई। ८७६।	लेहिं पति ग्रह गर्व तन राता। मुक्ति न होहीं सदा उत पाता। ८७७।	अति तन क्रोध वेद पढ़िवानी। अनल वरे तन सीतल न जानी। ८७८।	जो मैं कहों सुनो चितलाई। सत्तनाम गुन निश्चे गाई। ८७९।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सत सुमिरे होए भव जल पारा । सतगुरु बिना बूढ़ा संसारा । ८८० ।
कहे निर्प ऐसन हम नहिं करहीं । राज काज वेद तन धरई । ८८१ ।
निगम नेति यह निर्प कर करमा । दान पुन्य तीरथ करि धरमा । ८८२ ।
ब्राह्मण विष्णु नेवति जेवाई । भूमि दान बैकुंठहिं जाई । ८८३ ।
कूप^१ तड़ाक^२ बाटिका लाई । निगम नेति कृत गुन गाई । ८८४ ।
तुम सुत मानहु कहा हमारा । तेजहु बादि वेद गुन सारा । ८८५ ।

साखी - ८८

गुरु कहे सो कीजिए, दीक्षा लेहु तुम जाय ।
तेजहु बादि विवादि सब, चारो फल ग्रीहि पाय ॥

छन्दतोमर - २१

सुत सुनू बचन हमार, सब तेजु भरम बिकार॥
देउ राज तिलक जानि, सब लाल हीरा खानि॥
तुरे अव गज साज, सब जोर सिकरा बाज॥
सब कटक करि देउ साथ, निति नावे कोटिन माथ॥
गघ्रपि^५ गुन सब गाय, रंग देखि बहुत सोहाय॥
यह भवन भीतर नारि, जराव तन देउ डारि॥
सब संग सुख के खानि, इमि सेज बेलसहु जानि॥
इमि पान फूल रस भोग, सब बने विविधि संयोग॥
निसु बासर चंवरा ढार, सब राज को बिस्तार॥
इमि मातु पितु गुन गाये, धन भाग सुत यह पाये॥
इमि होत परम आनन्द, तुम तेजु सकलो दन्द॥
तुम राज लेहु मम हीत, इमि कहत बचन पुनीत॥
तुह मातु बहु सुख पाये, सब सोक जात नसाये॥
तुह प्रानपति हो मोर, किमि बचन जात कीजे भोर॥
गुरु दीक्षा लीजे जानि, इमि परम पद पहचानि॥

छन्दनराव - २९

तेजु बिपति बियोगा सब सुख भोगा, भाग भला नृप इमि कहिअं ।
नारी प्यारी सो चित्र सारी, चंदन चर्चित सुख लहिअं ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		चढ़ो गज बाजा सब सुख साजा, राज करो सब अरी ^२ दहीअं॥				
		कटक विराजे सब गुन राजे, बाजत नौवत जो चहिअं॥				
		सोरठा - २१				
		नृप हित जानहु प्रीति, मातु पिता गुरु मानिए।				
		तेजो भर्म अनीत, मम तप करिहों जाई के॥				
		चौपाई				
		हम कह राज काज का अहई। एह गुन मिथ्या ज्ञान सब कहां।८८६।				
		को है मातृ पिता ग्रीह नारी। को सिर भार सहे दुख जारी ^३ ।८८७।				
		भक्ति बिना सब गए बिहाई। राज काज कछु साथ ना जाई।८८८।				
		एहि महि केते भए रजधानी। उपजी बिनसि बुला जनु पानी।८८९।				
		गुरु बिनु भव नहिं भंजनि हारा। सत तरनी ^४ गुरु ज्ञान करारा।८९०।				
		सतगुरु सत पर्म गुरु ज्ञाता। सुमिरत पाप जो करे निपाता।८९१।				
		भव के भर्म सभे मिटि जाई। अटल अमर पद सो गुन गाई।८९२।				
		आवा गवन की संसे मेटिहैं। कोटि जन्म के दुख सब छुटिहैं।८९३।				
		यह नृप सुनो स्त्रवन चित लाई। गहे गुरु ज्ञान अमर पद पाई।८९४।				
		साखी - ८६				
		सतगुरु हित सतनाम करी, देहु भर्म भव डारि।				
		जाय अमर पुर धाम में, जमके फंद बिसारि॥				
		चौपाई				
		पुर्ष भेजा मोही गुन हितकारी। जीव चेतनि नर्क करि उबारी ^५ ।८९५।				
		यह सुख खलक ^६ पलक में जैहैं। ज्ञान बिना जिव इमि दुख पैहैं।८९६।				
		दया ना रहिहें राज दुआरा। किमि करि भवजीव होए उबारा।८९७।				
		जिमि करि कलपेव जल बिनु मीना। जल सूखे भव जीव मलीना।८९८।				
		बारि सूखे बारिज सुखि जैहैं। भंवरा भरमि ठौर नहिं पइहैं।८९९।				
		इमि करि जम जीव करिहें हानी। सतगुरु बिना ना नेक निसानी।९००।				
		अव गुरु बहुत करिहिं गुरुवाई। छपा बिना जम छेकिहें जाई।९०१।				
		पइहै सनदि ^७ मोहर ^८ टकसारा ^९ । गुरु बहियां गहि पार उतारा।९०२।				
		66				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	बंक कमल मधो करू प्रकाशा। देखाहू दृष्टि सुगंध सुबासा।६०३।	सतनाम	अमि पत्र ^१ भरि प्रेमहिं पीजे। त्रीवेणी घाट सुघट भरि लीजे।६०४।	सतनाम	भंवर गोंफा तहाँ धुमे निसाना। यह छवि देखहिं संत सुजाना।६०५।	सतनाम
सतनाम	साखी - ६०					सतनाम
सतनाम	छापा सनदि ^२ मोहर यह, सत शब्द टकसार ^३ ।					सतनाम
सतनाम	सतगुरु पारख परखिके, परखि लेहु ततुसार॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	बोले नृप सुत कीन्ह विकारा। गुरु समेत नर्क तुम डारा।६०६।	सतनाम	ऐसन मत जनि बोलहु बिकारा। यह नहिं मनिहें गुरु हमारा।६०७।	सतनाम	सुनिके बीप्र कोध अति धरिहें। महा उपद्रो ^१ गृहि मंह करिहें।६०८।	सतनाम
सतनाम	तुम के तुरत निकारन कहिहें। मम दुख बहुत नारी दुख पइहें।६०९।	सतनाम	हम पिता तुम पुत्र हमारा। मम बचन नहिं करो बिचारा।६१०।	सतनाम	जो मय कहों सुनो चितलाई। बुहु परिपंच कहा गुन गाई।६११।	सतनाम
सतनाम	नृप घर राज काज सुख भोगा। तेजहु बिखाद बिराग वीयोगा।६१२।	सतनाम	तप के किये राजा गृह आई। चौथा पन तप करिहो जाई।६१३।	सतनाम	यह सब दान पुन्य परतापा। हरिहर कृत तेजहु तन तापा।६१४।	सतनाम
सतनाम	बीप्र विरोध करहु जनि कबहीं। निजमुख बैन कहत मैं अबहीं।६१५।	सतनाम	साखी - ६१			सतनाम
सतनाम	अब मैं हारेव बहु विधि, कहे नृप बचन बिचारि।					सतनाम
सतनाम	सुत बैरी बादी भया, कहा ना मानु हमार॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	कहे मातु सुत कहो बिचारी। करो भक्ति भर्म सब डारी।६१६।	सतनाम	सतनाम गहिहो चितलाई। पाखंड कर्म सभे बिसराई।६१७।	सतनाम	अभरन तनके देउ सब डारी। जोगिनी होय के ग्यन सुधारी।६१८।	सतनाम
सतनाम	राज काज त्यागों सब भोगा। विरह बिखाद तेजि करो जोगा।६१९।	सतनाम	जो तुम कहो सोई मत धरिहों। दुजा दोबिधा सब पर हरि हों।६२०।	सतनाम	करो भक्ति प्रेम नए नीता। चरन पद गहो पुनीता।६२१।	सतनाम
सतनाम	67					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जाते मुक्ति अमर पद पाई। एहि भव भर्म बहुरि नहीं आई।६२२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम सत चित्त गहिहो। पुरुष नाम निजु हृदय लइहो।६२३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
देवा देह सब भरम बिकारा। सब तेजि गहो नाम ततु सारा।६२४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नारी पुरुष भक्ति कोई करई। दयावंत दाया चित्त धरई।६२५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - ६२						
भक्ति भाव निश्चय धरो, प्रेम तत्व है सार।						
सुकृत बचन बिचारिये, भव जल होय उबार॥						
छन्द तोमर - २२						
वर्ष बीस बीते बिचारि, तब चलवो पंथ सुधारि॥						
नृप राज लेहु संभारि, इमि जाहु भौजल हारि॥						
नहिं ब्रह्म कीन्ह पहचानि, भव भर्म भिरेव जानि॥						
हित बिप्र मानेव जानि, फिर होत भव जल हानि॥						
नहिं चीन्हेव नर्क अधोर, सब ज्ञान कीन्हों भोर॥						
नहिं नाम नौका जानि, किमि केवट करि पहचानि॥						
को गहे कनहरि डंड ^२ , इमि लहर बड़ी प्रचंड॥						
यह तिर्विधि धार ^३ विकार, किमि होहिं भौ जल पार॥						
इमि चले कोई न साथ, जल पत्र लीन्हों हाथ॥						
अति मोह सब मिलि कीन, करि रुदन बहुत मलीन॥						
इमि चलेव सबहिं बिसारि, निज ज्ञान गुन निरुवारि॥						
इमि गये दुरंतर् देश, तहां कहेव कछु उपदेश॥						
जो बुझे सतगुरु हित, इमि प्रेम करि प्रतीत॥						
कोई ज्ञान गमिकरि नेह, फेरि मरे या तन खेह॥						
कोइ कहत बाउर जानि, कोई ज्ञान गुन पहचानि॥						
छन्दनराच - २२						
परम पुनीता सब गुन हीता, चिन्ता तन की दूरि करिअं॥						
पंथ बिचारी निगम निहारी, निर्गुन गुन में सो धरिअं॥						
कंठ उचारी कहत पुकारी, पारब्रह्म परचय करिअं॥						
मिले जो ज्ञानी कहत बखानी, खानी खुले घट इमि लहिअं॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - २२			
			कीन्ह उपदेश बिचारि, जो कोई ज्ञानहिं मानहिं।			
			भव से लेहिं निकारि, अमर लोक हंसा गये॥			
			चौपाई			
			कोई कहे ज्ञान हितकारी। कोई कहेव बाउर मत डारी।६२६।			
			कोई कहे निगम ^१ नहि जाना। कोई कहे गुरु ज्ञान बखाना।६२७।			
			कोई कहे जो है ब्रह्मचारी। कोई कहे सब नेम बिसारी।६२८।			
			कोई कहे साधु मत नीका। कोई कहे बचन सब फीका।६२९।			
			कोई कहे घृष्टि ^२ जनि करहू। इमि परसंग सदा परि हरहू।६३०।			
			जहवें पावे सो तहवें खाई। इमि करि भ्रष्ट ज्ञान नहिं आई।६३१।			
			बिरला जन कोई करे बिचारा। जो निज जाने मरम हमारा।६३२।			
			बहुत प्रीत हित कहे बिचारी। अनुभव कथा कहे निरुवारी।६३३।			
			गुन सब कहे औगुन दे डारी। मुक्ति भेद इमि करो बिचारी।६३४।			
			पंडित कहे वेद नहिं जाना। फिरे उदासी मत पहचाना।६३५।			
			साखी - ६३			
			यहि प्रकार जक्त में, जाहिर कीन्ह पुकार।			
			कोई बूझे कोई भरमें, वेद मता संसार॥			
			चौपाई			
			काया भेद निज कहो सुधारी। पंडित जन निज करहीं बिचारी।६३६।			
			काया प्रचये इमि कहो बुझाई। ज्ञानी जन निज लेहिं अरथाई।६३७।			
			नवो नाटिका ^३ कहो बिचारी। दसवें द्वार इमि कहों सुधारी।६३८।			
			त्रिकुटी ^४ मध्य काम कर थाना। नाल ^५ पवन धरि करे पयाना।६३९।			
			मेरु डंड ^६ होय पैठे जाई। दसवें द्वार मार ^७ चलि आई।६४०।			
			याते बीज परा संसारा। उपजे हीरा लाल सुधारा।६४१।			
			सिखारा चढ़े सुखमन अहई। इंगला पिंगला नीचे बहई।६४२।			
			को है चंद सूर केहि कहई। दहिने सूर चंद यह अहई।६४३।			
			69			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सातो ^१ बार ^१ यह करो बिचारा। को है चंद सूर बिस्तारा।६४४।						
तीन सूर चंद यह कहई। चारि हैं चंद सूर तिनि अहई।६४५।						
साखी - ६४						
सुर सनीचर जानिए, मंगर अव एतवार।						
चारि दिन है चंद का, पंडित लेहु सुधार॥						
चौपाई						
छव चक्र ^२ औ पांचों मुन्द्रा। खिचरी भोचरी कहि अनुकरा।६४६।						
चचरी चारिउ कही बिचारी। कर्म जोग यह कीन्ह बिस्तारी।६४७।						
पपिलक ^३ छोड़ि बिहंगम ^४ कहेउ। मुंद्रा मांह उन मुनी रहेउ।६४८।						
सुइ अग्र ^५ तहां द्वार संवारी। झलके मनि तहां जोति उजियारी।६४९।						
अजपा मूल दरस तहां देखे। सोंह सुरति दृष्टि महं पेखे।६५०।						
सोरह दल कमल बिर्ग साई। मधुकर धानि रहा लपटाई।६५१।						
गंधारी सुपट खाले जब आई। अग्र बास नासिका पाई।६५२।						
कुंभ पत्र अंमि अस्थाना। चुवे प्रेम पीवे संत सुजाना।६५३।						
इमि पंडित बूझा छितकारीं ग्यान गमि कछु कहे बिचारी।६५४।						
मम जाना जो बाउर अहई। यह तो प्रेम भक्ति गुन कहई।६५५।						
साखी - ६५						
हंसनापुर में रहेउ, कहे पंडित से भेद।						
भक्ति विवेक बिचारहीं, कोई ग्यानी करे निखेद॥						
चौपाई						
फिरि आगे पंथ जो चले बिचारी। अवधुपुरि तहवां पगु ढारी।६५६।						
जाए अवधपुर पहुँचे जबहीं। नग्र सोहावन देखा तबहीं।६५७।						
चर्चेव तिलक बहुत संवारी। धोती पोथी लीन्ह बिचारी।६५८।						
धर्म नग्र सब करे बनाई। जहां जाहिं तहां सादर लाई।६५९।						
भोजन भाव परसाद कराई। बहुत प्रेम ततु लवलाई।६६०।						
आहुति होम देहिं सब दाना। विप्र लेहिं प्रसिध बखाना।६६१।						
बहुत आनन्द नग्र कर लोगा। तहां न देखा विपति वियोगा।६६२।						
निर्प हरिचंद सुधर्मि अहई। परजोका धन इमि नहिं हरई।६६३।						
70						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ऐसन धर्म सत्य उन्हि ठाना । पर आतम बहुते पहचाना । ६६४ ।	राजा रानी सुत समेता । करहि पुन्य अपने निज हेता । ६६५ ।	साखी - ६६	ऐसन नगर अवधपुर, करे धर्म सब लोग ।	पुन सभनि के देखिए , पाप करे नहिं भोग ॥	छन्दतोमर - २३	इमि देखा सरजुग तीर, जल बहत अगम गंभीर ॥
इमि वाट वाटिका झारि, सब गुल फूल संवारि ॥	तहां कूप तड़ाक बनाये, सगिन गच सब लाये ॥	सब हाट वाट सुधारि, नर नारि रूप संवारि ॥	सब चीज अनवन जानि, सब बैठु बनिया बानि ॥	सब लाल मोति खानि, सब करत जौहार जानि ॥	इमि पंडित वेद विचार, खट कर्म बहुत अचार ॥	गृह गृह वांचु पुरान, सब देत प्रातहिं दान ॥
इमि तुलसी चौरादीप, सब भक्ति भाव सनीप ॥	यह सिद्ध साधु है सन्त, हरि ध्यान धरहिं सुमन्त ॥	मुनि मगन मन महं जेत, सब सुमरु हरि पद हेत ॥	सब धर्म नीति विचारि, मन मगन है नर नारि ॥	इमि महल बहु विधि भांति, सब लिखेव चरित्र सुपाति ॥	इमि रानी सत सुख जानि, सतव्रत सब मिलि ठानि ॥	सब बाज गज बनो साज, हरिचन्द सुन्दर राज ॥
छन्दनराच - २३	छत्र विराजे सब गुन छाजे, राज लक्षण सब सिद्ध पाई ॥	कटक सब द्वारे खड़े दरबारे, दर छेके नहिं संधि आई ॥	तुरे बनि साजा देखि समाजा, गज बहु विधि सब इमि आई ॥	नृप सुधर्मा पुन सब कर्मा, पाप सुनहिं तेहि देहिं दुराई ॥		
71						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - २३			
			देखा नगर विचारि , सब गुन कहां विवेक करि ।			
			भक्ति करहिं नर नारि , राजा रानी सत्य गहु ॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			बहुत सत हित गहा सुधारी । त्रियदेवा परिपंच विचारी । ६६६ ।			
			मृतु लोक की राह मिटाया । अवधपुरी बैकुंठ बसाया । ६६७ ।			
			कहे सब सांच झूठ नहिं बाता । किमि करि होय राज उतपाता । ६६८ ।			
			करसा काल कर्म नहिं जाना । धर्म छोड़ाय करुं पिसि माना । ६६९ ।			
			नृप से वचन कछु कहूँ विचारी । जैं निज बूझे ज्ञान सुधारी । ६७० ।			
			नृप भवन से बाहर अयऊ । सोदर देखि तहां चलि गयऊ । ६७१ ।			
			नृप के संग पंडित रहु साथा । अवरि निकट लोग नावहिं माया । ६७२ ।			
			सत वचन तहां बोलेव वानी । पंडित कहा संत कोई ज्ञानी । ६७३ ।			
			नृप बोलाय सादर तेहि करहू । बहुत प्रीति मोद मन भरहु । ६७४ ।			
			लीन्ह बोलाय आसन तब दीन्ह । बहुत प्रीति करि बोले अधीना । ६७५ ।			
			साखी - ६७			
			पुछहिं नृप चित हितकारी, गमन कहांते कीन्ह । ६७६ ।			
			जो अविलाष चित में बसे, कहो वचन परमीन । ६७७ ।			
			सुनेव श्रवन तुम सत विचारी । इमि करि पगु तुम्हारे पह ठारी । ६७८ ।			
			उत्तरा खंड अमर पुर गाऊँ । तहां बसै सत सुकृत नाऊँ । ६७९ ।			
			नगर ठठा एक ठाकुर अहई । तेहि गृह ज्ञान भेद कछु कहई । ६८० ।			
			तब हंसना पुर पहुंचो आई । कछु दिन वहां ज्ञान गुनगाई । ६८१ ।			
			अवधपुरी तब देखा आई । सब नर प्रेम भक्ति गुन गाई । ६८२ ।			
			राजा रानी सुत समेता । सत विचारि गहे निज हेता । ६८३ ।			
			जो कोई देहि सत पर पाया । सुनि के काल करसि के आया । ६८४ ।			
			ब्रहा मंत्र कहा जो आई । इन्हकार सत छोड़ा बहु जाई । ६८५ ।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
गन गंधर्व सब आनि बोलाया । त्रियदेवा मिलि मंत्र सुनाया । ६८६ ।	नृप हरिचन्द्र सत बहु ठाना । इमि करि इनकर मरदहु माना । ६८७ ।	साखी - ६८	आवहिं जम दागा करी, कांध जनेउ डारि ।	छल बल सत छोड़ाई हैं , बूझहु वचन हमारि ॥	॥ चौपाई ॥	चिन्हिहो जम तेहि निकारी । इमि करि वचन जो बोलि विचारी । ६८८ ।
सत्य पुरुष सत नाम जो अहई । इमि करि प्रेमहृदय निजु गहई । ६८९ ।	सत्य पुरुष के सुमिरन करि हो । एहि व्रत सत निस दिन धरिहो । ६९० ।	मिथ्या बूझहु जानि यह सतवानी । सत वचन करिहो पहचानी । ६९१ ।	इमि नहिं होइहैं तुम जिवहानी । जिन्ह सत सुकृत गुन पहचानी । ६९२ ।	नृप कहा सुनि लीजै स्वामी । सब विधि तुम हो अंतरजामी । ६९३ ।	हम नर तन तुम सुबुधि सुजाना । अविगति तुम सब पहचाना । ६९४ ।	हम नहिं गमि यह कीन्ह विचारा । काल दगा हमरे गृह डारा । ६९५ ।
तुम्हो कहे गमि मोही भएउ । इमि करि काल दगा तब ठएउ । ६९६ ।	जो तुम कहेउ मेरो मन माना । सत पुरुष के करिहौं ध्याना । ६९७ ।	साखी - ६९	माम नीके विवेक विचारि के , काल चीन्हायो संत ।	वेद विमल मम गुरु कहेव , यह सतगुरु का मंत ॥	चौपाई	नृप सुनो श्रवन चितलाई । गुन ऐगुन विबरन बिलगाई । ६९८ ।
माया ज्ञान है संगम शरीरा । बुद्धि माया इमि सकल शरीरा । ६९९ ।	जीव शिव बीच माया अहई । जैसे कनक हीरा में लहई । ७०० ।	नीर छीर दोउ संश्रित अहई । इमि मराल दोउ विबरन करई । ७०१ ।	संसे काल शरीर में अहई । बीखम काल दुरिसे दहई । ७०२ ।	बिखम काल जो बसे शरीरा । सोतन तेजि रहे नहिं थीरा । ७०३ ।		
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
माया भक्ति ज्ञान निरुवारी । शिव सक्ति विच ज्ञान सुधारी १९००४ ।	छीर से नीर इमि लेत निकारी । विलगि भयो सब बुधि बिकारी १९००५ ।	सूरज तेज आरसी में आवै । विषम काल दूर से घावे १९००६ ।	जौं एह अग्रि मकुर में रहई । रैन बीते परिआरी जरई १९००७ ।	साखी - १००	संशय काल शरीर है , विषम काल है दूर ।	इमिकरिभान मकुर में आवै, अनल रहे भरिपूर ॥
				छन्दतोमर - २४	नृप सुनु वचन विचारी, इमि जम फंद सभारी ॥	इमि बुधि करिहैं थोर, जिमि बांधि लेके चोर ॥
					इमि अगम निगम संभारि, जनि जाहु सरबस हारि ॥	परि पंच बहुत विचारि, तुम गहो ज्ञान सुधारि ॥
					जम चिन्हि होतेहि भाव, सब करहिं अविगति दाव ॥	तुम बुधि लीहैं छीन, इमि अवटि जल विनुमीन ॥
					तुम सुत अब संग नारि, इमि सासना बहु डारि ॥	कहि सत छोड़ सुभाव, इमि राखू हमरो भाव ॥
					इमि दहि गृह औमाल, सब करहिं बहुत विहाल ॥	जम दर्द कछु नहिं जानि, तुहिं सत करिहैं हानि ॥
					तुम निरख निज सतनाम, सब होत पूरो काम ॥	सत सांच मइल न होए, सब भर्म जात विगोए ॥
					जम धोती तिलक बनाए, जनेव सुंदर नाए ॥	ब्रहचज बहुत अनूप, इमि काल करिहैं रूप ॥
					तुम गहो सत संभारि, नहिं जाहु भौजल हारि ॥	छन्दनराच - २४
					करो विचारंग सत सुधारंग, धार चीन्हों जम इमि आवै ॥	करि जम सासन छतिसो आसन, बसन छीने तन दुख पावै ॥
					करि सब भंगा दुख दे अंगा, गर्व बोले तन दुख दावे ॥	इमि तनदहिहैं कछु नहिं लहिहैं, लाई लवरि तन दुख आवै ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - २४			
सतनाम			गहिहो सत संभारि , जम सासन तन इमि करे ॥		सतनाम	
			भौजल लहरि संभारि , अमर लोक के जाईहो ॥			
			चौपाई			
सतनाम			तुम धन धन सत गुरु हितकारी । कहेव अगम सब निगम विचारी १९००८।		सतनाम	
			तुम वचन इमि सब हम जानी । किमि करि होइहें भवजल हानी १९००९।			
सतनाम			उपदेश दीन्ह यह सब तुम आई । धन्य भाग दरसन तुम पाई १९०१०।		सतनाम	
			तू दृष्टि धन दया सरूपा । हम चिन्हा तू अवि गति रूपा १९०११।			
सतनाम			इमि करि चलेव सभै समुझाई । गहि चरन पद परसेव आई १९०१२।		सतनाम	
			मृदु बोलेव इमि वचन विचारी । अंमी प्रेम यह तत्व सुधारी १९०१३।			
सतनाम			इमि करि चलेउ जो पंथ सुधारी । मगु में मगन होए पगु डारी १९०१४।		सतनाम	
			बासर बीते रैनि चलि आई । बैठे निजु तहां थए बनाई १९०१५।			
सतनाम			गुन औ ज्ञान ध्यान लौ लाई । होत प्रात इमि चले दुराई १९०१६।		सतनाम	
			कीन्हों तत्व चलै वोहि देशा । मिले कोई जन देहिं उपदेशा १९०१७।			
			साखी - १०१			
सतनाम			चले सुरति चित चेत करी, नग्र पहुँचे जाय ।		सतनाम	
			राजा रानी दुबो गत भए , फिर राजबहुरिके पाय ॥			
			चौपाई			
सतनाम			किछु दिन बीते नग्र महं जाई । वटिक वाट तहां टिकेव बनाई १९०१८।		सतनाम	
			नग्र लोग दरसन करि जाई । है कोई सिद्ध यहाँ चलिआई १९०१९।			
सतनाम			नृप से सब मिलि कहा बुझाई । दरसन करि प्रसाद बनाई १९०२०।		सतनाम	
			आए नृप सब लोग समेता । दरसन कीन्ह प्रेम निजु हेता १९०२१।			
सतनाम			मंत्री नृप से मंत्र सुनएउ । राज कुमार निकलिएक गएउ १९०२२।		सतनाम	
			सहस्त्र वर्ष की है यह बाता । चीन्हो नीके लगिहें तू भ्राता १९०२३।			
सतनाम			दरसन करो चलो गृह आई । अस्थित होए सब बैन बुझाई १९०२४।		सतनाम	
			ले लिआई महल में गएऊ । बहुत भांति प्रसाद करेऊ १९०२५।			
सतनाम			तनिक मोह तब तन में अएऊ । राजा रानी गत दुओ भएऊ १९०२६।		सतनाम	
			75			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मम दासी सोउ मरि गएऊ । दरसन बहुरि भेट नहिं भएऊ ॥ १०२७ ॥	मम माता प्रीति बहु जानी । सोके मरि गयो मीन बिनु पानी ॥ १०२८ ॥	साखी - १०२	नृप समेत संग करी , बैठि महल में जाय ।	निज-निज अर्थ विचारि के , कहो वचन समुझाय ॥	चौपाई	
राजा रानी हम से कहऊ । सुकृत बहुत विवेक गएऊ ॥ १०२९ ॥	कीन्हो त्याग राज नहिं माना । इमि करि सबसे भए बेगाना ॥ १०३० ॥	अब जनि इमि करि रहो छपाई । बहुत चीन्हार चीन्हे तुम्हें आई ॥ १०३१ ॥	मम जानों सब अर्थ तुम्हारी । अबनिजु चीन्हेव हृदय विचारी ॥ १०३२ ॥	राजा मरि गवो सपना कहेऊ । हस्ति को तन जग में पयऊ ॥ १०३३ ॥	मैं सतगुरु के चीन्हे ना पाई । विप्र कथा कहि मोहिं बउराई ॥ १०३४ ॥	तुम चिन्हिहो सुकृत चित लाई । तुरतइ नर्क मोर मिटि जाई ॥ १०३५ ॥
यह सब राज कहेव विचारी । मानहु साहब कहा हमारी ॥ १०३६ ॥	हुकुम तोहार सदा चित धरिहों । औरि बात सभे परिहरिहों ॥ १०३७ ॥	सुमिरो सतगुरु प्रेम प्रसंग । कुमति काल सब होइहें भंगा ॥ १०३८ ॥	साखी - १०	ठाढ़ भए कर जोरि के , बोले मिर्दु वचन बनाय ।	दाया कीन्ह दर्शन दियो , दरद बुझै सब आय ॥	चौपाई
कनक सिंध बुझो चितलाई । त्रिया समेत भक्ति निज पाई ॥ १०३९ ॥	स्त्री पुर्ष एक मत करिए । एके मता दुनो मिलि धरिए ॥ १०४० ॥	होए जुगल तब भक्ति विरागा । तत्तु विचारि प्रेम निजु पागा ॥ १०४१ ॥	उठि के नृप भवन में गयऊ । रानी से निज अर्थ सुनएऊ ॥ १०४२ ॥	करहु भक्ति सतगुरु पद धरहू । इमि करि नर्क कबहुं नहिं परहु ॥ १०४३ ॥	जाके खोजे तत्तुं करि जाई । सो अपने गृह पहुँचे आई ॥ १०४४ ॥	राज काज सब उनकर अहई । गए त्यागि हम सब मिलि लहई ॥ १०४५ ॥
जो मैं कहों सुनों सब रानी । भक्ति बिना जम करिहें हांनी ॥ १०४६ ॥						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सब मिल कीन्ह जो मंत्र बुझाई । ऐसन भक्ति ना होखे राई १९०४७ ।	को निंदा जग सहिहैं जाई । किमि करि कुल करम बिसराई १९०४८ ।	साखी - १०४	सब रानी एक मत होय, नृप सों कहा बुझाय ।	को यह लाज नेवारिहैं , धरम करो जग आय ॥	छन्दतोमर - २५	इमि कहे वो तोमर छंद , सब रानी परो जम फंद ॥
सब जरन कहे मम साथ , इमि झूठि वचन अनाथ ॥	सब लोक लाज विकार, इमि परि जम के धार ॥	बहु सुधरि सुन्दरी सलोन , बहु व्यजन बिना लोन ॥	जब जात या तन छूटि, जम जीव लीन्हें लूटि ॥	जिमि पान फूल रस भोग, सब अनंत व्यापहिं रोग ॥	इमि भक्ति बिनु जम जाल , जम मारु बान बिसाल ॥	गुन कवन तुममें नीक, इमि भक्ति बिना फीक ॥
सुकृत चिन्हुं चितलाय, अहिबात जुग जुग पाय ॥	इमि जन्म बहुत अनूप , फिरि परे भवजल कूप ॥	इमि भूखन बसन संवारि, फिरिफिरहुतनहिंउघारि ॥	इमि स्वान स्वानिन संग , गुन भक्ति बिना भंग ॥	इमि चंदन चचें उचारु , सब खाक तन मिलु हारु ॥	करो अमर लोक वास, नहिं जात जम की त्रास ॥	गुन ग्यान गहु निहचित, तेजु मोह भर्म अनीत ॥
छन्दनराच - २५	जम धरिहिं झुलाई नर्कहिं डारहि, इमि करि छेकिहैं किमि जइहो ॥	छेकिहैं नव खंडा लिहैं जम डंडा , डगमग पंथ में किमि लहिहो ॥	बहुत भतारी खसम बिसारी , सर सूखे जल किमि पइहो ॥	मीन मासु विकारा सोजम द्वारा , त्रिक्शन धार तहां वहिहो ॥		
77						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - २५			
सतनाम			नृप हारे बहु भांति , त्रियाकुमतिसब कालतन । कहत बीते सम राति , उदेभान दिन आइया ॥ ॥ चौपाई ॥			सतनाम
सतनाम			सोरह रानी संग सब रहई । भक्ति भाव चित कोई ना धरई १९०४६।			सतनाम
सतनाम			बहु विधि वचन कहा समुझाई । नारि नीर नीचे चलि जाई १९०५०।			सतनाम
सतनाम			नाम निर्मल नहिं गहे अभागी । निस दिन दाग कुमति ऊर लागी १९०५१।			सतनाम
सतनाम			रानी एक विलगि ओहिं रहई । कबहूँ नहिं नृप प्रीत ओहि करई १९०५२।			सतनाम
सतनाम			बारह वर्ष ओहि रहे अनाथा । बिनु पिया प्रेम किमी होन्ह सनाथा १९०५३।			सतनाम
सतनाम			कनक सिंघ भवन में गयउ । बहुत प्रेम करि सादर कोएउ १९०५४।			सतनाम
सतनाम			सेज सुन्दर यह दीन्ह संवारी । लेई चंवर सिर ऊपर डारी १९०५५।			सतनाम
सतनाम			कही त्रिया तन दुःख किम आई । सूख गयो बदन नयन कुम्हिलाई १९०५६।			सतनाम
सतनाम			ओए रानी सब प्राण प्यारी । वा में कौन दुःखित है नारी १९०५७।			सतनाम
सतनाम			कोई नहिं दुखी सुखी सब अहई । बीना भक्तिगुन सब कुछ बहई १९०५८।			सतनाम
			साखी - १०५			
सतनाम			सब रानी चित हितकरी, तुअ चरण कमल लवलीन । जब हीरा घन बाजिया , भया चुनी तब भीन ॥ चौपाई			सतनाम
सतनाम			कर जोरि बचन जो बोली विचारी । मैं दासी बोए रानी पियारी १९०५९।			सतनाम
सतनाम			दया कीन्ह हमरे गृह आई । जो कछु कहो गहों चितलाई १९०६०।			सतनाम
सतनाम			सुकृत कहा नारी एक आवे । होए जुगल पर्म पद पावें १९०६१।			सतनाम
सतनाम			सब गुन त्रिया भक्ति जो जानी । इमि करि कही पाटकी रानी १९०६२।			सतनाम
सतनाम			पहि रहु अभरन बसन संवारी । तुम मेरो निज प्राण पियारी १९०६३।			सतनाम
सतनाम			नृप भूखन सब दिन्ह पहिराई । सारी सेत सुगंध सोहाई १९०६४।			सतनाम
सतनाम			ऐन छोडि अंजीर में आई । रानी सब मिलि देखहिं धाई १९०६५।			सतनाम
सतनाम			एत्रिया तौं अजगुत कीन्हा । सब के मानन मरदि के लीन्हा १९०६६।			सतनाम
सतनाम			कुल की गारी लाज नहिं तोरे । चलि पतित हुए नृप कर जोरे १९०६७।			सतनाम
सतनाम			प्राण मति अस बोलि विचारी । धन सोई कुल भक्ति पियारी १९०६८।			सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	78	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १०६			
सतनाम			तुम परद के मह सुंदरी , पान फुल रस भोग।			सतनाम
			हम बिरहिनि पिय प्रेम प्रेम संग , सदा करो इमि जोग ॥			
			चौपाई			
सतनाम			चली तुरंत तहां पगु ढारी । सत्त नाम तहां आसन धारी	१९०६६।		सतनाम
			चरन छुई बहु विनय विचारी । नृप बोले यह दासी हमारी	१९०७०।		
			दासी सोई भक्ति जो करई । बहु कुल आगरि नर्क में बहई	१९०७१।		सतनाम
सतनाम			दीन्ह प्रसाद जो तत्व विचारी । दुवो जुगल रहु भक्ति सुधारी	१९०७२।		
			सत सुकृत गहिहो चित्त लाई । भव की भर्म सभे मिट जाई	१९०७३।		सतनाम
सतनाम			तुम कुल लायक सो कुल नीका । सब विधि काम करो तुम जीका	१९०७४।		
			अमरपुर ले तोहीं बसइहों । भवसागर के दाग मिटइहों	१९०७५।		सतनाम
			धन तुम प्रेम प्रीति निज लागी । सब रानी में भई सुभागी	१९०७६।		
सतनाम			बिना भक्ति भवन में बहहीं । भव सागर में दुख सब सहंही	१९०७७।		सतनाम
			नारि सोई पिया प्रेम उपासी । सत गुरु प्रेम सदा गुन दासी	१९०७८।		
			साखी - १०७			
सतनाम			सोई सोहागिनि प्रेम रस, पिया पथ चले बिचारि ।			सतनाम
			परदे केरि सुंदरी, भौ भर्महिं गात उधारि ॥			
			चौपोई			
सतनाम			शिव सक्ति होय जुगल विरागी। प्रेम जुक्ति निजु रहु अनुरागी	१९०७९।		सतनाम
			हो समजुक्ता गृहि संजोगी । सत्तनाम निजु बिरह वियोगी	१९०८०।		
			बारह वर्ष इमि हम तप किएऊ। तप के किए भक्ति निजु अएऊ	१९०८१।		सतनाम
सतनाम			हम तौं जोगिनि जोग संभारी । तन मन धन तुम्हारे परवारी	१९०८२।		
			जोगिनि होय के जोग सुधारी । मम जीव के तुम करो उबारी	१९०८३।		सतनाम
सतनाम			नृप के संग अहे सब रानी । तेहि गृह जाय रहो तुम जानी	१९०८४।		
			राजा वचन कहा कर जोरी । औरी त्रिया सब बुधि की थोरी	१९०८५।		सतनाम
			यह जोगिनि हम जोग जो जानी । प्रेम जुक्ति सत यह ठानी	१९०८६।		
सतनाम			सुत के राज तिलक यह दीहों । निस दिन प्रेम भक्ति गुन गैहों	१९०८७।		सतनाम
			सुकृत धन धन कहा पुकारी । धन नृप तुम हो धन्य तुम नारी	१९०८८।		
			79			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

साखी - १०८

करो भक्ति गृह जाए के, रानी लेहु लीआए।

सो जीव जम से वाचिहैं, सतनाम गुन गाए॥

छन्द तोमर - २६

धन धन्य साहब मोर, नहिं वचन करिहों भोर॥

सतनाम इमि गुन गाए, सब द्वंद बंद बिहाए॥

तुम चरण मम लौलीन, सब पाप कीन्हो छीन॥

इमि ज्ञान सत गुर पाए, सब त्रीबिध ताप नसाए॥

भव भर्म जात ओराए, इमि मिलेव दर्शन आए॥

धन भाग मम यह जानि, जो पदुम पद पहचानि॥

इमि नाम तरनी पाए, नहिं बुड़े भव जल आए॥

सत संग है सुख सार, अमि बैन प्रेम अधार॥

छप लोक छापा दीन्ह, तिनि लोक से है भीन॥

सब दहेव दुर्मति आए, इमि भाग दरशन पाए॥

गुरु ज्ञान अगम सरूप, सब भएव निर्मल रूप॥

सब कर्म काटेउ आई, निज प्रेम पारस पाई॥

इमि कनक कुन्दन हंस, तेज राज पद गुण वंस॥

मिला मूल महिमा सार, इमि वांचिया जमधार॥

भयौ आनन्द मंगल मूल, सब छूटा दुविधा सूल॥

छन्दनराच - २६

गुन कहा विचारा भवजल पारा, धरि चिन्ह सत गुरु पाई॥

चरन सनीपा निर्मल रूपा, निर मोलिक का गुन गाई॥

दया सरूपा अविगति रूपा, पद परिचय महपति पाई॥

सत की तरनी जलनहिं भरनी, बरनी गुन सब गति आई॥

सोरठा - २६

विनय कीन्ह कर जोरि, सब भव भ्रम नसाइया।

विमल मति भयो मोर, धन्य साहब दर्सन दियो॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सतजुग में सत शब्द विचारी। राजा रानी ग्यान सुधारी।१०८६।	सतनाम	सतनाम उन्हि गहेव सुधारी । भवजल से तोहि लीन्ह उबारी।१०८७।	सतनाम	अवरि जहाँ तहाँ दीन्ह उपदेसा । सत्य पुर्ष का कहा संदेसा।१०८८।	सतनाम
सतनाम	तन के त्यागी गोप होय गयऊ । फिरि निज जन्म राज गृह पयऊ।१०८९।	सतनाम	रहेवो गोप प्रगट नहि भएऊ। एक जनम ऐसे विति गयऊ।१०९०।	सतनाम	जोग जुक्ति सब चित में राखा । काहु से ज्ञान प्रगट नहिं भाखा।१०९१।	सतनाम
सतनाम	फिरि त्रेता महं कीन्ह विचारा । या तन त्यागी लेऊ अवतारा।१०९२।	सतनाम	राजा रानी जुगल भए जाई। उन गृह जाय लेउ मुक्ताई।१०९३।	सतनाम	धर्म सेनी राजा कर नाऊं। तेहि गृह जाय प्रगट गुन गाऊं।१०९४।	सतनाम
सतनाम	गर्भ बास महं पहुँचेव जाई । मास दस उहाँ ध्यान लगाई।१०९५।	सतनाम	साखी - १०६	सतनाम	पूजा दस मांस इअह, जन्म भया तब आय।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	आनन्द मंगल प्रेम रस , इमिकरि सबगुन गाय॥	सतनाम	जन्म सुफल सुदिन सब जानी, आनंद मंगल कहत बखानी॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	भवो सुफल सुभ दिन पुनीता, दान पुन्य सब करहीं बहूता॥	सतनाम	ब्राह्मण भाट गुन गावहिं आई, जो मागहिं तेहिं देहिं मगाई॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	कीन्ह छठि आर जो बीप्र बोलाई, घरी सोचाए सब विहित बनाई॥	सतनाम	गनेउ सुदिन सब घरी सुधारी, करु नामे कहि नाम उचारी॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	पीयत छीर मातु पह जानी, बालक रूप सभे सुख मानी॥	सतनाम	बोलेउ बैन सुनेउ सब जानी, मातु पिता सुख बहुत बखानी॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	बालक से इमि भएव सयाना, सब निजु बैन कहन के जाना॥	सतनाम	इमी करि भयऊ सुबुधि सुजाना, भव ज्ञान गमि करो बखाना॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	नृप धर्म सेन बहु ज्ञाता अहई, संत मंत छोड़ि दुजा न कहही॥	सतनाम	साखी - ११०	सतनाम
सतनाम		सतनाम	संत मंत एह नीस दीन, करहिं विवेक विचारि ।	सतनाम	दया धर्म चित राखहीं, करहिं भक्ति अनुहारि ॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	81	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	मीन मासु बोहि गृहि नहिं जाई । रानी नृप से कहा बुझाई	19066।	सतनाम	पाप छोड़ि धर्म करू जाई । एहि विधि रानी कहा बुझाई	19900।	सतनाम
सतनाम	राजा कहे धर्म हम कीन्हा । पाप से पंथ सभे छाड़ि दीन्हा	19909।	सतनाम	नृप रानी सुबुधि सेआनी । दाया भक्ति नेति दिल ठानी	19902।	सतनाम
सतनाम	भवो आनंद मोहि प्रेम सुखेता । राजा रानी पुन्य समेता	19903।	सतनाम	मम किछु वचन माता से कहेउ । हम तुम्हें चीन्हा हमें नहिं चीन्हेऊ	19908।	सतनाम
सतनाम	पूरा कृत मम तुम गृह आई । बहु विधि ज्ञान कहा समुझाई	19905।	सतनाम	तुम मम ज्ञान चीन्हा चित लाई । नृप नहिं हृदय भक्ति कछु आई	19906।	सतनाम
सतनाम	तुम माता चित भैव वैरागा । कीन्हों जोग भोग सब त्यागा	19907।	सतनाम	निर्मल ज्ञान गहा चित लाई । सतनाम निजु प्रेम लगाई	19904।	सतनाम
सतनाम	साखी - 999					सतनाम
सतनाम	राजा तन के त्यागी के , कुंजल धरेव शरीर ।					सतनाम
सतनाम	विप्र कहे जग भर्मेउ, सोमत रहा न थीर ॥					सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	कुंजल से तब लीन्ह उबारी । दया कीन्ह सत पुर्ष संभारी	19906।	सतनाम	तुम मानुज ते मानुज तन पैएऊ । पाप ताप तन बहुत ना रहेऊ	19990।	सतनाम
सतनाम	सब के त्यागी नर्ग तेजि गएऊ । तुम के मोह सोग तन भएऊ	19999।	सतनाम	सोके सो तन त्यागेहु प्राणा । इमि नहि पहुँचेउ लोक ठेकाना	19992।	सतनाम
सतनाम	हो तुम कवन कहो समुझाई । कवन लोक से तुम चलि आई	19993।	सतनाम	आदि अन्त सब कथा सुनावहु । छुटे भर्म मोह बिल गाबहु	19998।	सतनाम
सतनाम	जो तुम कहो सो कहो विचारी । किमि कारन जग में पगु ढागी	19995।	सतनाम	किमि कारन हमरे गृह आई । सो सब अर्थ कहो समुझाई	19996।	सतनाम
सतनाम	जमु दीप जम का थाना । बहु विधि पढ़े सो वेद पुराना	19997।	सतनाम	निरंजन निरखि सभो गुन गाई । आदि पुरुष की मर्म ना पाई	19994।	सतनाम
सतनाम	साखी - 992					सतनाम
सतनाम	छप लोक में मम रहेउ, सदा पुरुष के पास ।					सतनाम
सतनाम	तीन लोक जम लुटिया, कोईनीमरी सकेनहिंदास ॥					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	प्रथमहिं सत जुग तुम ग्रीहि ऐऊ । विमल प्रेम निजु सतगुन गुन गएऊ । १९१६ ।	सतनाम	तुम गृह पंडित वेद विचारी । नुप नहिं मानेहि कहा हमारी । १९२० ।	सतनाम	त्यागेव मातु पिता गृह नारी । सभै त्यागी चलु पंथ सुधारी । १९२१ ।	सतनाम
सतनाम	धन भाग जो मम गृहि एहऊ । पक्षिली प्रीति जानि सब कहेऊ । १९२२ ।	सतनाम	अमर लोक सुख कैसन रहेऊ । इमि करि जानि हमसे कहेऊ । १९२३ ।	सतनाम	अमर रहेउ कहाँ मरे ना कोई । भवसागर सब संसे विगोई । १९२४ ।	सतनाम
सतनाम	तहां किसान करे नहिं खेती । भोजन पोषन पावहिं सेति । १९२५ ।	सतनाम	अमर तहां सुंगध सोहाई । सेत सदा छवि इमि करि पाई । १९२६ ।	सतनाम	अति बेलास सब सुख के खानी । तहां ना राव रंक कोई जानी । १९२७ ।	सतनाम
सतनाम	तहां ना बरन भेख सब अहई । अबरन हंस सदा सुख लहई । १९२८ ।	सतनाम	साखी - ११३	सतनाम	इमिकरिकहेवविलाससब , विर्ग से पदुम प्रकाश ।	सतनाम
सतनाम	सत गुरु ज्ञान विवेक करी, इमि जावहि कोई दास ॥	सतनाम	छन्दतोमर - २७	सतनाम	इमि कहेव तोमर छंद, तिनि ताप त्रीमिरि रंद ॥	सतनाम
सतनाम	वहां ब्रहा विमल विरोग, नहिं पाप पुन करि भोग ॥	सतनाम	नहिं चारि खानि है लक्ष, वहां वरन वादिन पक्ष ॥	सतनाम	वहां जरा मरन ना जानि, सब हंस अमरा खानि ॥	सतनाम
सतनाम	नहिं बीज खेत किसान, सब सहज अम्रित पान ॥	सतनाम	वहां बसन बासु सुगंध, नहिं टुट फाट नारंध ॥	सतनाम	वहां पलंग पुहुप सो छाज, वहां हंस बंस सो राजू ॥	सतनाम
सतनाम	वहां चवर अविगति चारु , सब फिरत बहु विधि ढारु ॥	सतनाम	नहिं सोग सागर मंत, सब ब्रहम अगम अनंत ॥	सतनाम	वहां लोक बहु विस्तार , इमि भुमि भार सो पार ॥	सतनाम
सतनाम	वहां गरज घन नहिं घोर, नहिं पवन बुंद झकोर ॥	सतनाम	नहिं तड़कि तड़पे जाए , नहिं घात अविगति पाए ॥	सतनाम	नहिं वेद विद्या चार , षट कर्म नाहीं विकार ॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम	83	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नहिं भर्म भाव निरंत , नहिं जोग जोगिनि मंत ॥						
इमि कहे सब सुख जानि , सत ब्रह्म विमल बखानि ॥						
छन्दनराच - २७						
करो विचारा भव जल पारा, तिगुन धार नहिं बहिअं ।						
नहिंकुमति विकारा यह संसारा , सर्व स्वर्ग से भीन रहिअं ॥						
गहो अंकारा तेजि निरंकारा, रंमि रहा सब देह धरिअं ॥						
ओए सत करतारा तिर्गुन पारा , त्रिय देवा सो भिन कहिअं ॥						
सोरठा - २७						
वह अविगति अलेख, यह लेखा जग जन्म है ॥						
कोई ज्ञानि करे विवेक, तीनि लोक के बाहरे ॥						
चौपाई						
रानी प्रेम पुलकित तन भएउ । धन्य ज्ञान निजु अर्थ सुनैउ १९९२६ ।						
यह निज अर्थ नृप से कहेउ । अमर लोक से सुत यह अयउ १९९३० ।						
प्रथम जन्म इमि कहेउ विचारी । तुमहिं पुरुष हम त्रीया तुम्हारी १९९३१ ।						
नृप कहा इमि सभ सुख धामा । सब विधि आनंद पूरन कामा १९९३२ ।						
धन्य भाग सदा फल भएउ । पुरुष अंस हमरे गृह अएउ १९९३३ ।						
जो तुम कहो सो करों विचारा । बहुरि ना जइयों जम के द्वारा १९९३४ ।						
बहुत नष्ट कष्ट जम कीएउ । उलटि पलटि दुख दारुन दीएउ १९९३५ ।						
मारे जारे देइ अवतारा । भरमि भवन दुख अहे विकारा १९९३६ ।						
पुर्ष वचन मम धरेउ करारा । तुम गृहि आए लीन्ह औतारा १९९३७ ।						
छोड़हु मोह कोह विस्तारा । पुर्ष नाम निज करो विचारा १९९३८ ।						
साखी - १९४						
ना काहु का गुरुआ, ना सिख काहुके कीन्ह ।						
कान लागे तेहि गुरूकही , हम नाम पुर्ष का दीन्ह ॥						
॥ चौपाई ॥						
हम हैं सुकृत मम जीव अहई । लेहु उपदेश जानि मम कहई १९९३६ ।						
लीन्ह परवाना प्रीति मम जानी । बहुत प्रेम रस अमृत सानी १९९४० ।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	सत्तनाम	निजु गहो पुनिता । तेजहु पाखांड भर्म अनिता १९१४१।				
सतनाम	उठत बैठत दृष्टि लगावहू । निज मुख प्रेम सत गुन गबहू १९१४२।					सतनाम
सतनाम	तन के स्वामी अमर पुर जइहो । एहि भवसागर बहुरि ना अइहो १९१४३।					सतनाम
सतनाम	बहुत विलास तहां करिहो जाई । इमि करि राज अमर पद पाई १९१४४।					सतनाम
सतनाम	परआतम आतम पहचानिहो । दयादर्द दिल निस दिन धरिहो १९१४५।					सतनाम
सतनाम	परजा धन कबहीं नहिं हरीहो । यह सब बात जानि परि हरिहो १९१४६।					सतनाम
सतनाम	राज मद गर्व जनि करहू । संत मंत गुन इमि करि धरहू १९१४७।					सतनाम
सतनाम	हंस दसा गुन सब सुख पावे । काग कुबुधि निकट नहिं आवे १९१४८।					सतनाम
		साखी - १९५				
सतनाम	कागा कछिय भेष धरि , नाचि काछि गुन गाय ।					सतनाम
सतनाम	चोर साहु पहचानिहो, प्रेम भक्ति लव लाय ॥					सतनाम
		चौपाई				
सतनाम	बहुत प्रेम करि तत्तु विचारी । निज मुख सुनहु वचन हमारी १९१४९।					सतनाम
सतनाम	हमके इमि करि जनि परिहरहू । दया दृष्टि यह निसदिन करहू १९१५०।					सतनाम
सतनाम	यहीं अदल जो करो विचारी । यहीं शतशब्द निरुआरी १९१५१।					सतनाम
सतनाम	यहीं सबकिछु करो विचारा । इमि करि बुझिहैं शब्दहिं सारा १९१५२।					सतनाम
सतनाम	हमके मोह सोग जनि देहू । नृप के वचन मानि निज लेहू १९१५३।					सतनाम
सतनाम	इमि करि मोह त्यागेव प्राणा । इमि नहिं पहुंचेवो लोक ठेकाना १९१५४।					सतनाम
सतनाम	सकलो गुन गृह अहे अनंदा । बीर्गसेउ कुमुदिनि दरसेउ चंदा १९१५५।					सतनाम
सतनाम	इमि करि दरस देहु दिन रानी । ललचेव लोचन प्रेम चहुंपाती १९१५६।					सतनाम
सतनाम	प्रवाह प्रेम रस विमल पुनीता । मैं बलिंजाव कहो गुन हीता १९१५७।					सतनाम
सतनाम	सदा दरस मम तुम गुन पाई । अवजनि बिलगिबिछुरि तुमजाई १९१५८।					सतनाम
		साखी - १९६				
सतनाम	नृप रानी कर जोरि करी, विविध कहा समुझाय ।					सतनाम
सतनाम	मिलत बिछुरत दुख अती, इमि दहेउअनलतनलाय ॥					सतनाम
		चौपाई				
सतनाम	करुना में तब बोले विचारी । मम हीत तुम सब विधि संवारी १९१५९।					सतनाम
सतनाम	फिरि फिरि जैहो ऐहों गृह माहीं । यह सत वचन कहो तुम पाहीं १९१६०।					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मुनि पंडित सब जग महं अहई । तासो ज्ञान भेद निज कहई । १९९१ ।	मम इह अदल करों प्रचारी । जोगी जति विविधि मत डारी । १९९२ ।	अहे वासीष्ट सृष्टि जग माहीं । इमि करि कहो ज्ञान तेहि पाहीं । १९९३ ।	मुनि मत तेजि ज्ञान जौ धरिहें । इमि करि नहिं भवसागर परिहें । १९९४ ।	विमल बेद इमि करहिं बखाना । अति प्रसिद्ध सृष्टि में जाना । १९९५ ।	इमि करि जानि जक्त में कहिहों । जे बुझे तेहि ज्ञान दिढ़इहों । १९९६ ।	मैं तो सत्य पुरुष के जानी । तेजि दे मोह राजा औ रानी । १९९७ ।
निस दिन ध्यान धरिहों चितलाई । मम हो निकट दूरि नहिं जाई । १९९८ ।						
साखी - ११७						
जो मैं कहों विवेक करी, सुनो श्रवन चितलाय ।						
संसे सकल बिसारहु, सत्य नाम गुन गाय ॥						
छन्दतोमर - २८						
सब तेजु संसे सूल, सत नाम गहु निज मूल ॥						
जहां सजल जल सुख कंज , मन मगन लोचन अंज ॥						
मिर्ग मीन खग पहचानि, करु तरक तरनी जानि ॥						
भव भर्म भवजल थीर, धय धरनी सोखेव नीर ॥						
इमि वार पार नाभेद, इमित्रीविधि तापनिखेद ॥						
भवो ब्रह्म पुरो ज्ञान, दीवि द्रीष्टि इमि पहचान ॥						
झरि झरेव निर्मल रंग, घन घटा बहुत तरंग ॥						
इमि सर्व स्वर्ग है सेत, इमि चंद सुरगन जेल ॥						
अदेख देखु नीरंत, तेजि मिर्ग मदको मंत ॥						
इमि घ्रानि घन तेहि पास, सब भर्मित दुंढत घास ॥						
जब गुरु गमि होए ज्ञान, सुगंध गंध पहचान ॥						
इमि दृष्टि सृष्टि समाय, सब रूप एक छवि छाय ॥						
तेजि आवा गबन के सोक, इमि अमर पुर लोक ॥						
सत कहे सत गुरु जानि, इमि परद पद पहचानि ॥						
यह मिर्था मत नहिं होए, सब भर्म जात बिगोए ॥						
86						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - २८			
सतनाम			सत विचारं कहत पुकारं , तारं भवजल इमि तरिए ॥		सतनाम	
			हंस उबारं भौ भर्म टारं , तरनी तिरछन सो धरिए ॥			
सतनाम			प्रेम हुलासं सत गुरु पासं, संसे सागर सब दहिए ॥		सतनाम	
			परम पुनितं सत गुरु हीतं, चिंता तन कि दूरि करिए ॥			
			सोरठा - २८			
सतनाम			सुनो सुमति इमि संत , सतगुरुदायादरसनदीयो ॥		सतनाम	
			सोइ विमल निज मंत, ममिता मंद भर्म भागिया ॥			
			चौपाई			
सतनाम			चलि भवो पंथ संत मत कीएउ । पुछे वचन ज्ञान किछु कहेउ ॥११६६॥		सतनाम	
			करे प्रेम वचन किछु कहिए । नहिं तौ मौन दसा होए रहिए ॥११७०॥			
सतनाम			पहिले बोलव साखी दुइ चारी । ज्ञानी मिलहीं तो लेहिं विचारी ॥११७१॥		सतनाम	
			इमि करि देखव संत मुनि जोगी । राव रंक अब गृहि संजोगी ॥११७२॥			
सतनाम			संश्रीत काल सोई तन अहई । जहां नहिं सत गुरु मत एह लहई ॥११७३॥		सतनाम	
			मोह दुर्म लता लपटाना । जरी जिमिसोर सखा बहु जाना ॥११७४॥			
सतनाम			काटेव दुर्म जरी जिमि रहेऊ । भए वेचिन्ह चीन्ही नहिं पैऊ ॥११७५॥		सतनाम	
			मोह विटप ऊर जरि जिमि लागा । बहु विधि भांति कथे अनुरागा ॥११७६॥			
सतनाम			कुमति कांट बांट सब रुंधेऊ । इमिकरि कुमति प्रेम सब छीजेऊ ॥११७७॥		सतनाम	
			कहे जो तन मन धन सब बारी । हृदय और मुख वचन संवारी ॥११७८॥			
			साखी - ११८			
सतनाम			हृदय विवेक मुखएककरी, कहे सो निर्मल ज्ञान ।		सतनाम	
			सो सत गुरु हित प्रेम रस, इमिकरि करो विख्यान ॥			
			चौपाई			
सतनाम			विविध मुनी जक्त में रहेऊ । ता सो वचन कबहीं नहिं कहेऊ ॥११७९॥		सतनाम	
			वाशष्टि सृष्टि इमि जग जेहिजाना । अति मरजाद निरप गुरु कैमाना ॥११८०॥			
सतनाम			वेद विमल मुनि बहुत पुनीता । करि खट कर्म पूजा नए नीता ॥११८१॥		सतनाम	
			दरसन कियो ताहि मम जाई । संग्रह माया सक्ति सोहाई ॥११८२॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
इमि करि बोध सभनि कर करहीं । निर्प लेहिं दीक्षा प्रेमनिजु धरही ॥११८३॥						
बोली वचन निजु मुनि से कहेऊ । माया ब्रह्म जीव की अहेऊ ॥११८४॥	सतनाम					
करता कवन कर्म केहि लागा । को है वेद विमल निज पागा ॥११८५॥						
को जप तप एह संजम करई । खाधि अखाधि कवन परिहरई ॥११८६॥	सतनाम					
को है काम क्रोध केहि कहई । को है आतम दुख नहिं सहई ॥११८७॥						
को है नर्क स्वर्ग के कर्ता । को है तीन लोक महं बरता ॥११८८॥	सतनाम					
साखी - ११६						
कहिए मुनि इमि बोध मम, दर्स देखा तुम्हे आय ।						
ग्रन्थ कथा इमि वेद मत, नृप तोहरो गुण गाय ॥						
सुनिको मुनि क्रोध तन भयऊ । ममिता बेइली ताही तन छएउ ॥	सतनाम					
तुम ज्ञाता वटु ज्ञान विचारी । इमि करि गर्व कीन्ह अधिकारी ॥						
महा मुनि हो तुम बड़ ज्ञाता । सीतल प्रेम तुम्हें तन राता ॥	सतनाम					
जिमि करि चंदन चर्चु सरीरा । वेद विमल गुन सीतल समीरा ॥						
कारन मन का तुम्हें न अहई । सदा पुनीत वेद मत कहई ॥	सतनाम					
जीव ब्रह्म बीच माया अहई । मेटि गव माया ब्रह्म तब कहई ॥						
खाधि अखाधि आतम यह कहेऊ । जीव के संग पांच एह लहेऊ ॥	सतनाम					
मन है काम क्रोध तेहि संगी । अनल वरे तन इमि करि अंगा ॥						
निंरकार अंकार ना अहई । जल थल वरति सभनि में रहई ॥	सतनाम					
सुख है स्वर्ग नर्क दुख कहई । तीन ताप तन व्याकुल रहई ॥						
साखी - १२०						
बूझहुविवेकयहज्ञानकरि, हमके पूछेहु आय ।						
कथे विरंचि वेद मत, सो गुन कहे बुझाय ॥						
चौपाई						
अदोइत ब्रह्म यह किमि करि कहई । आवत जात नर्क में परई ॥११८९॥	सतनाम					
माया बुधि तन से बिकारा । को यह मेटि मेटावनि हारा ॥११९०॥						
मन के काम क्रोध तुम कहई । मन अनन्त करता यह अहई ॥११९१॥	सतनाम					
काम ते बिंद भोग रस अहई । त्रिकुटी तेजि नीचे के बहई ॥११९२॥						
88						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
खाधि छोड़ि अखाधि जो खाई । कर्म पाप यह जीव के लाई ॥ १९९३ ॥	स्वर्ग नर्क तुम कहा विचारी । सुख है स्वर्ग नर्क दुख भारी ॥ १९९४ ॥	सो सुखतन रहे नहिं थीरा । उलटि पलटि भवसागर पीरा ॥ १९९५ ॥	निराकार अंकार विहुना । सो मत कवन वेद कह चीन्हा ॥ १९९६ ॥	ऐसे भर्म परहु भव जाई । करता चीन्हे पर्म पद पाई ॥ १९९७ ॥	वेद पढ़ा पर भेद ना जाना । विना भेद किमि करो बखाना ॥ १९९८ ॥	
			साखी - १२१			
			वेद हमारा भेद है, सुछुम वेद विचारि ।			
			रीग युग साम वेद पढ़ि ,बीर्खव ज्ञानभवहारि ॥			
			छन्दतोमर - २६			
			उपजि विनसि बहु वीर, धरि माया गर्भ शरीर ॥			
			इमि आवे जग में जाय, बहु रूप विविधि बनाय ॥			
			एइ धोखा धरि मुनि ध्यान, इमि पतन सांझ विहान ॥			
			घट कीन्ह करता जीव, यह माया मन है शिव ॥			
			तन छुटि परू छित राय, फिरि भवन भर में आय ॥			
			निरंकार निर्गुन आनि, इमि ठवर कीन्हों जानि ॥			
			बिनु गुन किमि करतार, इमि रचा किमि संसार ॥			
			यह पाँच और पचीस, गुन तीन मिलि तैंतीस ॥			
			वे अमर पुर्ख अमान, नहिं जोइनि संकट जान ॥			
			वे मरन जीवन ना संग , वे अजर अविगति रंग ॥			
			भग आए भवो भगवान, सब कहत मुनि गुन ज्ञान ॥			
			अदल ममिता जानि, समर्थ इमि करि मानि ॥			
			विवेक करहु विचार, यह तिर्गुन रूप संसार ॥			
			बोए तिर्गुन तेहै भीन, सतपुरुष करता चीन्ह ॥			
			मुनि तेजहु क्रोध विकार, इमि सत शब्द है सार ॥			
			89			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - २६			
सतनाम			सत विचारा भव जल पारा, परम तत्व सतगुन आवै॥		सतनाम	
			अहे अंकारा तेजु निरंकारा, निर्भय पद से इमि पावै ॥		सतनाम	
सतनाम			जीवत सो मुक्ता पाप ना भुक्ता, जुक्ता जन कोई ततु आवै॥		सतनाम	
			लेहु उपदेशा गहो संदेशा, संसे सागर निकुतावै॥		सतनाम	
			सोरठा - २६		सतनाम	
सतनाम			करहु विवेक विचारि, सतगुरु पद पावन करो ॥		सतनाम	
			भवजल जाहु ना हरि, अमर पुर अमृत पिवो॥		सतनाम	
			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			सुनो संत तुम मंत्र विचारी। त्रिगुन रूप भर्म में डारी ॥११६६॥		सतनाम	
			यह निजु ब्रह्म दूजा नहिं करता । इमि करि घटघट जल-थल बरता ॥१२००॥		सतनाम	
सतनाम			मारे ना मरे जारे ना जरई । या तन तेजि दूसर तन धरई ॥१२०१॥		सतनाम	
			रमे साभनि में अन्त ना पावै । निर्गुन रूप फिरि सगुन कहावै ॥१२०२॥		सतनाम	
सतनाम			दुख सुख जीव के ब्रह्म निरोगा। पाप पुन जीव करिहैं भोगा ॥१२०३॥		सतनाम	
			जीव के नर्क स्वर्ग यह अहई। जीव के मोह सोग तन दहई ॥१२०४॥		सतनाम	
सतनाम			जीव से माया विलगि नहिं आवै। तापर ब्रह्म लेप नहिं लावै ॥१२०५॥		सतनाम	
			निरा लेप निर्गुन निरंकारा । देह अंकार कर्मते न्यारा ॥१२०६॥		सतनाम	
सतनाम			आदि ब्रह्म ब्रह्मे यह कहेऊ। घट-घट ब्रह्म दूजा नहिं लहेऊ ॥१२०७॥		सतनाम	
			घट फूटे फिरि घट में जाई । बहु विधि सांच बना जग आई ॥१२०८॥		सतनाम	
			साखी - १२२		सतनाम	
सतनाम			पांच तत्व गुन तीन हैं, अब प्रकृति पचीस।		सतनाम	
			याते ब्रह्म भीन नहिं कहिए, रोम रहा जगदीस॥		सतनाम	
			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			करता घट में ब्रह्म कहाया। काहे के सिख गुरु कर लाया ॥१२०९॥		सतनाम	
			काहे के पाप पुन्य यह करई। काहे के दुख सुख तन में लहई ॥१२१०॥		सतनाम	
सतनाम			काहे के स्वर्ग नर्क की आशा। काहे के तप करि ज्ञान प्रकाश ॥१२११॥		सतनाम	
			शिव सति संग्रह का करई । काहे के जोग भोग मन धरई ॥१२१२॥		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	90	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	काहे के मातु सुत यह कहई । लघु अब दिर्घ का लहई । १२१३ ।	सतनाम	आदि ब्रह्म सब घट में बासा । काहे के होखे जमके त्रासा । १२१४ ।	सतनाम	काहे के काल कुबुधि यह कीन्हा । काहे के जम सासन कहि दीन्हा । १२१५ ।	सतनाम
सतनाम	ऐसन ज्ञान नष्ट कै जौहो । चौरासी में दुख बड़ पइहो । १२१६ ।	सतनाम	बहुत कर्म लीन्हों सिर भारा । किमि करि होइ हो भौजल पारा । १२१७ ।	सतनाम	पाप पुन्य दोउ लादु बनाई । जौं करहा सिर बोझ धराई । १२१८ ।	सतनाम
सतनाम	साखी - १२३					सतनाम
सतनाम	बहुत शिष्य तुम कीन्हों, दीन्हों मंत्र उपदेश ।					सतनाम
सतनाम	भरम कथेव सब जानिको, जम घरि पकरे केश ॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	तुम हो नींदक सभेनींदि डारी । तुम नहिं गुरु गमि कीन्ह विचारि । १२१९ ।	सतनाम	शास्त्र मत तुम सब कछु जाना । सो तेजि और करो विख्याना । १२२० ।	सतनाम	विविधि मुनि जक्त में भएऊ । तिर्गुन तेजि ब्रह्म नहिं कहेऊ । १२२१ ।	सतनाम
सतनाम	इमि करि सब मिलि कहा विचारी । प्रथम विरंची वेद मत डारी । १२२२ ।	सतनाम	आदि अनादि शिव बड़ ज्ञाता । मानेव वचन जो कहेव विधाना । १२२३ ।	सतनाम	जगमें सृष्टि विरंची गुन कहेऊ । जोगी जती यहि मत उएऊ । १२२४ ।	सतनाम
सतनाम	तीन दैव जग विदित प्रधाना । तुम ना कहो कवन मत जाना । १२२५ ।	सतनाम	चौकड़ी चारि जुग गत भएऊ । सत जुग त्रेता फिरि चलि ऐऊ । १२२६ ।	सतनाम	जोगी जति केते जग भएऊ । त्रीगुन तेजि ब्रह्म नहिं कहेऊ । १२२७ ।	सतनाम
सतनाम	इमि मत कहेऊ तुम सब ते न्यारा । दूजा ब्रह्म रचेव करतारा । १२२८ ।	सतनाम	साखी - १२४			सतनाम
सतनाम	आदि अंत मुनि सब कोई , कहेव ज्ञान प्रगास ।					सतनाम
सतनाम	वेद उलंघ तुम मत कहेव, कवन माने विश्वास ॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	सुनु मुनि वचन कहो सब जानी । आदि अंत ब्रह्म पहचानी । १२२९ ।	सतनाम	वेद जाल यह जग में भएऊ । बाझे मुनिजन निकल ना गएऊ । १२३० ।	सतनाम	तीन लोक जम जालिम अहई । वेद पार गुन निर्मल कहई । १२३१ ।	सतनाम
सतनाम	जोग जाप तप मुनि सब कहई । आवत जात रहट जल अहई । १२३२ ।	सतनाम	91			सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - ३०			
सतनाम			यह मन कर्मा बहु बुधि भर्मा, मर्म ना जानत को करता ॥		सतनाम	
			आप कर्म सो भारीसबविधि हारी, राह रोके जम किमि तरता ।		सतनाम	
सतनाम			मोह कम मारी कहत पुकारी, हारेव मुनि जग सो धरता ॥			
			स्वारथ लागी इमि जोग जागी, जग परचे करि बुधि बरता ॥			
			सोरठा - ३०			
सतनाम			करि पाखंड सब प्रीति, परचे बिना विकार है ॥		सतनाम	
			यह स्वारथ मुनि रीति, जम सासन आगे करे ॥			
			चौपाई			
सतनाम			कहे मुनि सुनो इमि संता । मम जानेव सतगुरु निज मंता ॥१२४०॥		सतनाम	
			मुनि मरजाद जो देउ मम डारी । नृप निंदा करि जग बहु गारी ॥१२४१॥			
सतनाम			यह खट कर्म छोड़ो सब पूजा । नृप नर कहहिं बाउर दूजा ॥१२४२॥		सतनाम	
			हृदय ज्ञान गहों चित लाई । बाहर यह मत कहो बुझाई ॥१२४३॥			
सतनाम			त्रिगुन पार ब्रह्म हम जानी । जप तप संजम मिथ्या मानी ॥१२४४॥		सतनाम	
			झूठ कहे संग्रह करि सोई । सांच बिना नर जात बिगोई ॥१२४५॥			
सतनाम			इन्द्र जाल जौं झूठ देखावे । सब के मन में सांचे आवै ॥१२४६॥		सतनाम	
			ऐसन चरित्र फंद मन डारी । एक सों अनंत कीन्ह विस्तारी ॥१२४७॥			
सतनाम			करता एक कर्म बहु भाएऊ । वेद पुरान सोई मत कहऊ ॥१२४८॥		सतनाम	
			बहु मत कहेऊ जक्त गुन हीता । मुनि सब जानेउ सोई पुनीता ॥१२४९॥			
सतनाम			स्वारथ संग्रह ज्ञान बिसारी । भयो विविध मुनि मत जग डारी ॥१२५०॥		सतनाम	
			साखी - १२६			
			सतगुरु ज्ञान चितहित करि, हृदय मम बिसवास ।			
सतनाम			दया समेत दरशन दिवो, चरन कमल की आस ॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			राजा मनु मनसा जब भयऊ । तेजि के राज तपस्या गएऊ ॥१२५१॥		सतनाम	
			भारजा भवन छोड़ि संग लागी । शिव सक्ति मिलि भवो अनुरागी ॥१२५२॥			
			93			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
इमि हठ निग्रह कीन्ह विचारी । कीन्ह तपस्या तन मन वारी ॥१२५३॥	सतनाम	त्रिभुवन तीन लोक जो बरता । सो मम गृहि यह जन्मे करता ॥१२५४॥	सतनाम	निसु बासर में यहि विचारा । भगवत भक्ति से होत मम बारा ॥१२५५॥	सतनाम	अस्ती सूख मेंद सुखि गएउ । तचा सूख प्राण तेहि रहेउ ॥१२५६॥
बोला ब्रह्म अकासे बानी । दीन्हों वर तोहि निश्चय जानी ॥१२५७॥	सतनाम	यह तन तेज दूसर तन धरिहों । तुम गृहि जानि जन्म मम रहिहो ॥१२५८॥	सतनाम	त्यागिन तन के मरि तब गएऊ । दूसर जन्म आनि तब भएऊ ॥१२५९॥	सतनाम	नृप दशरथ कौशिल्या भएऊ । भयो विवाह जुगल तब रहेऊ ॥१२६०॥
साखी - १२७						
कन्या तेहि गृह जन्मी , सुत जन्में नहिं आय ।						
राजा मन पछताव भय, मिर्था जन्म जग जाय ॥						
चौपाई						
द्वादस बर्खा निबर्सन भयऊ । सूक्ष्म जल धरती पर अयऊ ॥१२६१॥	सतनाम	उत्पति थोर बहु विर्ध न जानी । कलपत आतम दुख बहु आनी ॥१२६२॥	सतनाम	गुरु से जाय वचन तब कहेऊ । बहु विधिकलपि लोग सब रहेऊ ॥१२६३॥	सतनाम	भव निबरखन किमि करि जीवे । बहु विधि कष्ट प्राण इमि रोवे ॥१२६४॥
तब मुनि ऐसन बोले विचारी । करिये यज्ञ बहु विधि संवारी ॥१२६५॥	सतनाम	एक एक पत्र कनक कर करिए । तेहि में घृत मधू रस भरिए ॥१२६६॥	सतनाम	बहु प्रकार परसाद कराबहू । ब्राह्मण विश्नो नेवति जेवांवह ॥१२६७॥	सतनाम	जो आतम कोई पहुँचे आई । भाव से भोजन सभे कराई ॥१२६८॥
कीन्हो यज्ञ सब घृत पकवाना । बहु विधि भांतिन्ह सादर माना ॥१२६९॥	सतनाम	करजोरी सब से विनय विचारी । ब्राह्मण विश्नो नेवति उतारी ॥१२७०॥	सतनाम	निगम नेति मुनि विधि जो कहेऊ । यही भांति परसाद करएऊ ॥१२७१॥	सतनाम	
साखी - १२८						
मन वच कर्म नीति यह, दान मुन्य करि जानि ।						
भयो न बृष्टि पुहुमि पर, जल विनु सब की हानि ॥						
94						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
फिर नृप गए मुनि के पासा । पानि जोरि वचन परगासा । १२७२ ।	यज्ञ मैं कियो विविध बहुभांति । जेवहिं विप्र सुबुधि सुपाती । १२७३ ।	दक्षिना दे प्रदक्षिन कीन्हा । बहु विधि भांति प्रेम लव लीना । १२७४ ।	जल सीतल करि सीतल पिआयों । आतम पूजि विनय बहु लायों । १२७५ ।	वेद मरजाद गुरु वचन सुनाई । सो सब कियो विलम न लाई । १२७६ ।	सृष्टि वृष्टि बिनु किमि कर रहई । अन बिनु धर्म कवन यह कहई । १२७७ ।	सत जुग सात करे उपवासा । चलत फिरत रहे वचन प्रगासा । १२७८ ।
चौदह होए विकल भए रहेऊ । तन के त्यागी प्रान तब गएऊ । १२७९ ।	त्रेता चारि करे उपवासा । निज गहि भक्ति प्रेम परगासा । १२८० ।	अठवें कठिन विकट बड़ जो करई । जिमि पर देह प्रान कह खोई । १२८१ ।	द्वापर तीन उलघन जो करई । तन से प्रान जुदा नहि बहई । १२८२ ।	साखी - १२६	वहदिनजानिघटविकलभौ, इमिकरि प्रानहिं खोय ।	कलऊ प्रान अन में बासा, देखहु सबद विलोय ॥
छन्दतोमर - ३१	दुर भीक्ष बहु विधि डारि , सब विकल भौ नर नारि ॥	धन धर्म गयो एक साथ, सब कल्पी कहत अनाय ॥	होम यज्ञ बहु विधि कीन्ह, जल पुहुमि कछु नहि दीन्ह ॥	मरजाद वेद को हारि, इमि विप्र बहुत पुकारि ॥	हठ कीन्ह सठ सब लोग, बहु भांति कहि कहि जोग ॥	जग तपे तपसी जानि, सब वचन भै गयो हानि ॥
सब थाके कहत पुरान, इमि बीते साझ विहान ॥	जग लोग देवहिं गारि, सब कहत बात बिगारी ॥	सब विकल भौ सत हीन, नहिं आपदा कोई चीन्ह ॥	इमि प्रान सब कोई हारि, इमि खसत पुहुमि डारि ॥	95	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कहा नृप इमि सुनु चितलाई । इमि कारन तुम्हें आनि बोलाई १९२६४।	सतनाम	श्रृंगी ऋषि जौं अवध ले अवहू । तब तुम दर्ब खाय के पबहू १९२६५।	सतनाम	गनिका इमि हंसि बोली विचारी । महा मुनि ठगि हम डारी १९२६६।	सतनाम
सतनाम	जोगी जग में जो बड़ अहई । ता कर जोगि छिनि गुन लहई १९२६७।	सतनाम	देहु तरनी एक तुरंत मंगाई । आये घाट सब चरित्र बनाई १९२६८।	सतनाम	बहु विध बसन रंगिन मंगाया । जरद लाल औसबुज बनाया १९२६९।	सतनाम
सतनाम	तरनी चहुं दिस घोरि बनाई । ता विच गुल फुल जो लाई १९३००।	सतनाम	नकल वाटिका बाग बनाई । फल मेवा सब तामें लाई १९३०१।	सतनाम	अनवन चीज चित्र बहू कीन्हा । गध सुगंध सभे रचि लीन्हा १९३०२।	सतनाम
सतनाम	ताल मृदंग समाज बनाया । पाँच सात मिलि चदि गुन गाया १९३०३।	सतनाम	नौका लेई निकट चलि गयऊ । पहुचि घाट पर खूंट लगयऊ १९३०४।	सतनाम	साखी - १३१	
सतनाम	कीन्ह मंत्र जो सब मिलि, ऐसन करि उपाय ।		जोगिनि होयके जोग ठगि, नाद वेद गुन गाय ॥		चौपाई	
सतनाम	जोगिनि रूप सभनि मिलि कियऊ । लाय भभूत जटा सिर दियउ १९३०५।	सतनाम	श्रृंगी ऋषि के निकट जो गयउ । डंड प्रनाम प्रीति बहु कियउ १९३०६।	सतनाम	दुई फल लेई भेंट जो कीन्हा । बहुत प्रेम करि चाखन लीन्हा १९३०७।	सतनाम
सतनाम	बोले ऋषि तब वचन विचारी । कवन लोक से पगु तुम ढारी १९३०८।	सतनाम	गगन गंधर्व देवता जा कहई । ताकर सुत हम सब मिलि अहई १९३०९।	सतनाम	जोग किया हम भोग ना जाना । शिव शिव जपों सोसांझविहाना १९३१०।	सतनाम
सतनाम	बहुत प्रीति ऋषि भाव जो कीन्हा । सादर बहुत भांति करि लीन्हा १९३११।	सतनाम	राग सरोदय बहुत सुनाया । काम वान गहि हृदय लाया १९३१२।	सतनाम	वन वाटिका मेवा सब खानी । जल है निकट सोभा बहू जानी १९३१३।	सतनाम
सतनाम	पत्र कुटी बहू भांतिन्ह छाया । जोग विराग ज्ञान तहां गाया १९३१४।	सतनाम	चले तुरंत विलम ना लयउ । तरणी पर धरि ताहि चढ़ैउ १९३१५।	सतनाम	97	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १३२			
सतनाम			हांकेव तरनी तेज करी, नाचि काछि गुन गाय।		सतनाम	
			जाए अवध पुर पहुँचेव, नृप दरशन करि आय॥			
			चौपाई			
सतनाम			कहां रहेउ कहां चलि ऐयउ । कवन नग्र ऋषि बोलत भैयउ १९३१६।		सतनाम	
			तब ऋषि बोलि वचन अस कहेउ । अवध पुरी नृप तुम यहां रहेउ १९३१७।			
सतनाम			कारन कौन जो हमहिं बोलाई । सो निज अर्थ कहो समुझाई १९३१८।		सतनाम	
			चरन छुई विनै बहु कीएउ । अति दुरभिक्ष धर्म नहिं रहेउ १९३१९।			
सतनाम			ब्रीष्टि बिना श्रृष्टि सब गैयउ । ईमि कारन तुम्हें यहां बोलैउ १९३२०।		सतनाम	
			दीन्ह उपदेश गुरु दाया सरूपा । सिंगी ऋषि चरन गहो गहि भूपा १९३२१।			
सतनाम			करिहें दया धर्म धरि ओहि। होइहीं बृष्टि पुत्र फल तोही १९३२२।		सतनाम	
			यह परमारथ पुन्य बड़ अहई । आतम दुखि सुखि सब लहई १९३२३।			
सतनाम			दरवे सरवे पुल कित भएऊ । जग पावन करि आहुत किएऊ १९३२४।		सतनाम	
			हुनेव घृति मधु जो विधि रहेऊ। जग पवित्र करि आहुत किएउ १९३२५।			
सतनाम			भव बृष्टि सब श्रृष्टि बनायो। आनंद मंगल सब मिलि गायो १९३२६।		सतनाम	
			साखी - १३३			
			कीन्ह प्रसाद पिंड एक, राजहिं दीन्ह बोलए।			
सतनाम			बहुत प्रीति जापरबसे, ताहि खोआबहु जाए ॥		सतनाम	
			छन्दतोमर - ३२			
सतनाम			तिनि लोक त्रिभुवन जानि, इमि जन्म लिहें आनि ॥		सतनाम	
			जो भार पुहुमी होए, सब संसे डारिहें खोए ॥			
सतनाम			सब वेद अस्तुति गाय, धन्य धन्य जग में आय ॥		सतनाम	
			सब दनुज दैंत पछार, इमि वीर भूमिपर हार ॥			
सतनाम			सुर मुनि नर सुख पाय, सब वंद छूटे जाय ॥		सतनाम	
			जग होत मंगल चार, सब छुटिहिं भर्म विकार ॥			
सतनाम			नृप विदा भए सिर नाए , इमि अवध पहुँचे आए॥		सतनाम	
			जहां भवन भीतर नारि, सब कहेव बचन विचारि ॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	98	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कोशिल्या केकड़ रानि, तेहि प्रान पियारी जानि ॥	सतनाम	दुइ भाग भाला कीन्ह, तेहि हाथ लेइ यह दीन्ह ॥	सतनाम	सुमीत्रा सुबुधि सेयानि, कछु दीजे हमहिं जानि ॥	सतनाम
सतनाम	अतीथ पति तेहि मानि, तुम सुघरि सुबुधि सुजानि ॥	सतनाम	इमि लीन्ह बचनहिं मानि, कछु दीन्ह दाया जानि ॥	सतनाम	मुख पान कीन्हो आनि, बहु प्रीति प्रेम बखानि ॥	सतनाम
सतनाम	मओ तुरंत गर्भ सुभाव, इमि जुक्ति परि गौ दाव ॥	सतनाम	छन्दनराच - ३२	सतनाम	आनंद बहु भांति हुलसेव छाती, त्रिया तीनिउ यह फल पाई ॥	सतनाम
सतनाम	नृपगुन राजित सब विधि छाजित, चहि चावहिं कवन दिन आई ॥	सतनाम	मंगल चारा करत उचारा, चरचा वेद सब गुन गाई ॥	सतनाम	घरी सोहाई सुभ दिन आई, हर खित गुनिजन सो धाई ॥	सतनाम
सतनाम	सोरठा - ३२	सतनाम	आनंद सब नर नारि , चरचा बहुत सोहावहीं ॥	सतनाम	वारिज विर्गसो वारि, भान कला छवि छत्र है ॥	सतनाम
सतनाम	॥ चौपाई ॥	सतनाम	नृप दशरथ घर इमि करि ऐऊ। चार अंस बंस इमि भएऊ ॥१३२७॥	सतनाम	राम नीरंजन सो चलि ऐऊ। पुरुष अंस निज लखन कहेऊ ॥१३२८॥	सतनाम
सतनाम	शिव को अंस भरथ यह अहई । ब्रह्म अंस शत्रुधन कहई ॥१३२९॥	सतनाम	चारो पुत्र निजु जन्म पियारा । कुल के सागर मनि उजियारा ॥१३३०॥	सतनाम	ममिता अदल कीन्ह जग आई। मुनि पंडित सब अस्तुति गाई ॥१३३१॥	सतनाम
सतनाम	त्रेता चलि गयो द्वापर आई । यह निजु अर्थ कहा समुझाई ॥१३३२॥	सतनाम	द्वापर सुकृत धरा शरीरा । सुमति सुधा मति ज्ञान गंभीरा ॥१३३३॥	सतनाम	ब्राह्मण के घर भयो अवतारा । पंडित वेद चतुर गुन सारा ॥१३३४॥	सतनाम
सतनाम	नाम मुनेन्द्र सब मिलि कहई । पुरन ब्रह्म ज्ञान गुन अहई ॥१३३५॥	सतनाम	भयों चेतनि तब चित अनुरागा । निज निज अर्थ प्रेम रस पागा ॥१३३६॥	सतनाम	सतगुरु पद सत कहेव विचारो । दरपन दया दृष्टि उजियारी ॥१३३७॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १३४			
सतनाम			हांकेव तरनी तेज करी, नाचि काछि गुन गाय ।		सतनाम	
			जाए अवध पुर पहुँचेव, नृप दरशन करि आय ॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			कहां रहेउ कहां चलि ऐयउ । कवन नग्र ऋषि बोजत भैयउ १९३३८ ।		सतनाम	
सतनाम			तब ऋषि बोलि वचन अस कहेउ । अवध पुरी नृप तुम यहां रहेउ १९३३९ ।			
			कारन कौन जो हमहिं बोलाई । सो निज अर्थ कहो समुझाई १९३४० ।		सतनाम	
सतनाम			चरन छुई बिने बहु कीएउ । अति दुरभिक्ष धर्म नहिं रहेउ १९३४१ ।			
			ब्रीष्टि बिना श्रृष्टि सब गैयउ । ईमि कारन तुम्हें यहां बोलैउ १९३४२ ।		सतनाम	
सतनाम			दीन्ह उपदेश गुरु दाया सरूपा । सिंगि ऋषि चरन गहो गहि भूपा १९३४३ ।			
			करिहें दया धर्मवरि ओही । होइहीं वृष्टि पुत्र फल तोही १९३४४ ।		सतनाम	
सतनाम			यह परमारथ पुन्य बड़ अहई । आतम दुखि सुखि सब लहई १९३४५ ।			
			दरवे सरवे पुल कित भएऊ । जग पावन करि कुंड खनएउ १९३४६ ।		सतनाम	
सतनाम			हुनेव घृति मधु जो विधि रहेऊ । जग पवित्र करि आहुत किएउ १९३४७ ।			
			भव वृष्टि सब श्रृष्टि बनायो । आनंद मंगल सब मिलि गायो १९३४८ ।		सतनाम	
सतनाम			साखी - १३५			
			कीन्ह प्रसाद पिंड एक, राजहिं दीन्ह बोलए ।		सतनाम	
सतनाम			बहुत प्रीति जापरवसे, तेहि खीआबहु जाए ॥			
			छन्दतोमर - ३३		सतनाम	
सतनाम			तिनि लोक त्रिभुवन जानि, इमि जन्म लिहें आनि ॥			
			जो भार पुहुमी होए, सब संसे डारिहें खोए ॥		सतनाम	
सतनाम			सब वेद अस्तुति गाय, धन्य धन्य जग में आय ॥			
			सब दनुज दैंत पक्षार, इमि वीर भूमिपर हार ॥		सतनाम	
सतनाम			सुर मुनि नर सुख पाय, सब बंद छूटिहें भर्म विकार ॥			
			नृप विदा भए सिर नाए, इमि अवध पहुंचे आए ॥		सतनाम	
सतनाम			जहां भवन भीतर नारि, सब कहेव वचन विचारि ॥			
			100			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
कोशिल्या केकई रानि, तेहि प्रान पियारी जानि ॥						
दुइ भाग भाला कीन्ह, तेहि हाथ लेइ यह दीन्ह ॥						
सुमीत्रा सुबुधि सेयानि, कछु दीजे हमहिं जानि ॥						
अतीथ पति तेहि मानि, तुम सुघरि सुबुधि सुजानि ॥						
इमि लीन्ह वचनहिं मानि, कछु दीन्ह दाया जानि ॥						
मुख पान कीन्हो आनि, बहु प्रीति प्रेम बखानि ॥						
मओ तुरंत गर्भ सुभाव, इमि जुक्ति परि गौ दाव ॥						
छन्दनराच - ३३						
आनंद बहु भांति हुलसेव छाती, त्रिया तीनिउ यह फल पाई ॥						
नृपगुन राजित सब विधि छाजित, चहि चाबहिं कवन दिन आई ॥						
मंगल चारा करत उचारा, चरचा वेद सब गुन गाई ॥						
घरीसोहाई सुभ दिन आई, हर खित गुनिजन सो धाई ॥						
सोरठा - ३३						
आनंद सब नर नारि, चरचा बहुत सोआवहीं ॥						
वारिज विराग सेओ वारि, भान कला छवि छत्र है ॥						
चौपाई						
नृप दशरथ घर इमि करि ऐऊ । चार अंस बंस इमि भएऊ १९३४६ ।						
राम नीरजन सो चलि ऐऊ । पुरुष अंस निज लखन कहेऊ १९३५० ।						
शिव को अंस भरथ यह अहई । ब्रह्मा अंस चतुर गुन कहई १९३५१ ।						
चारों पुत्र निजु जन्म पियारा । कुल के सागर मनि उजियारा १९३५२ ।						
ममिता अदल कीन्ह जग आई । मुनि पंडित सब अस्तुति गाई १९३५३ ।						
त्रेता चलि गयो द्वापर आई । यह निजु अर्थ कहा समुझाई १९३५४ ।						
द्वापर सुकृत घरा शरीरा । सुमति सुधा मति ज्ञान गंभीरा १९३५५ ।						
ब्राह्मण के घर भयो अवतारा । पंडित वेद चतुर गुन सारा १९३५६ ।						
नाम मुनेंद्र सब मिलि कहई । पुरन ब्रह्म ज्ञान गुन अहई १९३५७ ।						
भयो चेतनि तब चित अनुरागा । निज निज अर्थ प्रेम रस पागा १९३५८ ।						
सतगुरु पद सत कहेव विचारो । दरपन दया दृष्टि उजियारी १९३५९ ।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १३६			
सतनाम			लै लागे भए भागिया, किलिविखि घालेधोय ।		सतनाम	
			कहेंमुनीद्र सत साबुनहुआ, सोक्योंनहिं उजलाहोय ॥			
			चौपाई			
सतनाम			पंडित के घर विद्या वानी । वेद पुरान कथा बहु आनी १९३६० ।		सतनाम	
			कहे वीप्र सुत हितकारी मानी । पढ़ कुल कर्म पेद निज बानी १९३६१ ।			
सतनाम			त्रिया संध्या और तर्पन करहू । त्रिया लोक यह तिर्गुन धरहु १९३६२ ।		सतनाम	
			चतुर वेद अरू चारू वरना । चतुरजुगमिलि यह षट करमा १९३६३ ।			
सतनाम			वरन अठारह यह गुन कहई । पूरन ब्रह्म पंडित सो अहई १९३६४ ।		सतनाम	
			बहु सादर नृप करे बोलाई । सोभहिं सभा बुधि जन आई १९३६५ ।			
सतनाम			पुरा कृत कर्म भल कीएउ । इमि करि जन्म ब्राह्मन घर भैएउ १९३६६ ।		सतनाम	
			एक जन्म मम तप बहु कीन्हा । तुम अस पुत्र मांगि के लीन्हा १९३६७ ।			
सतनाम			सो मन किमि करि फिरहु उदासा । रहहू भवन बसि वेद प्रकाशा १९३६८ ।		सतनाम	
			करि असनान पुजा करूं आई । पुहुपचढ़ाबहु घंट बजाई १९३६९ ।			
सतनाम			नीति नइ नेम एहि गुन सादर । सुर सरि सगम तेजु जल भागर १९३७० ।		सतनाम	
			साखी - १३७			
			पंडित कहा विवेक करी , सुनो स्त्रवन चितलाय ।			
सतनाम			कहेव अर्थ मत जानि यह , वेद विमल गुन गाय ॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			कहे मुनीद्र एह मन कर्मा । वेद पुरान सुने बहु धर्मा १९३७१ ।		सतनाम	
			वेद है वार पार किमि जाई । अरुझि रहा कहिं ठौर ना पाई १९३७२ ।			
सतनाम			माया मन यह जाल बनाई । अरुझे नर मुनि स्वारथ गाई १९३७३ ।		सतनाम	
			आतम छोड़ि पाहन का पूजा । चक्षु बिहून ज्ञान बुझू दूजा १९३७४ ।			
सतनाम			अन बोले अब बोलनिहारा । इमि करि ब्रह्म दृष्टि उजीयारा १९३७५ ।		सतनाम	
			धोखा दबरि पुजे सो अन्धा । कर्म अनेक काल ने बंधा १९३७६ ।			
सतनाम			जन्म सुद्र यह सब कर अहई । संस्कार दीज तब कहई १९३७७ ।		सतनाम	
			अभ्यास वेद तब वीप्र कहावै । भयो पुज्य जग सब कोई गावै १९३७८ ।			
			102			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
ब्रह्म जाने सो ब्राह्मन अहई । परचे बिना सुद्र इमि कहई ॥ १३७६ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सत पद जपु तुम पंडित ज्ञाता । इया में ज्ञान प्रेम निजराता ॥ १३८० ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नव गुन सुत सम जुक्ति सुधारी । तीनि गिरह दे मोह कम पारी ॥ १३८१ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - १३८						
संझा तर्पन तहां करूं , जहां जल कुश ना होय ।						
अजपा दरशन दृष्टि करूं, दया दीपक दिल सोय ॥						
चौपाई						
पुत्र पिता कहं वादि ना चहई । हंसे नगर लोग सब कहई ॥ १३८२ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एक सुत इनके गृह आएऊ । निस दिन वादि पंडित से ठैएऊ ॥ १३८३ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चिन्हहु ना वेद ब्रह्म गुन बानी । चिन्हुन निर्गुन सर्गुन सहिदानी ॥ १३८४ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
चिन्हहु ना राम रहा सरूपा । जल थल इमि प्रितबिम्ब अनूपा ॥ १३८५ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
है निर्गुन गुन देह विराजै । निर्गुन छत्र छवि जग में छाजै ॥ १३८६ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
पहिले निगम नीरूपन करई । करि खट कर्म पूजा तब धरई ॥ १३८७ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
विना वेद शुद्ध नहिं बानी । जप तप करि आतम पहचानी ॥ १३८८ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
आदि विरंचि वेद मत कहेऊ । सो सब जानि प्रगट जग रहेऊ ॥ १३८९ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
वेद छोड़े तेहि विप्र न कहई । गुन कहं पुजे निर्गुन नहिं लहई ॥ १३९० ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सो तुम तेजि दोसर मत कीन्हा । करि अपुज्य जुक्ति नहिं चीन्हा ॥ १३९१ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नास्तिक पंथ पद तुम अनुरागी । कीन्ह उछेद जगत से बागी ॥ १३९२ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - १३९						
पंडित सुधर सुबुधि जन, इमि सादर परतीत ।						
अति प्रसिद्ध नृप मानिहें, तेजहु भर्म अनीत ॥						
छन्दतोमर - ३४						
कहेव निर्गुन सर्गुन नीरंत, मुनि ज्ञान गुन को मंत ॥						
ग्रंथ अर्थहि जानि, इमि ब्रह्म गुन पहचानि ॥						
कहे जुक्ति जोगी ज्ञान, इमि परम पद पहचान ॥						
नीरूपन करि निज ज्ञान , इमिसमुझि पदनिरवान ॥						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
तेजहु पाहन पाखंड कर्मा । तेजहु तीर्थव्रत सब भर्मा १९३६६।							
तीनि ताप तन दुख अति पैहो । भवसागर दुख दारून लैहो १९४००।	सतनाम						
कठिन जगाति जम यह देखा। पाप पुन का करिहे लेखा १९४०१।							सतनाम
पाप पुन मन कारन अहई । दुख सुख भोग दुयो एह करई १९४०२।	सतनाम						
पुन के फल सुख होए शरीरा । पाप के फल कठिन दुख पीरा १९४०३।							सतनाम
साखी - १४०							
पाप पुन के कर्म यह, उलटि पलटिभव आय ।							
सतगुरु ज्ञान विचारहु , अमर लोक के जाय ॥							
चौपाई							
कहे पंडित तुम अज गुत कीन्हा । जो मतकबहिं ना सोकहि दीन्हा १९४०६।	सतनाम						
सुरनर यह मत कबहिं ना कहेउ । नूतन नया बुधि तुम ठाँउ १९४०५।							सतनाम
तुमके कुमति सदा तन भैउ । वेद उलंधन मत इमि कहेउ १९४०६।	सतनाम						
मातु कहे बड़ पंडित भाँउ । सुत से झगरा नीति उठि कीँउ १९४०७।							सतनाम
लेहु ग्रन्थ तुम अर्थ विचारी । नृप घर जाय वचन वहु डारी १९४०८।	सतनाम						
तेजि देहु वादि विवादि जनि करहू । आपन वचन सदा परि हरहू १९४०९।							सतनाम
इनकर मत तुम के नहिं नीका । तुम्हारी वचन उन्हे है फीका १९४१०।	सतनाम						
मन्दिल एक मत दुई भाँउ । महा कठिन दुख दारून दहेउ १९४११।							सतनाम
कवन स्वरूप धरि गृहि में आँउ । अचरज कथा बादि सब ठाँउ १९४१२।	सतनाम						
तुम वेद पढ़े गुन ज्ञाता भाँउ । क्रोध दम्भ तोहरे तन छाँउ १९४१३।							सतनाम
रहे देहु गृह में जेहि विधि रहई । आपन गुन अपने चित लहई १९४१४।	सतनाम						
साखी - १४१							
व्रत कियों तन जारिके, तब सुत जन्मेव आय ॥							
लोखेबबीरची लीलाटमें, सो फल भुगतेव जाय ॥							
चौपाई							
आयो चित में तब चलि भाँउ । मातु पिता केहु मर्म न पाँउ १९४१५।	सतनाम						
चलत फिरत इमि ज्ञान सुनाओ । करे अकूफ निज नाम दिड़ाओ १९४१६।							सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
देहिं परवाना ज्ञान विचारी । यहि भव भर्म से लेहिं निकारी १९४१७।	ईश्वर अब परमेश्वर बरता । कहि देहिं ज्ञान दूजा है करता १९४१८।	करहिं विवेक दुओ बिलगाई । होखे मुक्ति परमपद पाई १९४१९।	देहिं उपदेश देस यह देखा । विरला जन कोई करे विवेखा १९४२०।	मन के जाल फंद बड़ अहई । बिरला जन को दिठ के गहई १९४२१।	करि उपकार कर्म बिलगाई । चीन्हे सत गुरु मत लव लाई १९४२२।	नहीं कछु पंथ पंथाई कीन्हा । भक्ति विवेक नाम कहि दीन्हा १९४२३।
छपलोक छपा कहि दीन्हा । जो कोई ज्ञानी जग में बीना १९४२४।	बहियां होय वांही जिन्ही दियऊ । तासो कपट कबहिं नहिं कियऊ १९४२५।	साखी - १४२	ऐन झरोखा सुरति है , सतगुरु शब्द समाय ।	कहें मुनींद्र दर जानिया, बादर पहुँचे आय ॥	चौपाई	काशी आए शहर तब देखा । बहु विधि पंडित भेख अलेखा १९४२६।
होम जग्य औ बहु विधि कर्मा । पढ़ि पुरान दान करि धर्मा १९४२७।	कहीं जोग कहीं भोग विलासा । कहीं उर्ध बाहु मौनि अकासा १९४२८।	कहीं धुर्म पान झुलहिं बहु भांति । कहीं जलसैन साधि इमि राती १९४२९।	कहीं रेशम डोरी झिलूहा लाई । ठाढ़े निसु बासर रहि जाई १९४३०।	कहीं पंच अग्नि तन तप्त लगावै । कहीं भक्त भेख राम गुन गावै १९४३१।	करि असनान नारि नितिनेमा । चंदन अक्षत पत्थल से प्रेमा १९४३२।	यहि भातिन मन सब अरुझाई । सत गुरु मत केहुगति नहिं पाई १९४३३।
कवन बूझे यह पद अनुरागा । अपने मत में सब वैरागा १९४३४।	शिव शिव सुमिरहिं शिव अबिनासी । राम रटन कहिं राम उपासी १९४३५।	देखि कौतुक कछु कहा न जाई । सुंदरि नारि नयन सर पाई १९४३६।				

साखी - १४३

काशी कहे शिवलोक सब, बहु विधिभोग बनाय ।
सभे नचावे जोग किमि, बहु विधि फंदा लाय ॥

छन्दतोमर - ३५

यह मोहनी मनरंग, असनान करू जल संग ॥
बहु सुंदरी सोभा पाय, इमि भुखन बसन बनाय ॥
सब टीके सुर सरि तीर, तप रहत नाहीं थीर ॥
कहिं करत जोगी जोग, मन कर्म करता भोग ॥
जो नैन रूप समाय, सो पलक मुदे आय ॥
कन्दर्प कामिनि जोर, इमि खींचत अपनी ओर ॥
इमि वान सब उर लाय, यह घायल धुमिरहिं जाय ॥
सुभेख भेख बनाय, इमि भांति सब गुन गाय ॥
मुख बेनु मुरली रंग, मृदंग ताल उपंग ॥
नटवा नट अवनारि, सब देखि दरस भिखारि ॥
इमि थेई करि तत काल, मन मगन बहुत निहाल ॥
मत माति मद सब लोग, यह कठिन सागर सोग ॥
देखि दीप दरसन आय, पतंग प्रान गंवाय ॥
ज्यों ललचि ललनीकीर, मन रहत नाहीं थीर ॥
बहु भांति सबहिं सोहाय, गुन कवन तप से पाय ॥

छन्दनराच - ३५

सुंदरि सोभा इमि चित लोभा, लाभ नहिं फल किमि पावै ॥
बहुविधि भोगा किमिकहि जोगा, रोग सकल तन सो धावै ॥
कोइ जागृत ज्ञानी मन पहचानी, चर्चा सतगुरु पद पावै ॥
लाख में एका करे विवेका, काटि कर्म कहं इमि जावै ॥

सोरठा - ३५

कोइ संत सुबुधि सुजान, जो पंथ चले विचारि के ॥
विलगि रहा मन ज्ञान, मुक्ति सदा फल पावहीं ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	दुर बासा से दरशन भएऊ । जहवां जोग तपस्या ठएऊ । १९४३७ ।	सतनाम	अन फल कछु ओ नहिं खैएऊ । कन्द न खाए छीर नहिं पिएऊ । १९४३८ ।	सतनाम	दुबिरंग दुरबासा लीएऊ । बहुत कल्पना तन के दीएऊ । १९४३९ ।	सतनाम
सतनाम	अइसन तपस्या तन के साधा । पांचों इन्द्री नीग्रह बाँधा । १९४४० ।	सतनाम	जेहि साधे सो सधि न आई । इन्द्री साधे का फल पाई । १९४४१ ।	सतनाम	पांचों मंगिहें खटरस भोगा । बिसरि जैसें सब तन के जोगा । १९४४२ ।	सतनाम
सतनाम	बाजीगर जो बाजी लगावै । इमि करि मरकट बांधि नचावे । १९४४३ ।	सतनाम	चोर साहु चिन्हि नहिं आई । ठग ठाकुर सब ठगे बनाई । १९४४४ ।	सतनाम	मन करता के ध्यान लगएउ । सत करता यह चिन्हि नएउ । १९४४५ ।	सतनाम
सतनाम	सब घट बसे मरम नहिं जाना । इमि करि जम के हाथ बिकाना । १९४४६ ।	सतनाम	चिन्हें बिना सुर नर मुनि गएऊ । बहुरि बहुरि भव सागर अएऊ । १९४४७ ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - १४४	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	बहुत तपस्या साधिया, करता नहिं पहचानि ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	जाग करत कुजोग्य है, इमि जम करिहैं हानि ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	त्यागेव अन फल नहिं खाई । त्यागेव छीर कन्द दुरिजाई । १९४४८ ।	सतनाम	त्यागेव काम क्रोध कर मूला । त्यागेव पाप पुन्य जम सूला । १९४४९ ।	सतनाम	त्यागेव भाग सोग गृह नारी । अपने आपू से कीन्ह विचारी । १९४५० ।	सतनाम
सतनाम	दसी दिशा कतहिं नहिं जाई । अपने आप में रहा समाई । १९४५१ ।	सतनाम	मन अवमीन गली भव पानी । केबट का करिहें पहचानी । १९४५२ ।	सतनाम	धिमर जाल नाय का करई । पक्ष ना बाझे का कह धरई । १९४५३ ।	सतनाम
सतनाम	जेहि पांचो यह साधि ना अएऊ । ताके धरत विलम ना कोएऊ । १९४५४ ।	सतनाम	ताहि धरे अन फल जो खाई । मम नजीक जम नहिं जाई । १९४५५ ।	सतनाम	धरिहें ताहि जा करिहें भोगा । नारी पुर्ष रस विविध सनजोगा । १९४५६ ।	सतनाम
सतनाम	धरिहें ताहि जो राज में जागा । तीनि से साठि कर्म तेहिं लागा । १९४५७ ।	सतनाम	राज तेजि राज ऋषि भएऊ । हम के जम नछावर दीएऊ । १९४५८ ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	108	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १४५			
सतनाम			दुबी रंग भोजन कियो , नाना भोग विसारि ।		सतनाम	
			तन मन बांधेव साधिकरी, कर्म भर्म सब डारि ॥			
			चौपाई			
सतनाम			किछु दिन रैनि देवस जब जैहें । कामोनि रूप तोहि काल नचैहें	१९४५६।	सतनाम	
			सासा त्रेन खाई बन जीवै । मास बीते पानी बोए पीवै	१९४६०।		
सतनाम			बाके काम क्रोध तन आवै । खेले शिकार तुरे नहिं पावै	१९४६१।	सतनाम	
			स्वान काल से वांचि न जाई । त्रेन अहारिन्ह इमि धरि खाई	१९४६२।		
सतनाम			त्रेन खाय सो पशुआ अहई । ताके सिद्ध कवन यह कहई	१९४६३।	सतनाम	
			तप के साधे का फल पावै । त्रेन अरारिन्ह काल नचावै	१९४६४।		
सतनाम			अन फल साधु कर कर्मा । त्रेन चरे मुख पशु कर धर्मा	१९४६५।	सतनाम	
			आतम कलपि सभै कलपाई । यह पांचों तुम्हें नाच नचाई	१९४६६।		
सतनाम			इन्द्र लोक इन्द्री लेई जैहें । कामिनि रूप तोहि काल नचैहें	१९४६७।	सतनाम	
			उरबसि अहे काल की दासी । तासे तोहि लगइहें फांसी	१९४६८।		
सतनाम			दुरवासा तुम्हें ज्ञान ना भएऊ । मन के साधि काल तन अएऊ	१९४६९।	सतनाम	
			साखी - १४६			
			विपरीत साज बनाइके, तुम्हें तन क्रोध लगाय ।			
			स्नाप देहु तन ताहिके, देह तुरंगिनि पाय ॥			
			चौपाई			
सतनाम			जमुदीप मह आनि उतारि । दिन होय घोर राति बर नारी	१९४७०।	सतनाम	
			दंगवे देश तहां चलि जइहें । बोए नृप आपु शिकारे अइहें	१९४७१।		
सतनाम			देखिहें घोरिया बहुत अनूपा । कटक छोरिसगं लगिहें भूपा	१९४७२।	सतनाम	
			बासर बीते रइनि होय जबहीं । सुन्दरी त्रिया सोभातन तबहीं	१९४७३।		
सतनाम			भागे फिर भर्म के लागे । ऐसन प्रेम प्रीति निजु पागे	१९४७४।	सतनाम	
			चरचा जैहें कृष्ण के पाहीं । मंगिहें घोरिया रंक की नाहीं	१९४७५।		
सतनाम			दिन तुरंगीनि राति होय नारी । सुन्दरी छवि कवि कहे विचारी	१९४७६।	सतनाम	
			यहि प्रकार तुरंगीनि आई । दिन होय घोरि राति सुखपाई	१९४७७।		
			109			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मन माया कर ऐसन रंगा । सहस्त्र गोपि है ताके संग ॥ १९४७८ ॥	सतनाम	ता संग भोग सब करई । सो करता गुन ऐसन धरई ॥ १९४७९ ॥	सतनाम	सहस्त्र छोड़ि एक के धावै । काम कला यह नाच नचावै ॥ १९४८० ॥	सतनाम
सतनाम	साखी - १४७	सतनाम	कटक सभे यह टेकिया, ठाकुर ठग तेहि जानि ।	सतनाम	तुरंगिनितछछन भेजिये, नातकरोरावतोरहानि ॥	सतनाम
सतनाम	छन्दतोमर - ३६	सतनाम	इमि कहेव तोमर छन्द , यह माया मन को फंद ॥	सतनाम	यह चरित्र बहुत विकार, धरि कृष्ण साजेव धार ॥	सतनाम
सतनाम	यह कृष्णा करता देव, इमि चरित्र जाने न भेव ॥	सतनाम	इमि सोभा सुन्दर शरीर , कवि कहेव बहुत गंभीर ॥	सतनाम	जब सुनेव अपनी कान, इमि उर्बसि उरहै बान ॥	सतनाम
सतनाम	संग सहस्त्र नारि, छवि वाहि पर सब वारि ॥	सतनाम	ज्यों खंज मीन शरीर, नहिं तनिक राखेव थीर ॥	सतनाम	यह काम करता बीर, इमि बसहिं सकल शरीर ॥	सतनाम
सतनाम	यह लाल फूल विश्वास, इमि सुगा सेवे पास ॥	सतनाम	जब उड़े तूल तमाल, इमि देखि बहुत विहाल ॥	सतनाम	तब चटकि पटके सीस, इमि जानिहैं जगदीश ॥	सतनाम
सतनाम	जिमि केहरी को अंग , कूप देखि प्रतिमा भंग ॥	सतनाम	इमि प्रान खोवै जाय, फिर बहुरि निकलिन आय ॥	सतनाम	कुरगं रफरगं पाय, इमि धोखा देखेव जाय ॥	सतनाम
सतनाम	फिर उलटि देखे नीर, इमि विकल सकल शरीर ॥	सतनाम	छन्दनराच - ३६	सतनाम	धोखा है धंधा या जग बन्धा, अंधा चक्षु का सो धावे ॥	सतनाम
सतनाम	विविध सियाना मन अरुझाना, झीनि जाल में सो आवै ॥	सतनाम	लालच लागी मृग पगु पागी, अमर कोस धरि दुख दावे ॥	सतनाम	फीटिक शिला गज दसन हिला, हलित भये तन दुख पावै ॥	सतनाम
सतनाम	110	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			सोरठा - ३६			
सतनाम			मन माया को भाव , छल बल इमिकरि जानिए ॥		सतनाम	
			जेहि समुझि परी यह दाव, संत विवेकी विचारही ॥			
			चौपाई			
सतनाम			दसो दिसा दंगवे फिरि आएउ । कतहीं सरन ठवर नहिं पएउ १९८१।		सतनाम	
			चिता रचेव चित कीन्ह विचारी । तापर चढ़ो अनल देउबारी १९८२।			
सतनाम			जरि मरि खाक जबे उड़ि जइए । सुनि के कृष्ण बहुत पछतैहें १९८३।		सतनाम	
			द्रोपदी सुनत सोच हिये रहेऊ । अचरजवात यह किमिकर भएउ १९८४।			
सतनाम			पुछा वचन तुरन्तहिं जाई । कारन कवन दहो तन आई १९८५।		सतनाम	
			करता कृष्ण कारन तेहिं भएऊ । घोड़िया मांगहि हमें के दिएऊ १९८६।			
सतनाम			देखेउ सभे केहु सरन न राखा । ऐसन वचन दंगवे भाखा १९८७।		सतनाम	
			पांचो पंडो संग अर्जुन बीरा । अति गंभीर गुन सब मतिधीरा १९८८।			
सतनाम			चलो सरन तुम्हें रखिहैं जानी । इमि मम वचन होए नहिं हानी १९८९।		सतनाम	
			नाछत्री सब जग छत्री एका । विपति सरन केहू नहिं टेका १९९०।			
सतनाम			अर्जुन सुनत क्रोध तन भैएउ । अब मम सरन राखि एहि लिएऊ १९९१।		सतनाम	
			साखी - १४८			
			दुदीष्टिल अर्जुन भीमसेन, अव नकुल सहदेव ।			
सतनाम			बीर भूमि पर जुद्ध करी, देखहि सुर सब भेव ॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			सुना कृष्ण कारन बड़ भएऊ । पंडो जुधि मांगि के कीएउ १९९२।		सतनाम	
			दुओ दिस कटक भया बड़ भारी । लरहिं भूमि पर सुर पर चारी १९९३।			
सतनाम			अउठो वज्र तबे भइ गएऊ । दंगी हाथ करि हारी गहेऊ १९९४।		सतनाम	
			फुल ते फल उड़ा भ्रम भूआ । शीश पंटकि के चलिभऔ सूआ १९९५।			
सतनाम			इमि करि मुख मोरि सब गृहिगैएऊ । मीज मीज कर पक्षतावा भएऊ १९९६।		सतनाम	
			अगुमन सोच न होए विचारा । इमि करि दहेव सकल संसारा १९९७।			
सतनाम			सबा लाख जीव होईहें धाता । दुर्बासा तुम्हारे तन राता १९९८।		सतनाम	
			पाप बोएल कहि नहिं जइहैं । अतना जन्म तुम्हें भरमइहैं १९९९।			
			111			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तप के साथे यह फल आवै । करता चिन्हें अमर पद पावै १९५००।	सतनाम	पहरु इमि करि नगर चोरावै । साहू सुते जी कहां पावै १९५०१।	सतनाम	चोर साहु चिन्हि जब आवै । इमि करि माल बहुरि पलटावै १९५०२।	सतनाम
सतनाम	साखी - १४६					सतनाम
सतनाम	पहरु चोरइ यह चिन्हि के, तब जीव होए उबार ।					सतनाम
सतनाम	कहें मुनीन्दर दर जानिया, दुर्बासा करहु विचार ॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	सत जुग त्रेता द्वापर गएउ । तन के त्यागी राज घर आएउ १९५०३।	सतनाम	एहि परकार गुप्त जग रहेऊ । प्रगट ज्ञान कतहीं नहि कहेऊ १९५०४।	सतनाम	पुरुष ज्ञान निजु हृदय विचारी । जोग जुक्ति कै ज्ञान सुधारी १९५०५।	सतनाम
सतनाम	दस जन्म ऐसे विति गएऊ । तेहि पीछे काशी महं आएऊ १९५०६।	सतनाम	जन्म भया केहु मर्म न पाई । विरला जन बुझे अरथाई १९५०७।	सतनाम	जल के निकट तहां वोए रहेऊ । असनान करत बालक तहं पएऊ १९५०८।	सतनाम
सतनाम	चंदन साहू के त्रिया गएऊ । असनान करत बालक तहंपएऊ १९५०९।	सतनाम	उठाय लीन्ह गृहि पहुँची आई । चंदन साहु कहा रिसिआई १९५१०।	सतनाम	हम गृह बालक है दुई चारी । जारु तुरंत उहां देहु डारी १९५११।	सतनाम
सतनाम	नीरु घर घरनी सो चलि गएउ । लीन्ह उठाये पर्म पद पएउ १९५१२।	सतनाम	लीन्ह उर लाए प्रेम अति भएउ । मानो चंदन चरचि चढ़ऊ १९५१३।	सतनाम	साखी - १५०	
सतनाम	नीरु बालक देखिके, आनंद मंगल सोहाय ।					सतनाम
सतनाम	पैठिसोईरिसवविधिकिया, त्रिया सुख सोहर गाय ॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	सरवत छीर कुदरति भएउ । लीन्ह उठाय दुध मुख दीएउ १९५१४।	सतनाम	बालक देखात बहुत सोहाई । स्त्री पुर्ष प्रेम लवलाई १९५१५।	सतनाम	उन घर बालक दुजा ना रहेऊ । अति सादर करि आनंद भएउ १९५१६।	सतनाम
सतनाम	माया पत्र प्रभु सब विधि दीएउ । खेलन खान मगन मन रहेउ १९५१७।	सतनाम				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	शिशु संग खेलहिं सहर में जाई । कोई पढ़े ग्रन्थ सुनहिं चितलाई १५१८ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दिन दिन चेत अधिक चित ठैउ । उदाशिन से ज्ञान किछु कहेउ १५१९ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	मिलि जाय भेख कोई वैरागी । तासो ज्ञान कथहिं अनुरागी १५२० ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	लेआवहिं गृहि में सादर करहीं । रीधि ले कछु आगे धरहीं १५२१ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तने बिने फेरि बेंची लेआवहीं । बढ़ियां होएसो खियावही १५२२ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दासापन भक्ति अनुरागा । प्रेम प्रीति दिल निस दिन पागा १५२३ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	भवों विवेक शब्द किछु कहेउ । पंडित सुनि के अचरज खएउ १५२४ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साखी - १५१					
सतनाम	भवो सोर काशी में, इमि सतनाम पुकारि ।					
सतनाम	वाद-विवाद पंडित करे, कबहीनाआवहिंहारि ॥					
सतनाम	छन्द तोमर - ३७					
सतनाम	लगे भक्त कहने लोग, कछु ज्ञान गुन है जोग ॥					
सतनाम	नहिं पढ़ा वेद पुरान, करे निर्गुन सर्गुन बखान ॥					
सतनाम	नहिं दीक्ष्या काहु के लीन्ह, इन्हि पर्म पद कीमि चीन्ह ॥					
सतनाम	यहि भवो अनभो ज्ञान, इमि कहेव संत सुजान ॥					
सतनाम	चलु दर्स करिये जाय , कबीर निज गुन गाय ॥					
सतनाम	कोई सीक्ति कहत बनाय, कोई निन्दा बहु विधि गाय ॥					
सतनाम	कोई सेवा में लौलीन, इमि पर्म ततु ना भीन ॥					
सतनाम	एक बैठत उठत जात, सुनि प्रेम भक्ति सोहात ॥					
सतनाम	भौभक्त भेख का संग, मृदंग ताल उपंग ॥					
सतनाम	करि आरति सब मिलि नीति, यह भक्ति को प्रतीति ॥					
सतनाम	धन भाग जेहि गृह आय, सब कहत बात बनाय ॥					
सतनाम	जेहि कुल जन्में दास, सब बरे ढेंक परास ॥					
सतनाम	इमि चन्दन सुन्दर वृक्ष, जगकाठ बहुत अनीक्ष ॥					
सतनाम	इमि हंस बंस गंभीर, वग बसहिं सरवर तीर ॥					
सतनाम	यह कुंदन कंचन जानि, इमि बिबीधिजगनहिंखानि ॥					
सतनाम	113	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - ३७			
सतनाम			परिमल अंगा पारस संगी, ज्ञान रतंगा सो कहिअं ॥		सतनाम	
			है निरलेपा अतित अलेपा, पर्म पुर्ष परचे कहिअं ॥			
सतनाम			भव गुन ज्ञाता हृदय राता, तप्त सभे तन दुरि करिअं ॥		सतनाम	
			एहि भौसागर ब्रह्म उजागर, आगर गुनको इमि लहिअं ॥			
			सोरठा - ३७			
सतनाम			इमि करि प्रेम प्रकाश , आगम निर्गम गुनगावहीं ॥		सतनाम	
			इमि समुझे कोई दास, सतगुरु पद पावन करे ॥			
			चौपाई			
सतनाम			मातु कहे तुम गृहि कह त्यागा । कवन अभाग तुम्हें तन लागा १९२५।		सतनाम	
			के बबरे तुम्हें इमि बबराई । कहो ना अर्थ नीके समुझा १९२६।			
सतनाम			जौ तुम्हरे दिल एहि विचारी । तौ काहे के व्याहिलेआए एहु नारी १९२७।		सतनाम	
			काहै या जग को मम नारी । नाहक झगरा कीन्ह पसारी १९२८।			
सतनाम			एक मत होए के बांधहु बेरा । एहि विधि होइहें काल निमेरा १९२९।		सतनाम	
			मातु पिता सुनो चित लाई । सो निज अर्थ कहों समुझाई १९३०।			
सतनाम			पुर्बिल जन्म तुम्हरे गृहि ऐऊ । सत नाम निज गुन नहिं गएउ १९३१।		सतनाम	
			ब्राह्मन ब्राह्मनि तुम अवतारा । कीयो न भक्ति प्रेम निजुसारा १९३२।			
सतनाम			तुम घर वेद विद्या बहु बानी । इमि नहिं मानहु सत सहिदानी १९३३।		सतनाम	
			भर्मती भमत भर्मेव जाई । फिरि निज देह मनुष्य के पाई १९३४।			
सतनाम			अवरी के वार भक्ति लब लइहो । निजु गहि प्रेम मुक्ति फल पावै १९३५।		सतनाम	
			साखी - १५२			
सतनाम			पुर्बिलजन्मतुमब्रह्मनब्राह्मनि, सत गुरु पद नहिं चीन्ह ॥		सतनाम	
			सत नाम का सेवा चुकिया, तनवा बिनवा कीन्ह ॥			
			॥ चौपाई ॥			
सतनाम			वेद अभ्यासी जो कोइ रहई । तासो जाय ज्ञान निज कहई १९३६।		सतनाम	
			कहतहिं कहतहिं वादि विकारा । कोइ जन शब्दहिं करे विचारा १९३७।			
सतनाम			कोई कहे अच्छा मत अहई । निर्गुन सर्गुन दुनो पथ लहई १९३८।		सतनाम	
			114			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जोग अभ्यास कर्म इन्ह जाना । सब गुन नीके करे बखाना १९५३६ ।	राम छोड़ि सत नाम पुकारी । यह अचरज नहिं वेद विचारी १९५४० ।	यह संतन मत केहु न कहेऊ । राम नाम छोड़ि दुजा न लहेउ १९५४१ ।	नींदा बहु विधि बोलहिं बानी । घट घट अहे काल सहिदानी १९५४२ ।	पहले भला भक्त यह रहेऊ । पीछे बात बिगरि सब गएउ १९५४३ ।	नींदे वेद भेद नहिं जाना । नींदे सुरसरी को असननाना १९५४४ ।	नींदे पूजा नेम अचारा । पांखड धर्म करे संसारा १९५४५ ।
छवो कर्म यह नींदे बनाई । महा महा सन्हि पूजि पति पाई १९५४६ ।	<p>साखी - १५३</p> <p>चारि वेद माने नहीं, मानत है सत नाम ।</p> <p>राम नाम यह छोड़ि के, कहां करे विश्राम ॥</p> <p>चौपाई</p>					
गुरु बिना बहु ज्ञान बखाने । वाकी बात कबन यह माने १९५४७ ।	है पाखंडि पांखड करई । गुरु बिना जप तप मिर्था धरई १९५४८ ।	मुख पवित्र गुरु वचन जो माने । गुरु बिनु मुक्ति कवन यह जाने १९५४९ ।	निंदा करहिं भेख सब आई । गुरु बिनु ज्ञान कहां तुम पाई १९५५० ।	गुरु करहू जासो दिल माना । तुम्हारी वचन होय परवाना १९५५१ ।	करहिं नींदा सो बहुत उपाधि । जढ़नहिं बुझहिं अगम अगाधी १९५५२ ।	मानुष्य एक हम हूं कहां जाना । इमि करी जग सब भर्म भुलाना १९५५३ ।
बूड़त भौजल थाह न पाई । करि करि गुरु गोता सब खाई १९५५४ ।	गुरु पुनीत ज्ञान जब जाने । आदि अंत की कथा बखाने १९५५५ ।	ऐसन एक इमि करो उपाई । रामानद सो सिध्य कहाई १९५५६ ।	रहे गोंफा मह पवन साधो । पांचों इन्द्री नीग्रह बांधो १९५५७ ।	<p>साखी - १५४</p> <p>हिन्दु दरस सब करत हैं, तुरूक देखि छपाय ।</p> <p>ऐसन पांखड कर्म है , केहि विधि देखो जाय ॥</p>		
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	एक जाम रईनि जब रहई । सुरसरी महं मंजन तब करई । १५५८ ।	सतनाम	घाट बाट में रहों छिपाई । होए दरस कछु वचन सुनाई । १५५९ ।	सतनाम	रोकेव मारग छपि तब गएउ । फैआ ठोकर मम सिर दीएऊ । १५६० ।	सतनाम
सतनाम	तब मम रोए उठौं अकुलाई । दाया दर्द उन्ह के दिल आई । १५६१ ।	सतनाम	इमि करि कर गहि लीन्ह उठाई । राम नाम सुत सुमिरहु जाई । १५६२ ।	सतनाम	प्रगट आय काशी महं कीन्हा । रामानंद गुरु हम कए लीन्हा । १५६३ ।	सतनाम
सतनाम	सब कोई सुनि अचंभो खाई । रामानंद से बात जनाई । १५६४ ।	सतनाम	कोपेव बहुत वचन लघु कहेऊ । तुरतहि तछन पकरी मंगऊ । १५६५ ।	सतनाम	मानसिंध पूजा में रहेऊ । फूल पत्र मन्सा में ठएऊ । १५६६ ।	सतनाम
सतनाम	मन में झरति एक तक की एऊ । फूल पाती के तापर दीएऊ । १५६७ ।	सतनाम	गंध सुगंध चंदन चित राखा । गंध सुगंध सब मनमें भाखा । १५६८ ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - १५५	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	माला बनावहीं मन में , मूरति के गृव नाय ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	होखे लघु पेन्हे नहिं , फिरि कर लेहिं उठाय ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	बाहर भए मैं कहा पुकारी । छोटा माला मूरति है भारी । १५६९ ।	सतनाम	मुंधी ढिल कै देहु फएलाई । तब मूरति गृव माला जाई । १५७० ।	सतनाम	तब उह कहा अंचमो अहई । यह तो अंतरजामी कहई । १५७१ ।	सतनाम
सतनाम	लीन्ह बोलाए नीकट बैठाया । सिख औगुरु की बात चलाया । १५७२ ।	सतनाम	हम से दीक्षा कब तुम लीन्हा । मीर्था वचन सब से कहि दीन्हा । १५७३ ।	सतनाम	है यह साच मीर्था नहिं कहेऊ । मम गुरु तुम पद पंकज गहेऊ । १५७४ ।	सतनाम
सतनाम	असनान करे सुरसरी तुम गैएउ । तब हम राह रोकि के रहेउ । १५७५ ।	सतनाम	लागा ठोकर मम सिर भारी । तब मैं बोलेव वचन पुकारी । १५७६ ।	सतनाम	बहुत प्रीति करि लीन्ह उठाई । राम नाम सुत सुमिरहु जाई । १५७७ ।	सतनाम
सतनाम	रामानंद सांच तब कहेऊ । छल से दीक्ष्या हम से लीएउ । १५७८ ।	सतनाम	ऐसन शिष्य गुरु कोई ना करई । जौं लागि मंत्र स्त्रवन नहिं लहई । १५७९ ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	116	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

साखी - १५६

शिष्य माने तौं गुरु कही, गुरु माने शिष्य नाहिं ।

मनसा वाचा कर्मना, ममदीक्ष्यालीन्हतुमपाहिं ॥

छन्दतोमर - ३८

मम गुरु कीन्हों जानि , निज वचन लीजे मानि ॥

शिष्य पुछि हैं इमि ज्ञान, निज मुक्ति को परवान ॥

कहो भेद ब्रह्म विचारि, केहि पुरुष कहिए नारि ॥

कोकर्म करता देव, इमि कहो इनका भेव ॥

इमि मुक्ति काके हाथ, जीव सुमिरि होहिं सनाथ ॥

नहिं परे भर्म भुलाय , गुन कहो सब बिलगाय ॥

गुन बसे तिन शरीर , इमि कवन करता थीर ॥

किमि जाहीं भौजल पार, केहि कहत हो करतार ॥

सब जोग जुक्ति विराग, गुन होत किमि अनुराग ॥

अनभौ भव से पार , किमि कहि शब्दहि सार ॥

नीरंकार रहित अंकार, दुइ कही किमि करतार ॥

उभे छोड़ि धरि एक, इमि तेजि ममिता टेक ॥

इमि उपजि विनसी जाय , गुन कवन सत ठहराय ॥

भरष्ट भर्म बीकार, को रमे इनते पार ॥

गुरु ज्ञान गंभि नीखेद, इमि कहो नीर्मल भेद ॥

छन्दनराच - ३८

ज्ञान गभीरा करत कबिरा, धरु मन धिरा इमि लहिये ॥

चीन्हो करतारा भौजल पारा, भरमि भरमि फिरि दुख पइये ॥

तुम गुरु सिध्या वचन प्रसिध्या, संधी सधारन सभ कहिये ॥

मम भक्ति विरागा सब भर्म त्यागा, जागा हृदय गुन गहिये ॥

सोरठा - ३८

मम तुम के गुरु जानि , वचन सभे इमि पुछिहो ॥

अगम निगम पहचानि, क्रोध छमा किये बनी परे ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	रजगुन तंमगुन सतगुन जानी । ब्रह्म विश्न महेश्वर मानी १९५८० ।	सतनाम	दशरथ गृहि जन्मे धनुधारी । सीता पति अब देव मुरारी १९५८१ ।	सतनाम	निर्गुन रहे गुन है बफु धारी । माधो मधुकर कृष्ण मुरारी १९५८२ ।	सतनाम
सतनाम	पुहुमी भार मेटावनि हारा । दहेउ दर्ईत यह इमि करतारा १९५८३ ।	सतनाम	अनंत रूप अगम है सोई । ब्रह्म पुरातम गुन तिनि होई १९५८४ ।	सतनाम	सनक सनंदन कहेव विचारी । गुन अतित संतन निरुवारी १९५८५ ।	सतनाम
सतनाम	एहि में जप तप एहि में जोगा । एहि में पाप पुन्य हैं भोगा १९५८६ ।	सतनाम	हरि सुमिरे बैकुंठे जाई । पाप करे भव भरमें जाई १९५८७ ।	सतनाम	पाप पुन्य के करता बोई । राम नाम गुन दुजा ना कोई १९५८८ ।	सतनाम
सतनाम	दुइ गुन तेजि सत गुन के जाने । राजस तामस इमि पहचाने १९५८९ ।	सतनाम	बीश्न भक्त बीश्नु हितकारी । ब्रह्मा का गुन व्यास विचारी १९५९० ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	साखी - १५७	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	शिव को गुन यह दैत को , जो जा के परतीत ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	जैसी भावना जाहि कहं , यही जक्त की रीत ॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	चौपाई	सतनाम		सतनाम
सतनाम	कहे कबीर इमि सुनो विचारी । इमि गुरू करों वचन निरुआरी १९५९१ ।	सतनाम	ब्रह्मा बीश्न महेश्वर कहई । उलटि पलटि भवसागर अहई १९५९२ ।	सतनाम	तीन गुन बिन से किमि करतारा । पार ब्रह्म इनहूँ ते न्यारा १९५९३ ।	सतनाम
सतनाम	निर्गुन सर्गुन कहेबफु धारी । यह मन कला विविधि विस्तारी १९५९४ ।	सतनाम	तामें जप तप जोग तुम कहेऊ । तामे भोग विविधि गुन लहेऊ १९५९५ ।	सतनाम	तप साधत तन होत असाधी । जोग साधे तेहि जम फिरि बांधी १९५९६ ।	सतनाम
सतनाम	चारु फल इमि पै हैं जाई । तन छुटे फिरि जाहिं बंधाई १९५९७ ।	सतनाम	हरि भक्तन्हि बैकुंठ बसैउ । फिरि बीनसे भव सागर आएउ १९५९८ ।	सतनाम	सतगुरू को गुन तुम नहिं जाना । जोग बैराग यह मन मत ठाना १९५९९ ।	सतनाम
सतनाम	सत पुरुष की मरम ना पावै । तिनि लोक महं पाहिलावै १९६०० ।	सतनाम	चौथा लोक गुन गहिर गंभीरा । आवागवन मेटा सब पीरा १९६०१ ।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	118	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साखी - १५८	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	रामानंद गुरु सुनिये , ज्ञान करार कमान ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	करो विवेक विचारि के , मरना सांझ बिहान ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	मम गुरु तुम शिष्य कहाई । बहु विधि बात कथो चतुराई १९६०२ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आपन गुन कहि सब गुन मेंटा । दुजा करता केहि जग भेंटा १९६०३ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	आवे जाय माया कर रूपा । ताहि कहो तुम तिर्गुन सरूपा १९६०४ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	राम नाम सुमिरहिं सब संता । सो तुम कहत हो फंद अनंता १९६०५ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	जोग जाप नहिं मुक्ति बिरागा । तुम कथी कहेव भीने अनुरागा १९६०६ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	गुरु से सत गुरु दुजा ना अहई । एक गुन दुनों में लहई १९६०७ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	तुम सतगुरु का लोक बताया । यह गुन निगम कबहिं नहिं गाया १९६०८ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सिद्ध साधु मत जग में अहई । तुमतौ मता भीने कछु कहइ १९६०९ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	बाद विवाद बहुत हितकारी । जोग जाप नहिं भक्ति विचारी १९६१० ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	संत मत सीतल गुन ग्याना । गुरु के वचन सदा विख्याना १९६११ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साधु संत सेवा नहिं करहु । बहुविधि वचन जानि परिहरहु १९६१२ ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साखी - १५९	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साधु सेवा निजु भक्ति है, गुरु पद पदुमप्रयाग ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	तेजहु वादि विवादि यह, जाय कथो अनुराग ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साधु सेवा समुझे बनि आवे । गुरु सतगुरु का भेद न पावै ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	भेष भर्म को का बड़ि बाता । जाके सतगुरु मिलही जो ज्ञाता ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	अमी दृष्टि जहाँ निसदिन दासा । तहाँ ओस के कवन है आसा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	अलाल पहरी का खबरी जो भावे । पंक्षी का संग विसरावै ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	जाके पास पारस धन अहई । कोटि नग लाल कांच क्या करई ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	परिमल पुरुष मुआ बहीं कबहि । पारस परसी चन्दन भौ तबही ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	पारस से पारस नहि भयऊ । कहवे के चन्दन यह अयऊ ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	परिमल वृक्ष चन्दन भौ परसै । करै सुरति छवि इमि करि दरेसे ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	प्रतिबिम्ब छवि निर्गुण अहई । सो गुण हंस बिलगि यह कहई ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हंस काम के करो विचारा । काग समेटि हंस विलगावनि हारा ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	साखी - १६०	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	काग कुबुद्धि यह जानिए, सुमति सदा है सार ।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	हंस दशा निर्मल कहो, सो गुण कहे करार ॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	119	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

चौपाई

हम नर तन तुम परम प्रतापू। मम भव भर्म मेटहु तन तापु॥
 धन्य धन्य सतगुरु यह राजू। जग में दया दृष्टि तुम छाज॥
 निर्गुण सर्गुण कहि निरुवारी। भव के भर्म सभे मेटि डारी॥
 तुम सतगुरु हो परम पुनीता। अवगुण कहो बुझो मम हीता॥
 दधी मथे धृत बाहर आवे। तदपि हंस गुण लेप न लावे॥
 छांछ पीवे सो मद मतवाए। केरे भक्ति का गुण निरुवाए॥
 ज्ञान पुरुष भक्ति है नारी। ज्ञान बिना का भक्ति बिचारी॥
 सेवा सक्ति पुरुष जो पावे। पुरुष बिना कवन सुख आवै॥
 भक्ति शक्ति का एक रसवानी। करै कलोल कवन रस जानी॥
 ऐसे ज्ञान पुरुष के जानी। सक्ति भक्ति का यह ढावी॥

साखी - १६१

ज्ञान बिना भौ चल लागा, भरमि भरमि भव आय।
 माया ब्रह्म चीन्हे बिना, गुण निर्गुन कहाँ पाय॥

चौपाई

सतगुरु सतपरम गुरुहीता। अब बूझा तुम वचन पुनीता॥
 हमके गुरु तुम किमि कहिस्वामी। मम अनोध तुम अन्तजानी॥
 दयावन्त दया बहु कीन्हा। जढ़ जेठर के चेतावनी दिन्हा॥
 धन्य साहेब तुम दृष्टि उजागर। कुमति कूप तेजो भव भागर॥
 ऐन भवन में स्वान भुलाना। अपनी प्रतिमा से पिसिमाना॥
 केहरि कूप चीन्हि नहिं आया। कूदि परा पीछे पछताया॥
 वनधक जवे दृष्टि में लागा। उलटि पंथ वाहे गहि पागा॥
 अब मैं वचन बूझा निरुवारी। जब है भूल डार पसारी॥
 बिना भूल छाह कहाँ ते आवे। छाह से भूल बहुरि नहि पावै॥
 रहेवे वेसरण सरण में गहिहों। इमि करि दास परम पद लहिहों॥
 लगन मध्य में दीआ लीहों। कल्प कोटि दुःख कबही न सहिहों॥

साखी - १६२

लगन विचारेवो सोधि के, आजु लगन भै भंग।
 काल कल्याण यह युक्ति है, गहों तुम्हारे संग॥

साखी - १६३

कालहुँ कर्म यह करत हौं, कालहु काल के हाथ।
 बीच अचानक देत है, बहुरि गहे कब साथ॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	प्रनाम प्रीति करि चले बिचारी । सुरति निरति में ततु सुधारी । १६१३ ।	सतनाम	विप्र कहे भाला गुरु कीन्हा । रामानंद तुम्हे दरसन दीन्हा । १६१४ ।	सतनाम	सिध पुरातम जोग अभ्यासी । नीसु बासर सुमीरहिं अविनासी । १६१५ ।	सतनाम
सतनाम	गुरु से गुष्टि ब्यान तुम कहेउ । भली वचन दरसन फल लहेउ । १६१६ ।	सतनाम	श्रवन सुनत तब इमि चलिऔउ । विवेक विचार मत येह ठहउ । १६१७ ।	सतनाम	कहिं नींदा कहिं अस्तुति करई । आपन आपन मत सब लहई । १६१८ ।	सतनाम
सतनाम	ब्राह्मन और सन्यासी जेते । नींदा अस्तुतति करते केते । १६१९ ।	सतनाम	सतगुरु सत की मरम ना पाइ । बहुविधि वचन रहहिं अरुझाइ । १६२० ।	सतनाम	काजी मोलना पढ़ई कोराना । आपन सिक्कि करहिं मनमाना । १६२१ ।	सतनाम
सतनाम	वे सारा कलमा नहिं जाना । श्री करत येह भया देवाना । १६२२ ।	सतनाम	पंडित मोलना एक मत भएउ । ईमि करिबात पुछन तब चहेउ । १६२३ ।	सतनाम	साखी - १६४	सतनाम
सतनाम	काजी मोलना पंडिता, मिले बाट में आय ।	सतनाम	दुनो दीन विसराइआ, कहो कबीर समुझाय ॥	सतनाम	छन्दतोमर - ३६	सतनाम
सतनाम	कै चौकरी चली जाहिं, बोए पुर्ष विनसहिं नाहिं ॥	सतनाम	बोए मंतिल दूरि मकान, का पढ़ा वेद कोरान ॥	सतनाम	बोए जीवन मुक्ति है जींद, नहिं मादर पादर वींद ॥	सतनाम
सतनाम	मोरिद पीर नहिं साथ, नहिं कलम कागज हाथ ॥	सतनाम	सत पुर्ष ब्रह्म अमान, नहिं गीता पढ़ा पुरान ॥	सतनाम	नहिं हेला मेला रंग, नहिं औरत को पर संग ॥	सतनाम
सतनाम	नहिं त्रिगुन ताप शरीर, नहिं लरत बीचिलत बीर ॥	सतनाम	रहिमान रहम रहीम, सब में हर कर्म करीम ॥	सतनाम	वोय मरण जीवन न ध्यान । कै कल्प सांझ बिहान ॥	सतनाम
सतनाम	गरकाब गहिर गंभीर, नहिं सुखत बरखत नीर ॥	सतनाम	बोए अलफ एलीम पार, दरियाब दर है वार ॥	सतनाम	बोए कादिर कलिमा भीन, कोई इयार महरम दीन ॥	सतनाम
सतनाम	नहिं जोग जागे ध्यान, बोए ब्रह्म उदित अमान ॥	सतनाम	तेबाह वाहि जान, सुनु पंडित मोलना ज्ञान ॥	सतनाम	करु दर्द दरसन होय, निज नाम ज्ञान समौंय ॥	सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - ३६			
सतनाम			हरदम माना तसवी दाना, वाना इया जग सो रहियं ॥		सतनाम	
			कोई मुद्रा फारे तीलक सवारे, डारे तसवी सो लहिय ॥			
सतनाम			कोई बोढ़े दोशाला अलफी डाला, माला करमें ततु गहियं ॥		सतनाम	
			कोई करत नीमाजा पुजा साजा , बाजा संख धूनि ले रहियं ॥			
			सोरठा - ३६			
सतनाम			पंडित मोलना जान, उह दर बेसा दर्द है ॥		सतनाम	
			सतपुर्ष अलाह के मान, बोए गीता पड़ा कोरान तुम ॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			इमि करि पंथ जक्त में भएउ । निरगुन स्त्रगुन मत दो ठएउ ॥१६२४॥			
सतनाम			ऐसन दिल में कीन्ह बीचारा । इमि करि मत मगहर पगुढ़ारा ॥१६२५॥		सतनाम	
			हिंदु तुरुक तहां दुनो रहेऊ । कहि निजु ज्ञान उन्हें समुझैऊ ॥१६२६॥			
सतनाम			तुरुक के पीर हिंदु गुरु कहेऊ । आपुस में झगरा इमि ठएऊ ॥१६२७॥		सतनाम	
			तन के त्याग मगहर आई । कबुर दीन्ह बहु भांति बनाई ॥१६२८॥			
सतनाम			पीछे इमि करि सब पछतेऊ । कबीर पीर साहब एक रहेऊ ॥१६२९॥		सतनाम	
			हिंदु कहे सतगुरु गुरु ज्ञाता । कहे बिप्र कोई ब्रह्म विधाता ॥१६३०॥			
सतनाम			बालक से तरुना पन भएउ । तरुन से बीध तीसर पन अयऊ ॥१६३१॥		सतनाम	
			चारिउ पन तन करिहें भोगा । जोग जुक्ति तनब्यापु ना रोगा ॥१६३२॥			
सतनाम			सत्य पुर्ष बालक नहिं अहई । बालक से तरुना नहिं कहई ॥१६३३॥		सतनाम	
			जेहुँ तेहुँ तत्तु गहिर गम्भीरा । सत्य पुष के पुत्र कबीरा ॥१६३४॥			
सतनाम			साखी - १६५		सतनाम	
			सोरह सुत पुर्ष के, तामे एक कबीर ।			
सतनाम			आवै जाए जक्त में, फिरि फिरि धरे शरीर ॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			ज्ञान ग्रंथ पुर्ष नहि कहई । जो जनमें जग मत यह लहई ॥१६३५॥		सतनाम	
			जो जन्में जग पथ चलावै । सत्य पुर्ष के गुन सो गावै ॥१६३६॥			
सतनाम			दीए सै वर्ष बिति जब गएउ । धर्मदास कीहां जिंदा अएऊ ॥१६३७॥		सतनाम	
			दीन्ह अकूप सबे समुझाई । धर्मदास चीन्हा ततु लगाई ॥१६३८॥			
सतनाम			धर्मदास प्रेम लव लीना । नाम कबीर पथ कहि दीना ॥१६३९॥		सतनाम	
			सत्य पुर्ष पुरान बोए कहई । यह लीला गति बिरले लहई ॥१६४०॥			
सतनाम			कहि दिन्ह छापा सनदि टकसारा । एक से भवे बिबिधिबिसतारा ॥१६४१॥		सतनाम	
			एक से बारह पंथ जो भएऊ । आपन आपन मत सब कहेऊ ॥१६४२॥			
सतनाम			122		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
जाके गमि होय ज्ञान बुझाई । सोनहिं जाहिं कवहिं बिलगाइ । १९४३ ।	सत	यह ज्ञान मृथा नहिं अहई । जो कोई प्रेम जुक्ति से लहई । १९४४ ।	सतनाम	सतगुरु सतवानी । सतवचन लेवै मानी । १९४५ ।	सतनाम	
	साखी - १६६	सत सुकृत हिए में वसे, सते नाम अधार ।	सतनाम	बहु बानी सब तेजिके, उतरहु भौजल पार ॥	सतनाम	
	चौपाई	सत्य पुर्ष अस कीन्ह विचारा । सुक्रीत बहुरि लेहू अवतारा । १९४६ ।	सतनाम	हुकुमभया तब गर्भ में अएऊ । दसमास तहां ध्यान लगएउ । १९४७ ।	सतनाम	
	भया जन्म बालक तब रहेऊ । आनंद मंगल सब मिलि गएउ । १९४८ ।	सतनाम	जेकरा जैसन से करू दाना । कहिं पांच कहि तीस परधाना । १९४९ ।	सतनाम		
	कहिं जग्य कहिं पाठ पुराना । केहु आपन कुल करमें माना । १९५० ।	सतनाम	जो कछु विधि है सो सब कीन्हा । पीछे छीर मातु पह लीन्हा । १९५१ ।	सतनाम		
	एक मास जबहीं बिति गयऊ । ता गृह बीच साहब चलि अयऊ । १९५२ ।	सतनाम	जिंदा रूप बोय अजर अमाना । दाया कीन्ह दृष्टि में आना । १९५३ ।	सतनाम		
	मम माता कहे फकीर कोई अएउ । बालक ले निकट चलि गयउ । १९५४ ।	सतनाम	नख सिखनिके निरखि निहारी । नहिं किछु ऐगुन लक्षन विचारी । १९५५ ।	सतनाम		
	बालक सेवा बहुत तत्तु लइहो । दरिया नाम पुकारन करिहो । १९५६ ।	सतनाम	साखी - १६७	सतनाम		
	अतना वचन विचारि के , करता गृहि ते जाय ।	सतनाम	लीला अगम अपार है, कवन लखे तेहि आय ॥	सतनाम		
	चौपाई	नव वर्ष जवें गत भयऊ । मातु पिता मिलि ब्याह जो ठयऊ । १९५७ ।	सतनाम	कीन्हा विवाह विलम ना लाई । इअहकवतुक हम लखि नहिं पाई । १९५८ ।	सतनाम	
	कीन्ह तपेस्या पहुंची आई । मन करता यह विधी बनाई । १९५९ ।	सतनाम	भावी पर्वल्ल इमि केहु ना चीन्हा । दुबो जुगल एक मत कए दीन्हा । १९६० ।	सतनाम		
	पंदरह वर्ष जवें बिति गएऊ । बहुत उदास तब दिल में भएऊ । १९६१ ।	सतनाम		सतनाम		
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सपने सोवत पद इमि कहेऊ । जागत फेरि बिसरि नहिं गएऊ ॥१६६२॥	अपने दिल में इमि करि जानी । कासो कहों गुप्त मत ठानी ॥१६६३॥	फिरि बरे फिरि जाए बुझाई । भयो प्रकास दृष्टि में आई ॥१६६४॥	माया ममिता फिरि तन आवे । फिरि फिरि बिहुर ज्ञान पर धावे ॥१६६५॥	अैसन झेल जक्त कुल करमा । जेहि लागे सो जाने मरमा ॥१६६६॥	करहिं विवेक विचारहिं जाई । जनु मम जन्म देह धरि आई ॥१६६७॥	
			साखी - १६८			
			पुरा कीर्त सब सूझि परे, कहे कवन पतियाय ।			
			पछिला बात विचारी के , रैन गुनत दिन जाय ॥			
			छन्दतोमर - ४०			
			वर्ष बीस बीतेव जानि, इमि खुले धट में खानि ॥			
			इह श्रवन स्त्रोता जानि, इमि निर्गुन सर्गुन बखानि ॥			
			भौ पदुम पद परकास , भव ज्ञान गुन निज दास ॥			
			सब भवो अनमो ज्ञान, भव रहित पद निवान ॥			
			नर कहत कवि अनुरागा, इमि बिरह विमल बीराग ॥			
			नहिं सुनेव पाठ पुरान, इमि नीपढ़ करि विख्यान ॥			
			यह भक्ति भागे पाय, पुरा कीर्ति कर्म विहाय ॥			
			इमि कहत धन बखान, यह अस्तुति सांझ विहान ॥			
			भौ भक्ति हरि पद प्रीति, सब तेजि भर्म अनीति ॥			
			इन्हि दास पदवी पाय, सब कहत निज गुन गाय ॥			
			करि दरस दरसन आय, सुनि स्त्रवन प्रीति लगाय ॥			
			सुबुधि सुघर सुज्ञान, सब विविधि करि विख्यान ॥			
			कोई संत मंत असंत, संसार तीर्बिधि अनंत ॥			
			भौ भक्त भेख को संग , करि आरति ताल मृदंग ॥			
			करि सिधि रिधि गुन एत, करि नौधा भक्ति सुखेत ॥			
			124			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्दनराच - ४०			
सतनाम			भेख विरागी इमि गुन जागी, त्यागी माया मन को रंग॥		सतनाम	
			त्रीया सुागी चरनन्हि लागी, जागी भक्ति में गुन सब संग॥		सतनाम	
सतनाम			सच जुक्ति है जागा तेजिरम भागा, सागर सोग कुमति भव भंग॥		सतनाम	
			कलि मलि गंजन पापहिं भंजन, संजन जन सुख इमि करि संग॥		सतनाम	
			सोरठा - ४०		सतनाम	
सतनाम			भाव भक्ति नीजु ज्ञान, दासा पन इमि जानिया॥		सतनाम	
			इमि जुरे संत सुजान, मिलिजुलि गुनसब गावहिं॥		सतनाम	
			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			मंदिल माह भेद कहि दीन्हा। करहु भक्ति परम पद चीन्हा।१६६८।		सतनाम	
			अमर लोक ले हम चलि आई। सत्य पुरुष के गुन इमि गाई।१६६९।		सतनाम	
सतनाम			चिन्हहु सतगुरु लेहिं मुक्ताई। भव सागर में बहुरि न आई।१६७०।		सतनाम	
			मीन मासु सब तेजहू बिकारा। हंस दसा गुन निरमल सारा।१६७१।		सतनाम	
सतनाम			देवा देइ दूरि सब किजिये। संत साधु आतम कहं पुजिये।१६७२।		सतनाम	
			मांतु पिता भ्राता मिलि कहेऊ। हुकुम तोहार सोई भल अहेऊ।१६७३।		सतनाम	
सतनाम			तेजि कुमति सुमति में ऐउ। दुर्मति तेजि एक मत भएउ।१६७४।		सतनाम	
			सतनाम औ राम गुन कहेउ। राम नाम बिलगी गुन लहेउ।१६७५।		सतनाम	
सतनाम			कथा ग्रन्थ ज्ञान प्रसंगा। बिमल बिरोग नाम निज रङ्गा ^२ ।१६७६।		सतनाम	
			दरिया सागर प्रथमहिं कहेउ। जोग बिराग ज्ञान निज लेहउ।१६७७।		सतनाम	
सतनाम			आदि अन्त सब कथा बिचारी। पंडित सुनि के भया हंकारी ^३ ।१६७८।		सतनाम	
			साखी - १६६		सतनाम	
सतनाम			पंडित मम एक ग्राम में, बेद मता उन्हि जानि।		सतनाम	
			इहां सत पद ज्ञान मत, किमिहोए दुइ कीमानि॥ १६३॥		सतनाम	
			चौपाई		सतनाम	
सतनाम			पहिले बीप्र प्रीति भल कीएउ। अस्तुति छोड़ि नींदा में गएउ।१६७९।		सतनाम	
			ब्रह्मा बीशन तीनिउ गुन अहेउ। राम कृष्ण में माया कहेउ।१६८०।		सतनाम	
सतनाम			व्यास पुरान बेद मत कहेउ। ताके कहे कवि शास्त्र भएउ।१६८१।		सतनाम	
			सालिग्राम प्रमेश्वर देही। ताके कहे पाहन गुन एही।१६८२।		सतनाम	
सतनाम			सुरसरी कलि में पापहिं धोवे। आवत जात बहुरि फिरि रोवे।१६८३।		सतनाम	
			तीरथ ब्रत सब देत मेटाई। या की बात कहा नहीं जाई।१६८४।		सतनाम	
सतनाम			है मलेश यह मर्म ना जाना। पहिले भक्ति पीक्षे बउराना।१६८५।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम</			

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
अक्षर काया कमल तेहिं पासां मारग झिन झरि देखे तमासा।१७०८।	अखांडित बुंद नीकंद जो कहई। छटाँ चमकि चहुं इमि कर रहई।१७०९।	गरजि घुमरि तहां सेत सोहाई। ब्रह्म बिमल होए तब मत आई।१७१०।	सोहंगू जोहंगू कोहंगू कहई। काया मध्य भेद यह लहई।१७११।	छापा ^६ सतगुरु सत जो जाने। तीनि लोक की बात ना माने।१७१२।		
साखी - १७२	प्रेम बसे रसना' महं, नैन कमल भृंग बास।	बानी सुधा समेत है, इमि करि सुमिरहिं दास॥	छन्दतोमर - ४१	सत शब्द कीन्ह उचार, सत पुर्ष बिमल सार॥	सुनि काल करसे जानि, इमि करत विद्या ^८ हांनि॥	सब नींदक पंडित साथ, करि कुमति धुने माथ॥
मम दिल बहुत उदास, किमी भजन करिहें दास॥	नर नारि मत भव एक, नहिं करत शब्द बीवेक॥	सब अनंत फंदा काल, एहि नग्न परू जम जाल॥	बहु बानि बोल बिकार, इमि परे त्रिगुन धार॥	सब कथहिं चतुरा चीत, नहिं जानु सतगुरु हीत॥	जब सुनहिं सत को भाव, इमि कुमति खेलहिं दाव॥	जम जमुदीप है थान, नहिं मानहिं सतगुरु ज्ञान॥
कोइ हंस वंश जो होय, गुन अमित सागर सोय॥	सब नीर छीर है एक, इमि बिलगि बिवरन टेक॥	बग ^१ धरत औधा ध्यान, सो घात में परधान॥	सब संग ज्ञान ग्रन्थ, इमि चलेउ उतरा पंथ॥	ब्राह्मन बीर्बल साथ, करि सेवा संग सनाथ॥	छन्दनराच - ४१	प्रेम प्रकासी भए उदासी, दासा पन गुन सो धरिए॥
जुक्ति प्रकासी नाम उपासी, परसि परसि पद इमि लहिए॥	मिलि जो ज्ञाता कही सतबाता, रतन जतन यह इमि धरिए॥	कहि अनुरागा प्रेमहिं पागा, लागेव जन बिरला कहिए॥	सोरठा - ४१	गएव सो सुरसरि तीर, मंजन कियो शरीर यह॥	धारा तीरछन नीर, चढ़ि तरनी इमि पार भव॥	

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		साखी - १७३				
सतनाम		नग्र त्यागि तुम किमि चले, उलटि जाहु तेहि पास। अकुफ आगे सब होइहें, सुनो वचन निजु दास॥	सतनाम			
		चौपाई				
सतनाम		वचन बोलि तबही चलि गयऊ। मम पीछे पछताना भयऊ।१७१३।	सतनाम			
		की कोई सिद्ध साधु यह रहेऊ। इनकर लीला लखिनहिं पयऊ।१७१४।				
सतनाम		उदय भानु भयो तिमिर नासा। चले पीछे के बहुत उदासा।१७१५।	सतनाम			
		पांच मास बीते चरिम भाई। सुरसरि लांघि इहाँ नियराई।१७१६।				
सतनाम		मास अषाढ़ नग्र तब अयऊ। बादर थय कीन्ह ग्रीह नहि गयऊ।१७१७।	सतनाम			
		बरखा विविध कीन्ह परगासा। कृषि करहिं लोग चहुँ पासा।१७१८।				
सतनाम		मातु पिता अव गृह में नारी। सोचहिं सब मिलि बहुत दुखारी।१७१९।	सतनाम			
		लीन्ह लियाय मन्दिल में गयऊ। भाव भक्ति यह निसिदिन कीयऊ।१७२०।				
सतनाम		आषाढ सावन भादो विति गयऊ। मास कुवार निकट चरिम अयऊ।१७२१।	सतनाम			
		सर्द दिन इमि निर्मल चन्दा। हुलसेव कुभुदिनी परम भनण्दा।१७२२।				
सतनाम		आधा मास जबगत भाएऊ। समपुरुष गृह दर्शन दियेऊ।१७२३।	सतनाम			
		साखी - १७४				
सतनाम		मम दासी यह महल ते, थरिया भर डाल दीन्ह। पाँव पखारी दर्शन कियो, चरणा अमृत सो लीन्ह॥	सतनाम			
		चौपाई				
सतनाम		उपजा प्रेम भक्ति तेहि अयऊ। वृगसेव कमल नयन भार रहेऊ।१७२४।	सतनाम			
		चिन्हेव मम सत करता अहेऊ। आगे वचन समन्हि से कहेऊ।१७२५।				
सतनाम		मोह सन्ते सभ गुण विसरइहे। अगम लीला केहु भेद न पइहो।१७२६।	सतनाम			
		सतपुरुष अपने चलि अयऊ। दर्शन देखि परम पद पयऊ।१७२७।				
सतनाम		साहन मधुर प्रेम रस वानी। सुनेव श्रवण मम अमृत सानी।१७२८।	सतनाम			
		छपलोक अजर स्थाना। ताहि शहर ले कीन्ह पयाना।१७२९।				
सतनाम		हम अडोल नहि डोलनिहारा। छीर के छपा न रहे हमारा।१७३०।	सतनाम			
		सतपुरुष वेवाक जो कहई। मातु पिता नहि हमके अहई।१७३१।				
सतनाम		इहां साहिजादा अहे हमारा। ताके पास छापा टकसाए।१७३२।	सतनाम			
		कहे अकूफ फहम जबलाने। छपा सनदि मोहर जो पावै।१७३३।				
सतनाम		करहि अकूफ प्रेम लव लाई। इन्हकर लीला लखि नहि जाई।१७३४।	सतनाम			
		128				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	हरदी नग्र जवें चलि गयऊ। नग्र नीर्प दरसन के अयऊ।१७३५।	सतनाम	नीर्प संग पंडित बेद अभ्यासी। उनसे ज्ञान कीन्ह परगासी।१७३६।	सतनाम	जोग ज्ञान भक्ति उन्हि पूछेउ। अर्थ सधारन इमि करि कहेउ।१७३७।	सतनाम
सतनाम	पंडित कहे साधु भल अहई। निर्गुन सर्गुन दुनोमत कहई।१७३८।	सतनाम	पपिलक और बिहङ्गम कहेउ। पंडित कहे सभे मत अहेउ।१७३९।	सतनाम	त्रिप परमारथ बहुते जाना। संत साधु के आदर माना।१७४०।	सतनाम
सतनाम	नग्र के लोग प्रेम बहु कीएउं। इमिकरि एक मास बिति गएउ।१७४१।	सतनाम	रमि चले फेरि भए उदासा। मगु में मगन प्रेम प्रगामा।१७४२।	सतनाम	रइनि देवस एहुँ बिति गएउ। सैल करत मगहर में अएउ।१७४३।	सतनाम
सतनाम	टिकेव तहां निज थए बनाई। बासर बीते रइनि चलि आई।१७४४।	सतनाम	अर्ध राति जबहिं गत भएउ। जिंदा रूप तब साहब अएउ।१७४५।	सतनाम	पूछहिं बचन कहां चलि जाई। अवध पुरी के सुरति लगाई।१७४६।	सतनाम
सतनाम		साखी - १७५				
सतनाम		लील अजर अनूप है, लेहदयकीन्ह बिस्वास।				
सतनाम		जींदा अजर अमान हैं, ममताहिचरन को दास॥				
सतनाम		चौपाई				
सतनाम	दुइ डंड दिन जब रहेऊ। तब साहब निजु दरसन दीएऊ।१७४७।	सतनाम	आई निस दिन बिति गएऊ। सत्य पुरुष ओए थए पर रहेऊ।१७४८।	सतनाम	मम बाहर फिरि भीतर अएऊ। एहि प्रकार रइनि बिति गैएऊ।१७४९।	सतनाम
सतनाम	पाणि जोरि बंदगी जो कीन्हा। साहब खुस दिल नाहिं लीन्हा।१७५०।	सतनाम	करहिं सलाम जो खुसदिल आई। क्रोनिंसि करे अदब से जाई।१७५१।	सतनाम	देहिं तखत जो अदल चलावै। सहिजादा मम सुत कहावै।१७५२।	सतनाम
सतनाम	राह छोड़ा ^६ जीव मुकुतै हों। छप लोक ले तेहि पठइहो।१७५३।	सतनाम	तुम चलो संग जनि पीछे जाई। करो अकूफ अकिलि तुम पाई।१७५४।	सतनाम	साहब आपू नीमेरा गएऊ। हृदय सोच पीछे पछतएऊ।१७५५।	सतनाम
सतनाम	दुइ देवस ^७ ऐसे बिति गएऊ। तब साहब मंदिल के अएऊ।१७५६।	सतनाम	हस्त हाल साहब कहं देखा। अजर अंग अंविगति इमि लेखा।१७५७।	सतनाम		
सतनाम		साखी - १७६				
सतनाम		धरेव कदम ^८ दिल गदगद, आंमृत पोखन पाय।				
सतनाम		धन साहब दरसन दीवो, दुरमति गई बिहाय॥				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

छन्दतोमर - ४२

सत पुरुष सत स्वरूप, इमि अजर अविगति रूप॥
 गर काब गहिर गंभीर, इमि काया सामर्थ बीर॥
 दाया सेंधु सर्व है सार, गृहि दरस दीन्ह करतार॥
 जग जीवन जींद हे पार, समदृष्टि^१ सीतल सार॥
 मम कष्ट मेटेव बेकार, धन दर्स प्रेम उदार॥
 नहिं कियो कल्पनि जोग, सबबनेव बिबिधि संयोग॥
 येह ब्रह्मपुर्ष पुरान, मम जानि करू बिख्यान॥
 मुनि कथेव निगम सार, सबबिबिधि कहि बिस्तार॥
 सब रहत धरि धरि ध्यान, नहिं दर्स पुर्ष पुरान॥
 सब झुलत है धुर्म पान, सबनानाबिधि कथिग्यान॥
 सब बिद्या बेद कुलीन, करि दान पुन लौलीन॥
 पार ब्रह्म कहेव अनंत, नहिं दुढ़त मिले अन्त॥
 कहे सर्गुन निर्गुन निरास, गुन रहित सब परकास॥
 निरंकार जोति सरूप, कथि सक्ति भाव अनूप॥
 अथाह वार ना पार, को केवट है करू वार॥

छन्दनराच - ४२

सत करतारा खेवनिहारा, वारे पारे सो रहिअं॥
 हंस उबारा भव जल पारा, धार थीर कनहरि गहिअं॥
 चलि जहाजा नौबत बाजा, साजा सब बिधि गुन कहिअं॥
 अजर अमोला बचन अडोला, डगमग कबहिं ना थीर कहिअं॥

सोरठा - ४२

सत पुर्ष ब्रह्म अनूप, दया कीन्ह दरशन दियो॥
 सदा है सत सरूप, मम गुन कहेउ बिचारिके
 चौपाई

अरज करि अन्दर बैठएऊ। चरन कमल पद हृदय लैएऊ। १७५८।
 ऐसन प्रेम कमल बीर्ग सावै। परिमल अग्र डांक^३ सब धावै। १७५९।
 सेत सेत सब होए प्रकासा। सत पुर्ष जहां लीन्ह नेबासा। १७६०।
 कासे कहों कवन पति आई। मानो अग्र छत्र सब छाई। १७६१।
 अपने खुलि बोले तब बएना। बीगे से^४ कमल भयासुख चएना। १७६२।
 देखेव शहर कोई नहिं गएऊ। भवसागर^५ में सभे लोभएऊ। १७६३।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अबदुलह खांव मति सबकि फेरी। बांधेव सभे काल की बेरी।१७६४।	सतनाम	एहि भांतिन्ह है जग में बरता। या के छोड़ि दूजा नहिं करता।१७६५।	सतनाम	मन रंझा सभे रंझि रहेऊ। बिरला कोई लोक महं गएऊ।१७६६।	सतनाम
सतनाम	काले तुम्हें दुख दियो आई। शहर छोड़ि यहां चलि आई।१७६७।	सतनाम	राखो जिब एह जग में आई। छापा सनदि गहो चित लाई।१७६८।	सतनाम	साखी - १७७	सतनाम
सतनाम	अकुफ कहेव समुझाई के, गहिर गुंगा ^१ होय जाय।	सतनाम	फहस ^२ कतहींनहिं कीजिए, काल नोमेरो आय॥	सतनाम	॥ चौपाई॥	सतनाम
सतनाम	उठि प्रात बाहर के गएऊ। तेहि पीछे हमहूं चलि भएऊ।१७६९।	सतनाम	अर्ध सुरति पुहुमी ^३ पगु देखा। अमर पुर्षहहिं अविगति लेखा।१७७०।	सतनाम	ऐसन मोह सकल तन भएऊ। आई सुरति पीछे चलि गएऊ।१७७१।	सतनाम
सतनाम	साहब बचन कहा समुझाई। पीछे टरे बन्धुआ होय जाई।१७७२।	सतनाम	मम ऐसन मत निश्चय दिल ठाना। मन के रंग तब इमि पहचाना।१७७३।	सतनाम	सुचित चित्त हृदय सुख पएऊ। धन साहब सत बचन सुनएऊ।१७७४।	सतनाम
सतनाम	कीन्ह नीमेरा ^४ थए तब कीएऊ। नग्र एक तहवां गए रहेऊ।१७७५।	सतनाम	बीतेव रैनि डंड दुई चारी। साहब अगम कहा निरुवारी।१७७६।	सतनाम	अंतर्जामि अन्तरगति जाना। क्षुधा ^५ त्रिखा सब आए तुलाना।१७७७।	सतनाम
सतनाम	हुकुम भया तबहीं चलि अएऊं अनवा चीज रूजु तब भएऊ।१७७८।	सतनाम	डारेव अन ठंढा यह तबहीं। साहब रूजु ^६ किया यह जबहीं।१७७९।	सतनाम	साखी - १७८	सतनाम
सतनाम	उठि प्रात सुरति करि, नग्र पहुंचे आय।	सतनाम	दयावंत दया कीन्हों, आनन्द मंगल गाय॥	सतनाम	॥ चौपाई॥	सतनाम
सतनाम	दूध मगाये खीर तब कीएउ। थारी भरी आगे तब दीएउ।१७८०।	सतनाम	प्रेम प्रीति इमि कर कहेऊ। धन्य भाग हमारो भयऊ।१७८१।	सतनाम	पीछिली बात इमि करि कहेउ। यह धन भाग हमारा अएउ।१७८२।	सतनाम
सतनाम	दखीन माहं खीर दिन्हों डारी ^१ । इमि करि बचन जो बोले बिचारी।१७८३।	सतनाम	धर्म दास के इच्छा दीन्हा। खीर दर्ई कपड़ा वहां लीन्हा।१७८४।	सतनाम	करि सलाम अरज तब कीएउ। बचन हमार दृष्टि दे सुनेउ।१७८५।	सतनाम
सतनाम	काशी कबीर कवन वोए रहेउ। यह निज बचन दया करि कहेउ।१७८६।	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम

सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम
सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	इमि दास पास अधीन, मम हृदय होत न भीन॥ इमि लोचन ^४ ललचेव आय, गुन प्रेम सुखद सुहाय॥ इमि पलक होत न भोर, जिमि दृष्टि चंद चकोर॥ तुअँ चरन पदुम प्रकास, मम भमर भओ निज दास॥ इमि बिलगि बिहरिन जाय, सब घानि घन लपटाय॥ धन भाग मम तुम्हँ पाय, सत पुरुष मिलेव आय॥ छन्द नराच - ४३	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	भौ भक्ति बिरागा निरमल जागा, भाग भला दरशन पाई॥ पुरुष अडोला बचन अमोला, ललचि लगा लोचन आई॥ मैं तुअँ दासा प्रेम प्रकासा, परखि परखि ^५ पद इमि गाई॥ तुम सिंधु सुभागा जागृत जागा, पागेव पगु मम गृहि आई॥ सोरठा - ४३	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सत्य पुरुष ब्रह्म पहचानि, सत्य पुरुष आपु अमान है॥ और दूजा नहिं जानि, सुकृत कहे विवेक करि॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	करन नीमेरा जगमें गएऊ। मम सक्ति संग प्रेम गुन गएऊ।१८०२। निगम ^६ बोध करहिं दिन राती। निरंजनकला ^७ बिबिधिबहुभांती।१८०३। बिना बोध सुध नहिं होई। करत बोध इमि सभे बिलोई।१८०४। धै लावहिं फिरि बिछुरे जाई। घोरि पकरि के तेहि समुझाई।१८०५। गस्ति ^१ जट का करहिं नीमेरा। औ रटू ^२ जग है बहुतेरा।१८०६। भींङि ^३ बेद भरम सब कहेऊ। बहु बिधि मता जक्त में भएऊ।१८०७। दफा दफा सब कहेऊ बिचारी। आपन दफा लेहिं निरुवारी।१८०८। चिबा ^४ चौक जहां एक रहेऊ। बैठि तहां कागज सब किएऊ।१८०९। दरबारी दरथाए जो कीन्हा। यह लीला गति बिरले चीन्हा।१८१०। करि अकूफ फहम जो भएऊ। मन के चरित्र सभे बुझि अएऊ।१८११। पुरुष एक मन बहु बिधि भएऊ। फिरि वै उलटि पुरुष पहं अएऊ।१८१२। साखी - १८१	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	करहिं नीमेरा जक्त में, लेहिं जिवबंद छोडाय। किओअकूफ सब फहमकरी, परगट दीन्ह देखाय॥ १७५॥	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	133	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			॥ चौपाई ॥			
सतनाम	सालि सूखि बरषा धरि गएऊ। बहुत कष्ट ^५ किसानहिं भाएऊ। १८१३।	सतनाम	हृदय अरज मम इमि करि रहेऊ। बाहर बचन प्रगट नहिं किएऊ। १८१४।	सतनाम	अंतरजामि अन्तरगति लहेऊ। जो मम हृदय पगट कहि दिएऊ। १८१५।	सतनाम
सतनाम	ठंढा बिना गर्म जग भाएऊ। हुकुम हमार सभे बिधि रहेऊ। १८१६।	सतनाम	एक जाम ^६ में यह सब कीन्हा। बर्षा मेंह धरती पर दीन्हा। १८१७।	सतनाम	भवो सुखद इमि दुख सब गैएऊ। आनंद मंगल सब बिधि भैएऊ। १८१८।	सतनाम
सतनाम	बहुरि दृष्टि में इमि करि कहेऊ। बादर खुलि निमेरा भाएऊ। १८१९।	सतनाम	धन करता तुम सब किछु किएऊ। आदि अन्तगुन सब किछु लहेऊ। १८२०।	सतनाम	सतपुरुष हुकुम जो करहीं। करता ^७ बचन सत यह लहहीं। १८२१।	सतनाम
सतनाम	अमर पुर्ष अमर अस्थाना। पुहुमि पर इमि करहि पयाना। १८२२।	सतनाम	सर्व लोक दृष्टि में अहई। गुन चीन्हे ^८ तब करता कहई। १८२३।	सतनाम	साखी - १८२	सतनाम
सतनाम	सबबिधि बचन बिचारि के, मन्दिल के पगु ढारि।	सतनाम	आय के पहुंचे ग्राम में, लीन्हों चरनपखारि ^९ ॥ १७६॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	सतपुर्ष सत बचन जो कहेऊ। मगहर में दरशन तुम पयऊ। १८२४।	सतनाम	चीन्हे ^८ बिना करता नहिं कहेऊ। अकुफ किये तब सब सुख पएऊ। १८२५।	सतनाम	जब तुम जन्म जक्त मइं पाई। तब हम इमि तोहरे गृहि आई। १८२६।	सतनाम
सतनाम	माय तुहार निकट लै अएऊ। इमि करि नाम तुम्हारा कहेऊ। १८२७।	सतनाम	दरिया इनके सब मिलि कहेऊ। देइ दरश पीछे चलि गएऊ। १८२८।	सतनाम	बरिस तीस तुम्हें देखत भाएऊ। जहँ जहँ फिरेउ तहां हम गएऊ। १८२९।	सतनाम
सतनाम	धन्य भाग किछु कहत ना अएऊ। दया वंत दया बहु कियेऊ। १८३०।	सतनाम	अगली पछली बात बुझाई। कृपावंत सब कहि समुझाई। १८३१।	सतनाम	सब से कहेव सुनो चितलाई। इह करता सतपुष कहाई। १८३२।	सतनाम
सतनाम	दया कीन्ह तुम्हरे गृह अएऊ। मम कारन सब भेद सुनएऊ। १८३३।	सतनाम	इमि करि सब मिलि कहेव जो बानी। हम नर प्राणी मर्म ना जानी। १८३४।	सतनाम	साखी - १८३	सतनाम
सतनाम	हम कह मोह सकल सब, जो तुम कहो बुझाय।	सतनाम	भाग भला दर्शन भयो, धरी ^१ सुफल दिन आय॥ १७७॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	इमि करि साहब बचन सुनैऊं कपड़ा एक सफेद मंगएऊ। १८३५।	सतनाम	इमि करि मोल तुरंत ले अएऊ। अच्छा ^२ करि आगे तब दिएऊ। १८३६।	सतनाम	हुकुम हुआ तख्त पर डारी। करि सरपोस ^३ सब जुक्ति सँवारी। १८३७।	सतनाम
सतनाम	ऐसन बचन साहब ने कहेउ। बैटु तख्त तुम के यह दियेउ। १८३८।	सतनाम	दिन के तख्त ^४ वख्त भल भएउ। अदल अकुफ समुझि के किएउ। १८३९।	सतनाम	कोर्निस करि तख्त पर गएउ। धन साहब तुम सब किछु किएउ। १८४०।	सतनाम
सतनाम	बइठि तख्त पर कीन्ह बिचारा। किमि करि अदल होय संसारा। १८४१।	सतनाम	दिन से दुनियाँ बसी भएउ। अपने मन महं इमि कर ठएऊ। १८४२।	सतनाम	साहब बचन कहा समुझाई। सहिजादा तुम मन सफ पाई। १८४३।	सतनाम
सतनाम	का तुम डर से रहो डेराई। अदल ^५ कीन्ह हम हद पर आई। १८४४।	सतनाम	तुम के छोड़ि छप लोक ना जइहौं। करो निमेरा हद पर रहिहौं। १८४५।	सतनाम	सुबा अमीर ^६ जो राव कहावै। दीहों अदब जो अदल मेटावै। १८४६।	सतनाम
			साखी - १८४			
सतनाम	सहिजादा तुम मम हो, जुग जुग मन सफ पाय।	सतनाम	जहँ जहँ तुम पैदा हुए, कहा अकुफ समुझाय।। १७८।।	सतनाम		सतनाम
			छन्द तोमर - ४४			
सतनाम	सतपुर्ष बोलहिं बिचारि, तुम लेहु अदल संभारि।।	सतनाम	तुम मन सफ दार हमार, गहो शब्द सांगि ^२ करार।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	इमि लरहु रन महँ सूर, सब काल होईहें चूर।।	सतनाम	सम शेर ^३ शब्दहिं धार, जढ़ ^४ उपर झारो वार।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	इमि धरती तुरे ^५ दे पाव, देखु राव रंक को भाव।।	सतनाम	जो बुझे शब्दहिं सार, सो होत भवजल ^६ पार।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	छप लोक छापा सूर, तहां बाजु अबिगति तूर ^७ ।।	सतनाम	तहां फरके धाजा सेत ^८ , तंह हंस सुन्दर हेत।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	तहां अकह मूल है पार, दिबि दृष्टि गहिए सार।।	सतनाम	इमि हद बेहद बिचार, तहां गगन लागेव तार।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	गुन संत सुबुधि सुजान, जो देखत अर्थ अमान ^९ ।।	सतनाम	जहां अमर दीसत चंद, सब तम तिमिर रंद।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	भौ मस्त ममिता डारि, नहिं ज्ञात भौजल हारि।।	सतनाम	सोई फकर ^{१०} फारिक जानि, दरबेस दर्दा मानि।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सोई अलह हाल हजूर, इमि, इमि ज्ञान है भरिपूर।।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
			135			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			छन्द नराच - ४४			
सतनाम			सब संसारा जगत हमारा, वारे पारे हम रहियं॥		सतनाम	
			तुम मम प्यारा इमि पगु ढारा, सार शब्दहिं सो गहियं॥			
सतनाम			छप लोक है न्यारा छपा हमारा, छल छोड़े सो इमि लहियं॥		सतनाम	
			सुन सुत हमारा मनसफ दारा, सर्व भेद तुम से कहियं॥			
सतनाम			सोरठा - ४४		सतनाम	
			सुनि निज बचन हमार, तख्त दीन्ह थए जानि के॥			
सतनाम			हंस उतरि हो पार, जो अकूफ कामिल करे॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			चले तखात से बाहर गएउ। दरबारी में कागज कीएउ।१८४७।		सतनाम	
			मन रंझा ^१ से बाते किएउ। हद पर मम अदल के अएउ।१८४८।			
सतनाम			सहिजादा के तख्त जो दीन्हा। दुनियां छोड़ि दीन कै लीन्हा।१८४९।		सतनाम	
			इनसे रूजु ^२ रहो तुम आई। छोड़हु छल बल सब चतुराई।१८५०।			
सतनाम			अबदुल्लह खां तब बोले बिचारी। दुइ दफा तुम जग ^३ में डारी।१८५१।		सतनाम	
			तनता गिर ^४ यह सब दिन भएऊ। अवरी के बात अवरि कछु कहेऊ।१८५२।			
सतनाम			तुम साहब इमि करो निसाफा। वोएता गिरि ^५ येह राखिए दाफा।१८५३।		सतनाम	
			ओह दाफा ^६ सब हम कह दीजे। तब एह अमल जक्त मह कीजे।१८५४।			
सतनाम			वोए जानहिं औ तुम उन्ह जानी। आगे दफा लेहु पहचारी।१८५५।		सतनाम	
			इनसे रूजु सदा तुम रहिहो। दोसर बचन अवरि जनि कहिहो।१८५६।			
सतनाम			एहि दाफा मह आवे जानी। सो हंसा लिहो पहचानी।१८५७।		सतनाम	
			साखी - १८५			
सतनाम			निगम बोध येह बोधिया, दफा लीन्ह बिलगाय ^७ ।		सतनाम	
			कीन्ह करार कर्ता से, दुबिधा सब बहाय॥			
सतनाम			चौपाई		सतनाम	
			करार दाज हजूरहिं भएउ। बितो अब तौ बात दुसर नहिं रहेउ।१८५८।			
सतनाम			वेवाह के धरिहे ^८ ध्याना। सो जिव जैहे ^९ लोक ठेकाना।१८५९।		सतनाम	
			सत सुक्रित दुनों लव लावे ^{१०} । उठत बैठत सुरति समावे ^{११} ।१८६०।			
सतनाम			चले तारिक तर्क जो करई। ताकर पाला इमि नहिं धरई।१८६१।		सतनाम	
			तब साहब अस बोले विचारी। सुनि लीजे यह बचन हमारी।१८६२।			
सतनाम			सिरे जमा अव है सिर खूला। छापा मम दूनहुँ के मूला।१८६३।		सतनाम	
			दुवो के राखि करवै जानि। सनिहि हमार करे पहचानीना।१८६४।			
सतनाम			कोइ जुगल कोइ फकर होई। कोइ गृहि कोइ त्यागी सोई।१८६५।		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दुवो जन इमि अहे हमारा। मिलि जुलि करिहें भक्ति सुधारा।१८६६।	सतनाम	सहिजादा से रुजु रहई। सब बिधि आनन्द मंगल करई।१८६७।	सतनाम	सत बचन यह लेहु बिचारी। जनि रोकहु यह दफा हमारी।१८६८।	सतनाम
सतनाम	साखी - १८६	सतनाम	अबदुल्लह खां विचारिया, लिया बचन हम मानि।	सतनाम	जो दाफा मह आइहें, ममताहिलिहों पहचानि१॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	थय छोड़ि अवरि थय गएउ। आगे निमेरा अवरि कछु किएउ।१८६९।	सतनाम	दोए ग्राम के बीचहिं गएउ। थए थए सब हुदा देखाएउ२।१८७०।	सतनाम
सतनाम	चीन्हि राखो तुम एही ठेकाना। एही फौज परिहीं मैदाना।१८७१।	सतनाम	जगह देखाय के दुरि ले गयउ। नदी निकट तहां थए बनएउ।१८७२।	सतनाम	रैनि बीते बासर चलि आई। भया निमेरा कहा बुझाई।१८७३।	सतनाम
सतनाम	दुवो बरोबर इमि कर भयउ। फौज परत उहवाँ चलि गएउ।१८७४।	सतनाम	जेहि ठेकाना सब कछु किएउ। तासे डेरा बिलगि नहिं भएउ।१८७५।	सतनाम	फिरि फिरि यह सब हमें देखैउ। हमके लेइ बारी महँ गएउ।१८७६।	सतनाम
सतनाम	उहां बइठि निमेरा३ कीन्हा। फौज डेरा धूप महँ दीन्हा।१८७७।	सतनाम	जौ तुम कहो तौ इहहिं मँगावों। हुकुम करी तुरंत ले आवों।१८७८।	सतनाम	होत है सोई जो मैं कहेउँ। औरि बात दुजा नहिं भएउ।१८७९।	सतनाम
सतनाम	अबदुल्लह खां४ सब हुकुम जो गावे। बोलत बैन तुरन्तहिं आवे।१८८०।	सतनाम	साखी - १८७	सतनाम	अर्ज कीन्ह कोर्निसिकरी, कीमति कहा ना जाय।	सतनाम
सतनाम	सत पुरुष बेअंतहहीं, कवन सके गुन गाय॥	सतनाम	॥ चौपाई॥	सतनाम	फौज बोलाय इहां लै अयउ। चिब्बा माह डेरा तब किएउ।१८८१।	सतनाम
सतनाम	एक जाम कुंच दुइ५ कीन्हा। एह लीला गति बिरले चीन्हा।१८८२।	सतनाम	तन्ता गिर६ जग फौज चलावहिं। अबदुल्लहखां सब हुकुम जो गावहिं।१८८३।	सतनाम	सत बचन मम कही जो दीन्हा। अकूफ७ करे जो होए प्रबीना।१८८४।	सतनाम
सतनाम	यह धोखा जनि जाने कोई। सत्यपुर्ष सत पुर्षहिं सोई।१८८५।	सतनाम	जाकर यह सकल संसारा। सोइ उतारहिं भव जल पारा।१८८६।	सतनाम	तिनहिं हुकुम हमहिं जो दीन्हा। जीव चेतावनि जग महं कीन्हा।१८८७।	सतनाम
सतनाम	ले परवाना भक्ति लव लावै। तन छूटे छप लोकहिं जावै।१८८८।	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	एक संसै मम दिल में भएऊ। धरती बिनसन सब मिलि कहेऊ।१८६३।	सतनाम	सात दीप बिनसे नव खांडा। सर्ब शृंग बिन से ब्रहमंडा।१८६४।	सतनाम	इमि पुरान कथि मुनि सब कहेऊ। जला मई कहिं ठौर न रहेऊ।१८६५।	सतनाम
सतनाम	फिरि के जावन लिहें जमाई। ऐसन मता बेद फुरमाई।१८६६।	सतनाम	अन्तरजामि अन्तर्गति भीना। बोलेव करता वचन प्रमीना।१८६७।	सतनाम	कारन कवन जो हद मिटावै। जो यह कहे सोइ मिटि जावै।१८६८।	सतनाम
सतनाम	मेटे ना हद बे हद असमाना। अमर लोक धरती परवाना।१८६९।	सतनाम	अवनी अमर दोलैचा अहई। संत साधु ज्ञान सब कहई।१९००।	सतनाम	एहि पर आवे एहि पर जाई। एहि मेदनी पर केते नसाई।१९०१।	सतनाम
सतनाम	केते बीर भए धनु धारी। गोबरधन गोपाल मुरारी।१९०२।	सतनाम	मेदनि ^३ माया पुरुष सत अहई। दुओ जुगल बिनसे किमि कहई।१९०३।	सतनाम	साखी - १८६	सतनाम
सतनाम	सत्य पुरुष बिनसे नहिं, त्रिगुन बिनसि सबजाय॥	सतनाम	सत्य सदा प्रत्यक्षहों, धरती बिनसि किमिपाय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	सत्य पुरुष के अंत न पएऊ। बीचहिं बानी बहु बिधि भएऊ।१९०४।	सतनाम	मन अनंत कथा बिस्तारा। किन्ह मर्जाद सबजगत पसारा।१९०५।	सतनाम	सत्य पुरुष कहं मिथ्या कहई। जोइ असत्य सोई पद गहई।१९०६।	सतनाम
सतनाम	जो यह मरे अमर तेहि कहई। सत्य पुरुष के गुन नहिं गहई।१९०७।	सतनाम	नास्तिक पंथ मुक्ति के कहई। आस्तिक सोइ भरमी भव रहई।१९०८।	सतनाम	वेद बाट कोइ थाह न पावै। जहँ अथाह तहाँ के धावै।१९०९।	सतनाम
सतनाम	अतना परिपंच वेद महँ अहई। मीन मासु बेद सब कहई।१९१०।	सतनाम	खात है अपने राम खिआवै। अपने खाय कृष्ण कहँ लावै।१९११।	सतनाम	कहे राम कृष्ण दुओ मिलि खएऊ। एहि परकार जगत वहि गएऊ।१९१२।	सतनाम
सतनाम	स्वारथ लागि ग्रंथ सब कहेऊ। इमि हवेख ^२ पंडित गुन गएऊ।१९१३।	सतनाम	कथे धर्म अधरम बहु भाँती। जिव के बधन बसे दिन राती।१९१४।	सतनाम	साखी - १९०	सतनाम
सतनाम	सो पुरान जग पढ़त है, किमि होखे भवपार।	सतनाम	बिनादयाधर्मकिमिकहिये, भरमि रहा संसार॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	जेहि में दया वेद सो मानी। बिना दया का वेद बखानी।१६१५।	सतनाम	को है कर्म काल केहि कहई। को है देव दैत को अहई।१६१६।	सतनाम	कर्म सुधर्म भक्ति लव लीना। काल सोइ सत शब्द न चीन्हा।१६१७।	सतनाम
सतनाम	हंस सोइ मनि मुक्ता ^३ बीना। बग सोइ जो खात है मीना।१६१८।	सतनाम	जेहि नहिं सतगुरु शब्द समाई। देखो परतक्ष काल गमि पाई।१६१९।	सतनाम	इमि करि जग में धरे शरीरा। वह नहिं जानत पर के पीरा ^४ ।१६२०।	सतनाम
सतनाम	दरसन देखात दीसे आई। इमि पारख करो लवलाई।१६२१।	सतनाम	मन मकरंद तिकुटी अस्थाना। इमि करि करत है बान संधाना ^६ ।१६२२।	सतनाम	दिव्य दृष्टि गहे तत्तसारा। काल छीन भव पलकन्हि मारा।१६२३।	सतनाम
सतनाम	मन मकरंद ^७ तब गए पराई। जीव रहा अस्तुति गुन गाई।१६२४।	सतनाम	यह पारख परखे जन जानी। इमि करि चिन्हे काल सहि दानी।१६२५।	सतनाम	साखी - १६१	सतनाम
सतनाम		सतनाम	काल कर्म यह चीन्हिए, जिव बुधि बसे शरीर।	सतनाम	इमि करि ज्ञान बिचारिए, मिटे सकल तन पीर॥	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	अर्ज कीन्ह प्रेम नय नीता। धन साहब तुम ब्रह्म पुनीता।१६२६।	सतनाम	अजर अमर मम गुन पहचानी। अमर अडोल सत्य हम जानी।१६२७।	सतनाम	तुम ते और दुजा नहिं कोई। प्रेम तत्तु सत शब्द समोई।१६२८।	सतनाम
सतनाम	साहब सत्य यह कहो बिचारी। किमिकरि भवजल हंस उबारी।१६२९।	सतनाम	किमि करि पंथ में पगु चलु ढारी। यह निश्चय कहिये निरुवारी।१६३०।	सतनाम	किमि करि गृहि ते रहे निनारा। किमि करि छूटे सक्ति पसारा।१६३१।	सतनाम
सतनाम	करे अकूफ साफ दिल सोई। ऐन मूल जेहि दरशन होई।१६३२।	सतनाम	सुरति डोरि चेतें चितलाई। ज्ञान गम्य में रहे समाई।१६३३।	सतनाम	चले बिचारि पन्थ पगु देई। मनहिं बिचारि ज्ञान निजु लेई।१६३४।	सतनाम
सतनाम	गस्ती भेख ^३ सो रहिये न्यारी। इमि करि चले पंथ पगु धारी।१६३५।	सतनाम	सक्ति सोभा सब संश्रुत अहई। ज्ञान बिचारे किछु नहिं लहई।१६३६।	सतनाम	साखी - १६२	सतनाम
सतनाम		सतनाम	ज्ञान बिबेक बिचारिए, चले पंथ पगु ढारि।	सतनाम	काल छेड़ावनि न करे, भवजल जाहिं न हारि॥	सतनाम
सतनाम			140			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

छन्द तोमर - ४६

इमि कहेव तोमर छंद, सब दूरि दुरमति द्वंद॥
 यह गुंगा गहिरा ज्ञान, दबि दृष्टि करू पहचान॥
 कम सखुन^५ सोहै संत, बहु बचन तेजु^६ निरंत॥
 इमि चतुर चीन्हे चोर, पगु देत ज्ञान ना भोर॥
 सब तेजि मन मत भाव, नहिं कुबुधि कागा दाव॥
 इमि हीरा होत ना खोट, सब सहत घन की चोट॥
 जब बरे निरमल जोति, सब तेजु कांचु की पोति^७॥
 सो भए निरमल दास, सो संत सतगुरु पास॥
 इमि धार ज्ञान कृपान, सब तेजि वेद पुरान॥
 सब दहेउ दुर्मति काल, निःअखर निर्मल ढाल॥
 निरपेच^८ निर्मल संत, मिला काया गढ़ को अंत॥
 भव ब्रह्म दृढ़ धरि ध्यान, गमि पलक सांझ बिहान॥
 तहँ सेत सुघर सोहाय, चहुं छटा^३ चमके जाय॥
 सब देखि हद बेहद, सब काल कर्म निकंद॥
 तहँ छेकि सके ना काल, सोइ संत सुघर मराल^९॥

छन्द नराच - ४६

भव बहर निकंदा तजि दुख द्वंदा, दरसत चंदा इमि आवे॥
 मगन मस्ताना गगन समाना, गरजि गरजि तहँ झरि आये॥
 बुंद अखंडा सो ब्रह्मंडा, डगमग पंथ नहिं इमि आवे॥
 भव निर्दागा तेजि मति कागा, कौतुक काल ना सो पावै॥

सोरठा - ४६

अकूफ^५ रहे लव लीन, सोइ दफा जन जानिये॥
 एहि बचन परमीन, दुर्मति दुविधा दूरि करे॥

चौपाई

बाएब पंथ चले जो कोई। सो दाफा महं इमि नहिं होई। १९३७।
 सहिजादा की मर्म ना जाना सो जिव जम के हाथ बिकाना। १९३८।
 सोई चोर है सदा अनाथा। ताको कागज जम के हाथा। १९३९।
 सीधे आय सिधे चलि गएउ। सहिजादा के दर्स ना दिएउ। १९४०।
 तुमसे रुज्जु रह जो आई। ताके राखि करौ सदा सहाई। १९४१।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अमर लोक ले ताहि पठावो। भवसागर के दाग मिटावो।१९४२।	सतनाम	अच्छा अबेहा जो जन होई। लोक पयाना करिहैं सोई।१९४३।	सतनाम	सिर खुला सिर जमा जो राखा। असल ज्ञान दुनहूँ के भाखा।१९४४।	सतनाम
सतनाम	जो दाफा जन होय हमारा। समुझि लिहैं निज ज्ञान करारा।१९४५।	सतनाम	भांग अफीम पान नहिं खाई। अमृत प्रेम तत्व लव लाई।१९४६।	सतनाम	कड़ी कमान ^१ खींचै दिन राती। तेहि नहिं काल करे उत्पाती।१९४७।	सतनाम
सतनाम	ताके पास कामिनि नहिं जाई। मस्त हाल देखि दूरि पराई।१९४८।	सतनाम	साखी - १९३	सतनाम	शब्द सांगि सम सेर है, गहि लीजे जन सोय।	सतनाम
सतनाम	सिकिलि करे मुर्चा छुटे, ऐना दरसन ^२ होय॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	ऐना दरसन मूल है सोई। काया अक्षर निजु नाम समोई।१९४९।	सतनाम
सतनाम	अक्षर बिना भेद नहिं पावै। कतनो पढ़ि पढ़ि रचि गुन गावै।१९५०।	सतनाम	जीव सोहंगम सुरति है न्यारा। दिव्य दृष्टि का सकल पसारा।१९५१।	सतनाम	सोइ सुरति गहो चित लाई। मकर तार डोरी तहँ पाई।१९५२।	सतनाम
सतनाम	आवत ज्ञात है सुरत संजोगा। तेजहु मन मत पाखंड जोगा।१९५३।	सतनाम	मन के रंग चिन्हें चित लाई। अवघट घाट लखे इमि पाई।१९५४।	सतनाम	खग ^३ औ मीन जो पंथ में आवै। पीछे दृष्टि बाट नहिं पएउ।१९५५।	सतनाम
सतनाम	घट घट सब में ब्यापक अहई। मुनि पंडित कहं इमि कर दहई।१९५६।	सतनाम	आवत जात जौ परिचै ^४ पावै। दूरि के निकट दृष्टि में धावै।१९५७।	सतनाम	इमि करि मन करबे पहचानी। खग औ मीन दुवो पथ जानी।१९५८।	सतनाम
सतनाम	साखी - १९४	सतनाम	इमि करि मन परिचे करो, खगमिन पंथ सुधारि।	सतनाम	झीन बाट ^५ मन मीन है, इमि गमि करा बिचारि॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	इमि करि अर्ज करो सिर नाई। यह गमि ज्ञान लखे किमि पाई।१९५९।	सतनाम	मन के चरित्र जो कहा बिचारी। काम क्रोध तन गर्ब है भारी।१९६०।	सतनाम
सतनाम	किमि करि जग यह करहिं बिचारा। कैसे पंथ चलिहिं संसारा।१९६१।	सतनाम	सब के तेजि ज्ञान महं रहई। मन परिपंच नहिं तन में लहई।१९६२।	सतनाम	सत्य पुरुष गुन समुझे जानी। इमि करि मन करिहें पहचानी।१९६३।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
दिल में सिपत करहिं बहु भांति। तेहि नहिं काल करे उत्पाती।१६६४।	सतपुरुष नाम असल है सोई। यह मिथ्या ^१ जनि बूझे कोई।१६६५।	जौं यह धोखा धरिहें कोई। अन्त काल बिगुरुचनि होई।१६६६।	आदि अन्त सतपुर्ष अमाना। एहि अवनी पर कीन्ह पयाना।१६६७।	जुग बुरा तुमसे कहा बुझाई। बुझहु अकूफ ज्ञान लवलाई।१६६८।	यह निश्चै कै करो बिचारा। करे अकूफ जो निर्मल सारा।१६६९।	साखी - १६५
करहु अकूफ बिवेक करि, जनउतरहिं भवजलपार।	चले जहाज जग इमि कर, गहि लीजे पतवार॥ १८६॥	चौपाई	सहिजादा कान गोय जो कहेऊ। विमल प्रेम निज बचन सुनएऊ।१६७०।	तब मम अर्ज कीन्ह सिर नाई। कान गोय यह कवन कहाई।१६७१।	तब साहब अस कहा बिचारी। दल्ल दास सिर दफा तुम्हारी।१६७२।	तुम्हरे साथ सदा यह रहई। कान गोय को हुदा अहई।१६७३।
दफा २ सब कहेउ बिचारी। करो फहंम यह प्रेम सुधारी।१६७४।	सिर उन सिर का करो बिचारा। एहि बिधि चलिहें पंथ तुम्हारा।१६७५।	अदब अदाब रहे सिर नाई। बिना अदाब काल घर जाई।१६७६।	है बदसाही दफा तुम्हारा। तख्त दीन्ह सब कीन्ह बिचारा।१६७७।	सेते कपड़ा श्वेत सोहाई। असल चाल साहब फरमाई।१६७८।	सिर खुल्ला फेटा नहिं राखा। सत्य ज्ञान साहब यह भाखा।१६७९।	सिरे बरहना कहा बुझाई। यह निज अर्थ बुझो चितलाई।१६८०।
साखी - १६६	रखना राखे दस्त में, एहि बिधि कहा बिचार।	अलि मस्त महबूब है, भव जल जाय ना हार॥	छन्द तोमर - ४७	अलि मस्त३ सोई यार, इमि फकर फारि कपार॥	गलिम कुफुर ^४ ना होय, यह मनसफदार ना गोय॥	गुप्त गोय ^५ ना करिये बिकार, दरवेश दर्दा दार॥
इमि हिंद राम बिचार, वह तख्त इनते पार॥	यह दफा दर के जानि, अकूफ लीजे मानि॥					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कान गोय कीजे बिचार, इमि सनदि छाप हमार॥ सहिजादा तख्त सवारि, करि कोर्निस आपु सँभारि॥ नहिं काफर है कुफुरान, दिल साफ ऐन अमान॥ सो वह वाहि नूर, मुख फबित जग में सूर॥ जिनि धरेव तेग सँभारि, सत शब्द सांगि हमार॥ दिब्य दृष्टि ^१ कुहुके बान, इमि काल भयो पिसिमान॥ तारिक तर्क हजूर, वाह २ साहब नूर॥ सो शहर दाफा जाय, सब काल फंद मिटाय॥ अकूफ सत है सार, इमि दफा जानु हमार॥ गुन कहेव सब सुख जानि, अकूफ फहम बखानि॥ छन्द नराच - ४७	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दफा हमारा सबते न्यारा, भेख भर्म में न परिये॥ चले बिचारा एहि संसारा, सार शब्द के इमि धरिये॥ दरवेश सो न्यारा भव जल पारा, दर से दरशन करिये॥ पंथ तुम्हारा बचन हमारा, जार सभे यह दुरि करिये॥ सोरठा - ४७	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	शहर बड़ा गुलजार, अमर पूर ताके कही। तिरदेवा ते पार, तख्त श्वेत सादा सही॥ चौपाई	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	साहब इमि कहिये समुझाई। गृहि में नर किमि भक्ति बचाई।१६८१। कैसे यह सब करे बिचारा। कवनी भक्ति गहे निजु सारा।१६८२। काल फंद यह किमि मुक्तावै। छप्प लोक महं किमि करि जावै।१६८३। साहब बचन जो कहा बिचारा। सत्यपुर्ष है नाम हमारा।१६८४। एही तत्त्व गहे लव लाई। ताके काल निकट नहिं जाई।१६८५। उठत बैठत सुरति समावै। दिव्य दृष्टि में प्रेम ^२ लगावै।१६८६। छापा सनद मोहर टकसारा। इमि करि उतरे भवजल ^१ पारा।१६८७। देवा देइ धोखा सब त्यागे। सत्य बिचारि सोइ निजु जागे।१६८८। तेजे भरम भाव सत गहई। निज गहि प्रेम तुमहिं से लहई।१६८९। सत बचन यह कहा बिचारी। गुन संग्रह ऐगुन देहिं डारी।१६९०। यह मिथ्या जनि जाने कोई। सतपुर्ष नाम जनि राखे गोई ^२ ।१६९१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		साखी - १६७				
सतनाम		उठत बइठत सतपुर्ष में, रहे शब्द लवलीन। दे दोहाई सत्य के, इमि करि काल मलीन॥		सतनाम		
		चौपाई				
सतनाम		प्रथमहिं खीर रूजू तुम कीन्हा। लैके खीर तुमको दीन्हा।१६६२।		सतनाम		
		भाव भक्ति मय बुझा बिचारी। हुकुम दीन्ह तुम मुख में डारी।१६६३।				
सतनाम		जो दफा जन होय तुम्हारा। सो यह करिहैं शब्द बिचारा।१६६४।		सतनाम		
		छवो मास ^३ में यह सब करई। प्रसाद बनाय तत्त्व से धरई।१६६५।				
सतनाम		खीर सोहारी अब दधि मेवा। भक्ति भाव करि लावहिं सेवा।१६६६।		सतनाम		
		मिठा प्रसाद जो सकर मंगाई। यहि भांतिन्ह सो विहित बनाई।१६६७।				
सतनाम		सफेद कपड़ा तापर डारी। सरपोस करि तब लेत सवारी।१६६८।		सतनाम		
		सहिजादा के आगे धरई। दस्त जोरि के कोर्निसि करई।१६६९।				
सतनाम		सो घानि ^५ हम लेवहिं आई। तेहि घर काल संधि नहिं पाई।२०००।		सतनाम		
		होय बरक़त सव विधि नीका। दुर्मति तेजि नाम गहि टीका।२००१।				
सतनाम		दफा समेत प्रसाद इमि डारी। यह अकूफ इमि लेत बिचारी।२००२।		सतनाम		
		साखी - १६८				
सतनाम		दफा जमा एहि भांति करि, आनंद मंगल गाय।		सतनाम		
		हंसराज गुन गहि रहै, कहा वचन समुझाय॥ १६२॥				
		चौपाई				
सतनाम		कीन्हो ^७ अर्ज तत्त्व लीलाई। साहब भली भक्ति फुरमाई।२००३।		सतनाम		
		जाके जइसन होय हुलासा। भक्ति भाव करिहैं निज दासा।२००४।				
सतनाम		साहब खुश दिल अमृत बानी। भली वचन कहा तुम जानी।२००५।		सतनाम		
		दुइ खट बारह मास जो अहई। बरस दिना में कबहुँ लहई।२००६।				
सतनाम		गांव धरकंधा तख्त जो कीन्हा। यहै भेद बिरला केहु चीन्हा।२००७।		सतनाम		
		तख्त दिन कर कीन्ह बिचारा। इमि करि अदल शब्द है सारा।२००८।				
सतनाम		नग्र मोवास सो इमि कर रहेऊ। काल हाथ जीव जहं डयऊ।२००९।		सतनाम		
		अकूफ कहेव ताहि दर जाई। बैठि दलानेव थय बनाई।२०१०।				
सतनाम		तनता गिरि सब अदब दिखाया। हुदाहुदा सब कहि समुझाया।२०११।		सतनाम		
		यह जहान सब अहे हमारा। नेक बदी का कीन्ह बिचारा।२०१२।				
सतनाम		कागज सब है हमरे हाथा। सहिजादा के लीन्हो ^८ साथा।२०१३।		सतनाम		
		145				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १६६			
सतनाम			कहेव अकूफ अकिलि करे, कारन सभे मेटाय। सहिजादा के पास रहु, दुरमति सब दुरि जाय॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			तंतगिरि सब फौज चलावै। यह कौतुक सब तेहि देखावै।२०१४।		सतनाम	
			करि अकूफ पीछे चलि आवै। मन की लपट ताहि ले जावै।२०१५।			
सतनाम			सब मिलि परिपंच जो कियउ। इनकर बात कछु लखिनहिं अयउ।२०१६।			
			जगह हमारि छोड़ि यह दीजे। दरिया दास कहा डेरा कीजे।२०१७।		सतनाम	
सतनाम			साहब तेज धरा अधिकारा। कांपे काल निचे करि डारा।२०१८।			
			होत प्रात सब चले बिचारी। इमि करि आए तख्त पगु ढारी।२०१९।			
सतनाम			तुमने चोर साहु के चीन्हा। मन औज्ञान विवरन करि लीन्हा।२०२०।		सतनाम	
			राह बाट तुम चिन्हा बिचारी। गस्ती ^२ जट तुम इमि निरुवारी।२०२१।			
सतनाम			हमके चीन्हेउ करता अयऊ। अब दिल में दुबिधा नहिं रहेऊ।२०२२।			
			शहजादा से बोले बिचारी। इमि करि सुनहु बचन हमारी।२०२३।		सतनाम	
सतनाम			हमरे संग दुरबल यह भएऊ। मेहनति साथ साथ इन्हि कियऊ।२०२४।			
			इन कर जतन ^३ करहु बहु भांती। अन्य डरावहु दिन औ राती।२०२५।		सतनाम	
			साखी - २००			
सतनाम			हम किनारे होयके, करब निमेरा जाय।		सतनाम	
			करब निशाफ अदब सब , कहेउ बचन समुझाय॥ १६४॥			
			चौपाई			
सतनाम			निमेरा करत दलाने गयऊ। जहवां जन जामा सब भयऊ।२०२६।		सतनाम	
			बैठे तहवां थए बनाई। कुमति काल रहे अकुलाई।२०२७।			
सतनाम			बासर बीत रैन चलि आई। जढ़ जन मांच निकट ले आई।२०२८।			
			बहु बिधि मम तेहि कहा बुझाई। कुमति काल उनके गृह आई।२०२९।		सतनाम	
सतनाम			ब्राह्मन कहे सब गए भुलाई। चिन्ह न करता काल फैलाई।२०३०।			
			जब उन्हि माच यहां ले डारी। महा तेज धरि कहा पुकारी।२०३१।		सतनाम	
सतनाम			भागा त्रासे ठोर न रहेऊ। झपटि सिंह हस्ती छपि गयऊ।२०३२।			
			थर थर सब मिलि कंपित भयऊ। यह लीला बिल्ला केहु पयऊ।२०३३।		सतनाम	
सतनाम			रजनि बीति बासर चलिआई। साहब उठि निमेरा जाई।२०३४।			
			धर कंधा भौ काल के थाना। साहब अगम जो कीन्ह पयाना।२०३५।		सतनाम	
सतनाम			रहेव सो देख अदेख में गयऊ। धन करता केहु अंत न पयऊ।२०३६।			
			146			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साखी - २०१						
साहब अगम अगोचर ^२ , सब ते भए निनार।						
जिनचिन्ह तिनचीन्हिया, भूले मुंढ गंवार॥						
छन्द तोमर - ४८						
सत्य पुरुष भएव निनार, दृग जीवन यह संसार॥						
नर नारि सोच बिचार, इमि खोजि बैठे हार॥						
इमि सोच निसु सब कीन्ह, ज्यों कमल भमर भीन॥						
नहिं घ्रानि कतहिं पाय, फिरि बिलगिहिरिनजाय॥						
कर मीज बहु पछताय, किमि पदुम ^३ चरनन्हिं पाय॥						
फिरि धरेव मन में धरि, ओइ साहब अगम गंभीर॥						
इमि दूरि निकट लखाय ^४ , निज प्रेम पलकन्हि पाय॥						
मम अदल कहेव बिचारि, इमि धरेव ध्यान संभारि॥						
सर्वज्ञ ^५ सबते न्यार ^६ , दिबि दृष्टि गंगन सार॥						
चित ^७ पलक करिये न भारे, इमि दृष्टि चंद चकोर॥						
पिय पिय पपिहा नेह, गुन ज्ञान समुझे एह॥						
जल एक है बिस्वास, सब मेटि तन की त्रास॥						
भवो ब्रह्म दीढ़ धरि दीप, सब अगम निगम सनीप॥						
तब गहेव तेग संभारि, मम अदल करू प्रचारि॥						
सब चोर चतुरहिं झारि, इमि कहेव सब निरु वारि॥						
छन्द नराच - ४८						
धरू मन धीरा ज्ञान गंभीरा, नाम हिरंमर सो कहिअं॥						
बिबेक बिचारो शब्द संभारो, हारेव जम सब इमि लहिअं॥						
आए करतारा दृष्टि संभारा, सर्व लोक गुन किमि कहिअं॥						
गहो तेग संभारी रन में झारी, झपटि सांगि इमि करधरिअं॥						
सोरठा - ४८						
शब्द सांगि दृढ़ हाथ, आय परे मैदान ^९ में॥						
सो जन भए सनाथ, सूर सहिद सन मुख रहे॥						
चौपाई						
साहब पीछे काल जो जागा। निंदा करन कहं बहु बिधि लागा।२०३७।						
मारहु इनके देहु निकारी। किन्ह परिपंच जो बुधि विकारी।२०३८।						
ऐसन काल रहा अकुलाना। घट घट ब्यापक ^२ मरम न जाना।२०३९।						
147						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
गस्ती जट औ ब्राह्मन झारी। गाँव मोकदम बात बिगारी।२०४०।	सुनि के सूर अधिक दिल भयऊ। यह मैदान ^३ देखन इमि चहेऊ।२०४१।	अबहिं जौं इनके फेंको उखारी। किमि करि अदल होय परचारी।२०४२।	आवहिं सब मिलि करहिं लराई। टूटै मुहं पीछे पछताई।२०४३।	खेलहु सब मिलि खूब खेलाओ। ऐसन मलौं जो धूरि मिलाओ।२०४४।	तबहु न जड़ के मन पतियाई। बहुरि लरहिं फिरि हमसे आई।२०४५।	ज्ञान कही इमि अदब देखाई। सत्य पुरुष कहि इमि समुझाई।२०४६।
करता चिन्हउ परम पद पाई। राज काज सब है कुसलाई।२०४७।	साखी - २०२	बहु प्रकार बुझवहिं, अंधा मति का हीन।	धोखा ^४ इमि सब मानहीं, काले डेरा कीन॥	चौपाई	साहब आगे कहा समुझाई। धर्मदास के बंस इहँ आई।२०४८।	ऐसन साहब कहा बिचारो। एक डेरा उन्हि आगे डारी।२०४९।
मास एक महं पहुँचिहिं आई। पोखरा महं थए करिहैं जाई।२०५०।	तुम जनि जाहु वाके पासा। करसि काल सब करिहिं तमासा।२०५१।	तोहरे पास जो आवे जानी। छापा सनद करै पहचारी।२०५२।	इमि पारखा करै पहचानी। मूल शब्द ज्ञान गमि जानी।२०५३।	जब लगि मूल ^१ शब्द नहिं पावै। कथनी कथ कथ बहुबिधि गावै।२०५४।	एक मास महं पहुँचा आई। धन साहब सत बचन सुनाई।२०५५।	साहब बचन बृथा नहिं कहई। करै बिबेक ज्ञान गुन लहई।२०५६।
आए तलावे थय जो कीन्हा। अति होय गर्व ^२ मया मद भीना।२०५७।	आपु मोकदम ^३ नगर समेता। दरसन करि निन्दा करि केता।२०५८।	साखी - २०३	कालहिं कालहिं मिलिगए, निन्दा करि बहु भांति।	सत्य बचन यह छोडिके, रहे मिथ्या महं माति॥	चौपाई	एक देह धारी देह धरि आईँ वह सब का लीन्ह बउराई।२०५९।
ताके कहैं गोसाइयां अहई। नाम सत्य पुरुष सबमिलि कहई।२०६०।	ओइ दरिया सजिजादा कहेऊ। झूठी बचन किमि करि लहेऊ।२०६१।					

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सब मना करु नर नारि, वह दुष्ट परिहैं गारि॥	सतनाम	जनि जाहु वाके पास, तन दिहैं बहुतै त्रास॥	सतनाम	इमि कहेउ सब से झारि, हम नाहीं आइब हारि॥	सतनाम
सतनाम	तुरंत कीन्ह पयान, इमि मरद जम के मान॥	सतनाम	सब नगर ठाठा ^१ बाज, इमि काल बांधि समाज॥	सतनाम	इमि जुरे सब मिलि धाय, यह बचन सुनिये जाय॥	सतनाम
सतनाम	सत शब्द गहिर गीीर, जनु फरके भुजा वीर॥	सतनाम	भय ब्याप नाहीं शरीर, करकसे शब्दहिं तीर॥	सतनाम	जब गएउ निकट निराट, सब चोर छेकेउ बाट॥	सतनाम
सतनाम	दिव्य दृष्टि कुहुके बान, समसेर ^२ शब्द अमान॥	सतनाम	तहैं बैन बोलि बिचार, सत नाम कहि निरुवार॥	सतनाम	इमि काल घट घट जानि, नहिं सार शब्दहिं मानि॥	सतनाम
सतनाम	इमि भेख पाखंड चोर, सब अदल कीन्हो भोर॥	सतनाम	छन्द नराच - ४६	सतनाम	इमि बैठु विचारी शबद पुकारी, हारी जम जुथ सत धरिअं॥	सतनाम
सतनाम	सत करतारा आपु संभारा, धर्म धीर तहवाँ रहिअं॥	सतनाम	इमि गुन सारा करो बिचारा, तिरछन धार ^३ नहीं बहिअं॥	सतनाम	सब बुधि हीना नहिं परमीना, निरा लेप सतगुरु कहिअं॥	सतनाम
सतनाम	सोरठा - ४६	सतनाम	कोई सुरति नहिं सांच, सबै हाथ बसि काल के॥	सतनाम	बोलहिं बचन सब कांच, चतुर चोर मारे परे॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	गाँव मोकदम बोले बानी॥ धर्मदास के बंस पहचानी॥२०८२॥	सतनाम	बंस साँच झूठ नहिं अहई। अदल बिना बंस नहिं कहई॥२०८३॥	सतनाम
सतनाम	सत्य छोड़ि झूठ के धावै। ऐसा बुड़े थाह नहिं पावै॥२०८४॥	सतनाम	छोड़हु बात बहुत चतुराई। इनके आगे करहु बिनाई॥२०८५॥	सतनाम	राम कबीर दूजा तुम कहेऊ। इनका पथ में एकै लहेऊ॥२०८६॥	सतनाम
सतनाम	भक्त कबीर राम कहं जाना। राम नाम कहि पंथ बखाना॥२०८७॥	सतनाम	कबीर कतहिं नाहिं मुरति उखारी। महा मया के तुम फोरी डारी॥२०८८॥	सतनाम	कहन सुनन के दुइ यह अहई। राम कबीर तौ एकै कहई॥२०८९॥	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	दूजा दुबिधा सो यह जाने। जो नहिं सतगुरु पद पहचाने।२०६०।	सतनाम	यह बनिया बैपारी अहई। डरे डराय झूठ यह कहई।२०६१।	सतनाम	ले आवहु ग्रंथ देहु इहँ डारी। राम कबीर लेहु निरुवारी।२०६२।	सतनाम
सतनाम	साखी - २०६	सतनाम	हारेव बंस झूठ कहि, काल समानेव आय।	सतनाम	को कनहरिया ^१ खेइहैं, बूड़े भव जल जाय॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	वह देखा इन्ह सभै हराया। तब वह करसि काल होइ धाया।२०६३।	सतनाम	उनके डर तोहरे डर नाहीं। हौ तुम कवन कहो एहि पाहीं।२०६४।	सतनाम
सतनाम	तुमके देऊ बाँधि जल डारी। कवन तुमहिं करै उबारी।२०६५।	सतनाम	फिरि फिरि हाथ खर्ग ^२ पर लावै। ऐसन प्रभुता हमहिं देखावै।२०६६।	सतनाम	हमहिं दुइ भुजा तुम्हहिं है चारी। ऐसन गर्व करहु अधिकारी।२०६७।	सतनाम
सतनाम	एक पलक महं सभे चलाओ। सत्य पुरुष के पुत्र कहाओ।२०६८।	सतनाम	हौ तुम गर्व बहुत तन फूला। उपारों डाढ़ पेड़ धरि मूला।२०६९।	सतनाम	सत्य पुरुष के अदल चलाऊ। रइयत करि के तुम्हहिं बसाऊ।२१००।	सतनाम
सतनाम	क्रोध करे सिर पटके जाई। मींजे हाथ फिरि रहे लजाई।२१०१।	सतनाम	दुई धरी यह कौतुक भएऊ। मन के चरित्र कहत नहिं अयऊ।२१०२।	सतनाम	सत्य पुरुष गुन प्रगटे भएऊ। होइ गौ गुल फौज जनु अयऊ।२१०३।	सतनाम
सतनाम	साखी - २०७	सतनाम	सुनत सोर सरद भयो, बदन जो गया सुखाय।	सतनाम	आपन दफा बटोरिके, पहुँचा गढ़ में जाय॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	बिना फौज सोर सब भयऊ। यह लीला केहु लखि नहिं पयऊ।२१०४।	सतनाम	सब कर मस्तक नीचे गयऊ। अती त्रास मुख बात न अयऊ।२१०५।	सतनाम
सतनाम	उठे झारि कहा परचारी। पाखंड भेख सबहि मिलि डारी।२१०६।	सतनाम	सब मिलि बिनय कीन्ह करजोरी। एक बचन सुनि लीजे मोरी।२१०७।	सतनाम	भुलि मति सो यह कहि दीन्हा। बिन दाया केहु गुन नहिं चीन्हा।२१०८।	सतनाम
सतनाम	ऐसन बुद्धि भरम भय गयऊ। काल झकोरा सब के दिएऊ।२१०९।	सतनाम	सब बिधि नीक है ज्ञान तुम्हारा। सुकृत नाम कहिये अवतारा।२११०।	सतनाम	बंस बयालिस हम कहं दीन्हा। बीचहिं बात और किमि कीन्हा।२१११।	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २१०			
सतनाम			इमि गहिर गरकाव ^४ है, गंगू गहिरा ज्ञान। आपु चखे औरनि दिये, मीठा प्रेम बखान॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			अहे शृंग एक दृष्टि अमाना। इमि करि कहिये घुव ठिकाना।२१३८।		सतनाम	
			जब यह दृष्टि देखे महं आवै। तब हंसा अस्थिर पर पावै।२१३९।			
सतनाम			जब नहिं दीसे करे पयाना। कमल से भंवर विलगि करिजाना।२१४०।		सतनाम	
			मकर तार सुरति है सारा। तेहि चढ़ि हंसा लोक सिधारा।२१४१।			
सतनाम			वोहं सोहं कह कह पारा। दिव्य दृष्टि का अहे पसारा।२१४२।		सतनाम	
			गृहस्थ फकीर दोउ दफा हमारा। छापा बिन किमि उतरे पारा।२१४३।			
सतनाम			छोड़े कपट गिरह नहिं डारी। बिमल प्रेम भव कवहिं ना हारी।२१४४।		सतनाम	
			इमि करि हीरा होय ना खोटा। जो यह तजै कपट कर मोटा।२१४५।			
सतनाम			सीखे ज्ञान अव ममता ठानी। सतगुरु हुकुम भेद नहिं जानी।२१४६।		सतनाम	
			सिर खूल्ला औ दिन नहि खुल्ला। बीखे बेइल तन भीतर फुल्ला।२१४७।			
सतनाम			तख्त से चोर चतुर जो अहई। पढ़ि पढ़ि ज्ञानहिं मन मत कहई।२१४८।		सतनाम	
			साखी - २११			
सतनाम			काल सदा तेहि जानिए, बसे सुरति नहिं सोच। लोक पयाना ना कर, सहे दोजक की आंच॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			सत्य पुरुष यह कहा विचारी। तब मम लिखा वचन निरुवारी।२१४९।		सतनाम	
			साहिजदा नहिं थय पर रहई। इमि करि कोर्निस तख्त के करई।२१५०।			
सतनाम			सो सलाम हम दाखिल कीन्हा। साहिजदा कर दाफा लीन्हा।२१५१।		सतनाम	
			यह धोखा जै जाने कोई। काल हाथ जिव जन्म बिगोई।२१५२।			
सतनाम			यह धोखा जौ जाने कोई। काल हाथ जिव जन्म बिगोई।२१५३।		सतनाम	
			एकर साखी है दल दासा। तासो वचन पूर्ण प्रगासा।२१५४।			
सतनाम			नावहिं नीति तख्त कहँ माथा। कोर्निस करि अदव दे हाथा।२१५५।		सतनाम	
			सतपुर्ण के सुत हम अहई। साहब प्रगट सभनि से कहई।२१५६।			
सतनाम			सत सुकृत के अतने भेदा। वो अम्मर हम ज्ञान निखेदा।२१५७।		सतनाम	
			सुकृत सीढ़ी सत तब पावै। बिना सीढ़ी लोक नहिं जावै।२१५८।			
सतनाम			सीढ़ी छोड़े तौं जाय बोहाई। ताके लोक लिखा नहिं भाई।२१५९।		सतनाम	
			154			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २१२			
सतनाम			लिखा वचन यह सत है, ज्ञानी करो बिचार।		सतनाम	
			सत सुकृत की सीढ़ी पगुदे, उतरहु भवजल पार॥			
			चौपाई			
सतनाम			सत पूर्ण सत यह अहई। साहिजदा के सुकृत कहई।२१६०।		सतनाम	
			लिखा सत्य वचन निरुवारी। मृथा बुझहु जनि वचन हमारी।२१६१।			
सतनाम			दुई तेजि तीसर जनि कहहू। प्रेम जुक्ति मुक्ति फल लहहू।२१६२।		सतनाम	
			एक बार होय सयल के गएऊ। पुरुब दिसा से इमि चलि अएऊ।२१६३।			
सतनाम			एक थै दीन्ह आगे चलि भयऊ। लहठान नग्र डगर चलि अयऊ।२१६४।		सतनाम	
			मास जेठ धूप बड़ कीन्हा। प्रेम जुक्ति चले लवलीना।२१६५।			
सतनाम			बिप्र एक बाट मह मिलेऊ। कै प्रनाम प्रीति भल कियऊ।२१६६।		सतनाम	
			बैठि गये तहां द्रुम की छाया। बचन दुई दिव्य तेहि सुनाया।२१६७।			
सतनाम			हौ तुम कबन कहो निज बैना। बहुत प्रेम करि बृग से नैना।२१६८।		सतनाम	
			मम सेवक निज दास तुम्हारा। भीखम दुबे है नाम हमारा।२१६९।			
सतनाम			बसो बास नग्र एहि रहेऊ। सन्त साधु का सेवा लहेऊ।२१७०।		सतनाम	
			बहु भाँतिन्ह से दाया कीजै। कृतारथ करि इम कहं लीजै।२१७१।			
			साखी - २१३			
सतनाम			चले तुरंत तेहि नग्र में, थै पर पहुंचे आय॥		सतनाम	
			पलंग बिछाए सरपोश करि, सेवा बहु विधि लाय॥			
			चौपाई			
सतनाम			दया माँगि प्रसाद बनाया। बहु सादर करि विनय सुनाया।२१७२।		सतनाम	
			कीन्ह प्रसाद जो तत्व विचारी। लीन्ह लियाए भवन पगु डारी।२१७३।			
सतनाम			डारि अनाज प्रेम अति भयऊ। इमि करि भक्ति प्रेम फल लहेऊ।२१७४।		सतनाम	
			थय पर आये असाइस कीन्हा। पीछे बैन कहन तब लीन्हा।२१७५।			
सतनाम			हमके बहुत भयो वैरागा। ढूँढत मिलेउ मा संत सुभागा।२१७६।		सतनाम	
			प्रथमें वेद पुरानहिं सूना। साधु मता वेद सो भीना।२१७७।			
सतनाम			ब्रह्मज्ञानी से भेंट जी भयऊ। उन्ह निज पता आपनसब कहेऊ।२१७८।		सतनाम	
			मम मन बोध तबहुं नहि भयऊ। उन्ह बहु वचन और कछु कहेऊ।२१७९।			
सतनाम			ब्रह्मचारी मम गृहि महं अयऊ। उनसे गुष्टि बहुत कछु भयऊ।२१८०।		सतनाम	
			उनकर मत मैं बुझा बिचारी। सतगुरु भेद इनहुँ से न्यारी।२१८१।			
सतनाम			कबीर पंथी से दरशन भयऊ। टकसार मता निज भेद सुनयऊ।२१८२।		सतनाम	
			155			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

साखी - २१४

कबीर के बचन प्रतीत भौ, लगा प्रेम निज ज्ञान।
परिचै भेद ना पायो, सोचों सांझ बिहान॥

छन्द तोमर - ५१

मम वेद को मत चिन्ह, सो मुक्ति उनसे भिन्न॥
कथि ब्रह्म ज्ञान अनूप, इमि आतम दर्श स्वरूप॥
नहिं बोध भयो मन मोर, यह देखि मत अघोर॥
ब्रह्मचर्ज ब्रह्म विचार, उन्हि कथेव बहु विस्तार॥
यह मता मानु ना सार, सब कथेव नेम अचार॥
कबीर पंथ को ज्ञान, मम वचन निश्चै ध्यान॥
हम भेख दुंढ्यो झारि, इमि कहत हैं परिचारि॥
इमि काया परिचे सार, जब मिले सतगुरु यार॥
तब मुक्ति महिमा जोग, सब बने विविध संजोग॥
सब कथेव कथनी ज्ञान, किमि मिले मुक्ति ठेकान॥
रहनि गहन है सार, सो जात भवजल पार॥
सो संत मंत है भिन्न, जेहि प्रेम सतगुरु चीन्ह॥
अलेख भेख बनाय, सब सेख सेवड़ा आय॥
सतगुरु गुरु जौ होय, सब संसे डारे खोय॥
सो अहे अतित अलेप, सब काल कर्महि खेप॥

छन्द नराच - ५१

अतित अपारा गुन सब सारा, निर्गुन सर्गुन सब कहिअं॥
उदित उजागर मति को सागर, सर्व व्यापिक इमि रहिअं॥
सतगुरु ज्ञाता ब्रह्म बिधाता, राता मम सो भेद कहिअं॥
मम तुम दासा चरन उपासा, संसे तन की दुरि करिअ॥

सोरठा - ५१

खोजेउ बहु विधि भाँति, अच आएउ तुम सरन में॥
मम ब्राह्मन की जाति, कुल की कानि न राखिहों॥

चौपाई

नहिं हम भेख नहिं बैरागी। नहिं हम जोगी नहिं गृहि त्यागी॥२१८३॥
नहिं ब्रह्मचारी नहिं ब्रह्म ज्ञानी। नहिं हम वेद पुरानहिं मानी॥२१८४॥
नहिं हम भक्त भेख जो डारी। नहिं हम क्रिया कर्म विस्तारी॥२१८५॥

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
नहिं हम ब्राह्मन क्षत्री अहई। नहिं हम हिंदु तुर्क जो कहई।२१८६।	माटी के जामा जग में भयऊ। पुर्ष अंस तेहि कर अयऊ।२१८७।	पारिख करहु जो है तोहि ज्ञाना। मृथा बचन नहिं कहों बखाना।२१८८।	आये पुर्ष दरस मोहि दियऊ। सतपुर्ष वेकिमति जो कहेऊ।२१८९।	आतम जिव सब अहे हमारा। पारिख करे सो उतरे पारा।२१९०।	जो पूछहु सो कहो बखानी। मुक्ति पंथ लेहु पहचानी।२१९१।	ज्ञान और मन दोउ तुम्हें चिन्हाऊँ। छापा मूल सनद बतलाऊँ।२१९२।
अजपा दरसन देउ देखाई। दसें चंद सूर तेहिं आई।२१९३।	पचीसो प्रकृति बिबरन कै डारो। तीन गुन तेजि ज्ञान उचारो।२१९४।	साखी - २१५	आदि अन्त जो पूछहु, सो सब देउ देखाय।	घट परचे परतीत करि, अमर लोक को जाय॥	चौपाई	अन परचै से सब कछु कहेऊ। अब मोपे कछु कहि नहिं अयऊ।२१९५।
तुम तौ तेज अधिक कछु कीन्हा। उदित ब्रह्म तुम जगसे भिन्न।२१९६।	पारख कीन्ह सतगुरु तुम सांचा। तुम्हारी तेज मोहि लागत आंचा।२१९७।	दाया करहु कछु पूछों ज्ञाना। सत्य शब्द जो अहे अमाना।२१९८।	पांचो मुन्द्रा कहो विचारी। ईगला पिंगला कहो सुधारी।२१९९।	कहो सुखमना कहवा रहई। यह गुन जानि प्रगट यह कहई।२२००।	कहिये अक्षर निअक्षर डोरी। कबन कमल में अमृत बोरी।२२०१।	कहिये अजपा दरसन सारा। किमि करि दृष्टि होय उजियारा।२२०२।
दसवें द्वार कहो निरुआरी। खोजत ज्ञानी सब केहु हारी।२२०३।	मैं बूझा तुम सब विधि ज्ञाता। अचरज तुमके किमि यह बाता।२२०४।	पूछे बिना भरम नहीं जाई। संसै दिल की जात मेटाई।२२०५।	साखी - २१६	कहे भीखल कर जोरिक, साहब सुनुचित लाय।	अहे परस्पर प्रेम यह, तब मिलेतुम आय॥	चौपाई
खिचरी भोचरी अंगोचरी अहई। चचरी मुन्द्रा उन मुनि कहई।२२०६।	ईगला चन्द्र बाहनी अहई। पिंगला भान प्रकासित कहई।२२०७।	ताके बीच सुखमना कहई। उलटि चले गिरवर तहां रहई।२२०८।	ताके मध्य कमल कर बोसा। अजपा दरसन देखो तमासा।२२०९।			

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अक्षर कया निअक्षर झलके। तामें चाँद सुर्ज निज पलके।२२१०।	सतनाम	अमिय पत्र प्रेम जहँ पीवै। दसवें द्वार मार चलि जीवै।२२११।	सतनाम	मिला भेद जो सब कछु अहई। एहि में खोड़स किछु नहिं कहई।२२१२।	सतनाम
सतनाम	जो पूछा सो कहा बिचारी। धन साहब गुन सब निरुवारी।२२१३।	सतनाम	अर्ज एक करो कर जोरी। साहब विनय सुनो यह मोरी।२२१४।	सतनाम	पुत्री पुत्र जो मम गृहि भयऊ। एहि में जियत न एको रहेऊ।२२१५।	सतनाम
सतनाम	दुध पियत तन त्यागे आई। ऐसन विष छीर उन्ठि पाई।२२१६।	सतनाम	साखी - २१७	सतनाम	बहुत जोग जुक्ति करि, थकित भए सब लोग।	सतनाम
सतनाम	बालक एको न जीवहीं, यह मम तन में सोग॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	एक बालक जौ हम के दीजै। भाव भक्ति यह सब मिलि कीजै।२२१७।	सतनाम
सतनाम	यह विस्वास लेहु तुम मानी। बालक एक दिहों तोहि जानी।२२१८।	सतनाम	तुम कुल आगर औ गुनवंता। भक्ति भावच होइहैं निज संता।२२१९।	सतनाम	यह मम बचन जो कहेउ बिचारी। दीन्ह पुत्र करु भक्ति संभारी।२२२०।	सतनाम
सतनाम	लीन्ह प्रवाना प्रीति बिचारी। दीन्ह पुत्र करु भक्ति संभारी।२२२१।	सतनाम	लीन्ह प्रवाना प्रीति जो जानी। भक्ति भाव निश्चै दिल ठानी।२२२२।	सतनाम	पांचो भाई एक मत भयऊ। भक्ति भाव यह सब मिलि कियऊ।२२२३।	सतनाम
सतनाम	पांच से सात जना भयऊ। संग पिति आउत इमि करि रहेऊ।२२२४।	सतनाम	सातों जना मिलि भक्ति सुधारी। सत गुरु ज्ञान निखेद निहारी।२२२५।	सतनाम	बारह मास पर बालक भयऊ। आनंद मंगल सब मिलि गयऊ।२२२६।	सतनाम
सतनाम	चीनिन्हि ज्ञान औ हमके चीन्हा। दिन दिन प्रेम भक्ति लव लीन्हा।२२२७।	सतनाम	भक्ति करे दाफा जन सोई। सतगुरु शब्द बिलावे ओई।२२२८।	सतनाम	साखी - २१८	सतनाम
सतनाम	जो सतगुरु के चीन्हि के, ज्ञानहिं करे विचार।	सतनाम	सोइ दाफा सोइ बंस है, गुन गहि होखे पार॥२१३॥	सतनाम	छन्द तोमर - ५२	सतनाम
सतनाम	गुन हंस बिलग विचारि, नहिं जाहिं भव जल हारि॥	सतनाम	सोई इंस बंस हमार, सब तमेजि भर्म विकार॥	सतनाम	अलि मस्त प्याला प्रेम, सब तेजि दूरमति नेम॥	सतनाम
सतनाम	निरालेप अतित अमान, सुबुद्धि सुंदर ज्ञान॥	सतनाम	अति विमल बैन बिरोग, नहिं दुरमति सागर सोग॥	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
गहे	चरन	कमल	पुनीत,	सब	तेजि	अनल अनीत।२२२६।
इमि	सीतल	परिमल	प्रीत,	सब	भरम	भव जल जीत।२२३०।
जै से	वारि'	वारिज	संग,	मन	मगन	मधु कर रंग।२२३१।
ज्यों	पुहुप	वृग	से धानि,	सब	गंध	गुन पहिचानि।२२३२।
इमि	थाके	मधु	कर वास,	सब	तेजि	दुरमति दास।२२३३।
भयो	मुक्ति	महिमा	जोग,	नहिं	काल	कुबुधा रोग।२२३४।
जग	उदित	आगर	अमान,	निसु	बासर	ताको ध्यान।२२३५।
सत	सुकृत	ताको	संग,	तहां	उठत	बिमल तरंग।२२३६।
तहां	देखि	दर्शन	मूल,	सब	मेटि	दुबिधा मूल।२२३७।
जब	गवन	भव	छप लोक,	सब	छूटि	जम का सोक।२२३८।
छन्द नराच - ५२						
छूटि जम देशा भव उपदेशा, सर्व सुख गुन इमि लहिअं॥						
सुकृत साया भए सनाथा, हाथ परा यह मनि गहिअं॥						
भवो गुन गामी सब सुख धामी, धर्म ^६ राय नहिं मगु छेकिअं॥						
सत विचारा भवजल पारा, परसि २ पद इमि लहिअं॥						
सोरठा - ५२						
भौ सपुरन ज्ञान, सतगुरु' पद पावन करो॥						
उबरे सन्त सुजान, जिन्हि गमि कियोबिवेक यह॥						
साखी - २१६						
हीरामनि निज दास है, सब दासन को दास।						
सतगुरु से परिचै भई, बृग-सा प्रेम प्रकाश॥२१४॥						
ज्ञान दीपक लिखा दलदास जी का था संवत १७२७ साल						
ग्रन्थ ज्ञान दीपक पूर्ण						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम